राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान संपादक – पुरातत्त्वाचार्य, जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर जयपुर]

*

ग्रन्थांक १३

[राजस्थानी-हिन्दी साहित्य श्रेणी]

क्यामखां रासा

*

— प्रकाशक —

राजस्थान राज्यसंस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर

जयपुर (राजस्थान)

४) रु० ७५ न० पै०

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

'राजस्थानी-हिन्दी साहित्य-श्रेणो' के अन्तर्गत प्राचीन राजस्थानी-गुजराती-हिन्दी भाषाके जो ग्रन्थ प्रेसोमें छप रहे हैं उनकी नामावलि ।

पद्यात्मक रचनाएं—

१. कान्हड दे प्रबन्ध-कर्ता जालोर निवासी कवि पद्मनाभ ।
२. गोराबादल-पदमिणी चउपई-कर्ता कवि हेमरतन ।
३. वसन्तविलास—फागु काव्य ।
४. कूर्मवंशयशप्रकाश अपर नाम लावारासा-कर्ता चारण कवि गोपालदान
५. क्यामखां रासा — कर्ता मुस्लिम कवि जान ।

गद्यात्मक रचनाएं —

६. बांकी दासरी ख्यात ।
७. मुंहता नैणसीरी ख्यात ।
८. राठोड वंसरी उत्पत्ति ।
९. खींची गंगेव नींबावतरो दोपहरो, राजान राउतरो वात वणाव आदि ।
१०. दाढाला एकलगिडरी वात ।

छपनेके लिये तैयार होनेवाले कुछ ग्रन्थ

राजस्थानी सुभाषित रत्नाकर ।
पुरातन राजस्थानी गद्य संचय ।
जहांगिर यशश्चन्द्रिका - कवि केशवदास कृत ।
रणमल्लछन्द - कवि श्रीधरव्यास कृत ।
जलाल गहाणीरी वात ।
कुतवदी सांहजादेरी वात ।
हितोपदेश गवालेरी भाषा
वेताल पाचीसीरी वात । इत्यादि-इत्यादि ।

मुस्लिम कवि जान रचित

क्याम खां रासा

विस्तृत भूमिका एवं टिप्पणी आदि से समलंकृत

सपादन कर्ता

डॉ दशरथ शर्मा एम ए पीएच् डी,
अगरचद नाहटा, भवरलाल नाहटा

प्रकाशन कर्ता
राजस्थान राज्याज्ञानुसार
सचालक, राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर
जयपुर, (राजस्थान)

[प्रथमावृत्ति, प्रति स० ७५०]

विक्रमाब्द २०१०] मूल्य ४) रु० ७५ न० पै० [खिस्ताब्द १९५३

मुद्रक—पी एच् रामन, एसोसिएटड ए एड प्रि लि, ५०५, आयर रोड, बम्बई ७

४) रु० ७५ न० पै०

क्याम खा रासा - अनुक्रमणिका

**
*

किंचित् प्रास्ताविक

'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' में प्रकाशित करनेके लिये बीकानेरके ज्ञानभंडारोंमेंसे कुछ ग्रंथ प्राप्त करनेकी दृष्टिसे सन् १९५२ में बीकानेर जाना हुआ उस समय, प्रसिद्ध राजस्थानी साहित्यसेवी श्रीयुत अगरचंदजी नाहटाके पास प्रस्तुत 'क्यामखां रासा' की प्रतिलिपि देखनेमें आई। ग्रंथकी उपयोगिता एवं विशेषताका खयाल करके हमने इसे, इस ग्रंथमालामें प्रकट करनेका निश्चय किया और तदनुसार मुद्रित होकर अब यह विद्वानोंके हस्त संपुट में उपस्थित हो रहा है।

ग्रंथ और ग्रंथकारके विषय में यथालभ्य सब बातें संपादकत्रयीने विस्तृत भूमिका और ऐतिहासिक टिप्पण आदि द्वारा उपलब्ध कर दी है जिससे पाठकोंको ग्रंथका हार्द समझने में यथेष्ट सहायता मिल सकेगी।

मूल ग्रंथकी केवल प्रतिलिपि ही हमें मिली थी जो श्री नाहटाजीने कुछ समय पहले उन्हें प्राप्त हस्तलिखित प्राचीन प्रतिके उपरसे करवा रखी थी। प्राचीन ग्रंथोंके संपादनकी हमारी शैली यह रहती है कि किसी कृतिका संपादन कार्य जब हाथमें लिया जाता है तब उसकी यथाशक्य दो चार प्रतियां प्राप्त करनेका प्रयत्न किया जाता है। यदि कहींसे उसकी ऐसी प्रतियां मिल जाती है तो उनका परस्पर मिलान करके भाषाकी छंदकी अर्थकी और वस्तुसंगति आदिकी दृष्टिसे, विशिष्ट रूपसे पर्यवेक्षण करके मूल पाठकी वाचना तैयार की जाती है और भिन्न भिन्न प्रतियोंमें जो शाब्दिक पाठभेद प्राप्त होते हैं उन्हें मूलके नीचे पादटिप्पणीके रूपमें दिया जाता है। प्राचीन ग्रंथोंके संपादनकी यह पद्धति विद्वन्मान्य और सर्वविश्रुत है। परंतु जब किसी ग्रंथकी कोई अन्य प्रत्यंतर यथाशक्य प्रयत्न करने पर भी कहींसे नहीं प्राप्त होता है तब फिर वह कृति केवल उसी प्राप्त प्रतिके आधार पर यथामति संशोधित-संपादित कर प्रकट की जाती है। प्रस्तुत 'क्यामखां रासा' भी इसी तरह, केवल जो प्रतिलिपि हमें प्राप्त हुई उसीके आधार पर, संशोधित कर प्रकाशित किया जा रहा है। जिस मूल प्रतिपरसे श्री नाहटाजीने अपनी प्रतिलिपि करवाई थी वह मूल प्रति भी हमारे देखनेमें नहीं आई। इससे हमको यह ठीक विश्वास नहीं है कि जो वाचना प्रस्तुत मुद्रण में दी गई है वह कहां तक ठीक है।

प्रेसमेंसे आनेवाले प्रूफोंका संशोधन करते समय हमें इस रचनामें भाषा और शब्द संयोजनाकी दृष्टिसे अनेक स्थान चिन्तित मालूम दिये हैं जिनका निराकरण मूल प्रति और एकाध प्रत्यन्तरके देखे बिना नहीं किया जा सकता। लेकिन उसके लिये कोई अन्य उपाय न होनेसे इसको यथाप्राप्त प्रतिलिपिके अनुसार ही मुद्रित करना हमें आवश्यक हुआ है। राजस्थानके साहित्यसेवी विद्वानोंसे हमारा अनुरोध है कि वे इस रचनाके कुछ प्रत्यन्तर – जो अवश्य कहीं-न-कहीं होने चाहिये – खोज निकालें, जिससे भविष्यमें इसकी एक अच्छी विशुद्ध वाचना तैयार करने-करानेका प्रयत्न कोई उत्साही मनीषी कर सकें।

कवि जान राजस्थानका एक बडा और प्रसिद्ध कवि हो गया। यद्यपि जाति और धर्मसे वह मुसलमान था लेकिन उसकी रचनाओंके पढनेसे मालूम होता है कि वह भाव और भक्तिकी दृष्टिसे प्राय. हिन्दु था। उसका शरीर मुस्लिम था परन्तु आत्मा हिन्दु था। यदि उसने अपनी रचनाओमे अपने व्यक्तित्वके परिचायक कोई उल्लेख न किये होते तो पाठकोको इन रचनाओका कर्त्ता कोई हिन्दु-इतर है ऐसी कल्पनाका होना भी असभवसा लगता।

कविकी विविध प्रकारकी और विस्तृत सख्यावाली रचनाओके विषयमे सपादक मित्रोने यथेष्ट प्रकाश डाला है। इससे ज्ञात होता है कि कवि अपने समयमें राजस्थानका एक प्रमुख साहित्यकार रहा है। शायद इतनी विविध रचनाएं, उस समयके अन्य किसी हिंदु या जैन विद्वान्‌ने नही की है। कविका अनेक विषयो पर अच्छा अधिकार मालूम देता है। भाषा और भावो पर तो उसका बडा ही प्रभुत्व प्रतीत हो रहा है। लोक भाषाके ग्रन्थोकी प्रतिलिपि करनेवाले लेखकोंकी लिखन-पद्धति प्राय शिथिल और अनियमित होती थी, इस लिये ऐसी रचनाओमे लेखनभ्रष्टताके कारण भाषाभ्रष्टताका प्राचूर्य उपलब्ध होना स्वाभाविक है और इसी कारणसे किसी भाषा कविकी कृतिका पूर्णतया विशुद्ध रूपमे प्राप्त होना असंभवसा रहता है। परतु यदि ऐसी प्राचीन रचनाओके दो चार भिन्न स्वरूपके अच्छे प्रत्यन्तर मिल जाते है तो उनके आधार पर विशेषज्ञ विद्वान् किसी भी रचनाकी विशुद्ध वाचना ठीक तरहसे उपस्थित कर सकता है। जैसा कि हमने ऊपर सूचित किया है प्रस्तुत 'क्यामखा रासा' उक्त एक ही प्रतिलिपिके आधार पर मुद्रित किया गया है ओर इससे इसमे भाषा, छन्द, वर्णसयोजन आदिकी दृष्टिसे वहुतसे स्थान शिथिलता ओर अशुद्धताके उदा-हरण स्वरूप दृष्टिगोचर होते है परतु हमारा विश्वास है कि यदि दो-एक अन्य प्रत्यन्तरोंके आधार पर, इसकी विशुद्ध वाचना तैयार की जाय तो, जान कविकी यह कृति एक उत्तम कोटिकी साहित्यिक रचना सिद्ध होगी। उस समयके हिन्दु या जैन कविकी कोई रचना, शायद ही कवि जानकी रचनाकी तुलनामे स्पर्द्धा करने योग्य सिद्ध हो।

कविका स्वभाव वहुत उदार है। वह राजपूत जातिकी वीरताका बडा प्रशंसक है। अपने चरित्रनायकके विपक्षियोकी वीरताका भी वह अच्छा सहानुभूतिपूर्वक वर्णन करता है। क्याम-खानी वशवाले, वास्तवमे चौहान वशीय राजपूत थे और इसलिये कवि चौहान कुलका गौरव-गान करनेमें अपना गर्व समझता है। वह चौहान कुलको राजपूत जातिमें सबसे बडा गौरवशाली कुल मानता है। उसके विचारमे

जिसी जात रजपूत की, सगरे हिंदसतान।
सबमें निहचै जानियो, बडौ गोत चहुवांन॥

... ...

चाहवांन यातें कह्यो चहूं कूटमें आन।
सगरे जंबू दीपमें सम को गोत न आन॥

... ...

"फूलनि मधि गुलाल, चुनियनि जैसी लाल।
राइनमें तैसो गोत चक्कवै चौहान को ॥"

इसलिये अपने चरितनायक अलिफखानका, इस चौहान गोतमें उत्पन्न होना कविके मनमें बडे गौरवकी बात है और वह प्रारंभहीमें उसे गर्वके साथ इसका उल्लेख करता हुआ कहता है कि

"अलिफखानु दीवानकौ बहुत बडौ है गोत।
चाहुवानकी जोरको और न जगमें होत ॥"

चौहानकुलकी उत्पत्तिकी जो कथा इस कविने दी है वह शायद अन्य किसी ग्रन्थमें नहीं है और इस दृष्टिसे यह एक नूतन अन्वेषणीय वस्तु है। कवि पृथ्वीराज चौहान (प्रथम के ?) द्वारा काबुलसे दूब मंगा कर, दिल्लीके मैदानोंको हराभरा कर देनेका जो उल्लेख करता है (पृ ६, पद्य ६५) वह भी एक, ऐतिहासिकोंके लिये गवेषणीय विचार है।

कविकी वर्णनशैली स्वाभाविक और सरल है। न इसमें कोई शब्दाडम्बर है न अत्युक्तिका अतिरेक है। उक्तिपद्धति अच्छी ओजसभरी हुई और रचना प्रवाहबद्ध एवं रसप्रद है।

भाषाविद्या (फाइलोलॉजी) की दृष्टिसे यह ग्रन्थ और भी अधिक महत्त्वका है। इसमें डींगलकी वह कृत्रिम शब्दावलि बहुत ही कम दिखाई देती है जो बादकी शताब्दीमें बनी हुई चारणोंकी रचनाओंमें भरपूर दृष्टिगोचर होती है। इसकी शब्दावलि पर शौरसेनी अपभ्रंशकी बहुत कुछ छाया दिखाई देती है और साथमें प्राचीन राजस्थानीका पुट भी अच्छे प्रमाणमें उपलब्ध होता है। हमारा अभिमत है कि किसी उत्साही और परिश्रमी विद्वानको या विद्यार्थीको चाहिये कि किसी युनिवर्सिटीकी पीएच डी की डीग्रीके लिये इस कविकी रचनाओंका भाषाविज्ञानकी दृष्टिसे गंभीर अध्ययन कर तुलनात्मक निबन्ध उपस्थित करनेका प्रयत्न करे।

इस भाषाविद्याके विचारका उल्लेख करते समय प्रस्तुत प्रकरणमें जो एक कथन हमें प्राप्त हुआ है वह विद्वानोंके लिये और भी विशद विचारणीय है।

बीकानेरकी अनूपसंस्कृत लाइब्रेरीके, एक हस्तलिखित प्राचीन गुटकेमें रूपावली नामक आख्यान लिखा हुआ है जिसका थोडा-सा परिचय संपादकने अपनी भूमिकाके पृ ११ पर दिया है। यह रूपावली आख्यान प्रस्तुत कवि जानहीकी कृति है या अन्य किसीकी यह इस परिचयसे ज्ञात नहीं हो सकता। इस आख्यानकी पहली चौपाईमें कहा गया है कि फतहपुर नगर जहाँ बसा है उस देश या भूमिका नाम बागर* है और वहाके आसपास जो भाषा बोली जाती है वह भली प्रकार की सोरठ-भाष है जिसमें सुंदर रूपसे भाव प्रकट किये जाते हैं। हमारे लिये

* ग्रन्थकारने वर्तमानमें शेखावाटी कहलानेवाले प्रदेशका नाम-जिसमें फतहपुर और झूंझनु आदि नगर बसे हुए हैं—बागड लिखा है—यह भी भौगोलिक दृष्टिसे अन्वेषणीय है। राजस्थानका वह प्रदेश, जिसमें डूंगरपुर बांसवाडा प्रतापगढ आदि नगर बसे हुए हैं प्राचीन कालसे बागड नामसे प्रसिद्ध है। इसी तरह राजस्थानकी दक्षिणी सीमा पर आया हुआ कच्छ और उत्तर गुजरातके बीचमें जो छोटा रण कहलाता है उसके आसपासके प्रदेशका नाम भी बागड है और जो प्रायः कच्छ-बागडके नामसे प्रसिद्ध है। कवि जानके समकालीन साहित्यमें फतहपुर आदिका होना भी बागर या बागड प्रदेशमें बताया गया है। यों राजस्थानके सीमा प्रान्तों पर तीन बागडी प्रदेशोंका उल्लेख मिल रहा है। इस बागड शब्दका वास्तविक अर्थ क्या है यह भी एक विचारणीय वस्तु है। जैन ग्रन्थोंमें बागड विषयक बहुतसे उल्लेख प्राप्त होते हैं।

भाषाका यह **सोरठ-मारू** नाम विल्कुल नया और विचारणीय है। मारू का अर्थ तो स्पष्ट ही है कि जिसका सम्वन्ध मरूभूमिसे हो वह **मारू** है, पर इसके साथ सोरठ शव्दका क्या सवन्ध है? हमारा खयाल है कि कविको सोरठ शव्दसे वह भाषाप्रदेश अभिप्रेत है जिसे वर्तमानमे गुजराती भाषा-भाषी प्रान्त कहा जाता है। जिस प्रकार भौगोलिक दृष्टिसे सोरठका प्रदेश प्राचीन कालसे सर्वत्र विश्रुत रहा है इसी तरह वहाकी जनभाषा भी, जो कि वर्तमानमे तो वह गुजरातीके नामसे ही सर्वत्र प्रसिद्ध हो रही है, उस समय, सोरठके नामसे प्रसिद्धिमे रही हो और फतहपुरके प्रदेशके लोगोकी जो वोली रही हो उसमे **मारू** और **सोरठ** की वोलीका विशिष्ट समिश्रण रहा हुआ होनेसे कविने उसे इस नामसे उल्लिखित किया हो।

आधुनिक राजस्थानी और गुजराती दोनो भाषाये मूलमे एक थी। मुगलोके शासन कालके मध्य समयसे धीरे-धीरे इनमे कुछ पार्थक्य होने लगा। भाषावैज्ञानिकोने प्राचीन राजस्थानी एव गुजरातीको एकरूप मान कर उसके लिये **प्राचीन पश्चिमीय राजस्थानी** ऐसा शास्त्रीय नाम निश्चित किया है। लेकिन इस नामनिर्देशमे वहुतसे विद्वानोको सन्तोष नही है। अत वे कोई ऐसा नामनिर्देश करना-कराना चाहते है जिससे राजस्थान और गुजरातकी भौगोलिक, सास्कृतिक, सामाजिक एव आर्थिक सयुक्तता और सहकारिताका स्पष्ट वोध हो सके। गुजरातके एक विशिष्ट कवि, लेखक, विचारक और विवेचक विद्वान् श्रीयुत उमाशकर जोशीने इसके लिये **मारू-गूर्जर** शव्दका प्रयोग करना पसद किया है। उक्त रूपमती आख्यानके कर्ता द्वारा किया गया **सोरठ मारू** शव्दका प्रयोग देख कर हमे इस विषयमे विशेष प्रेरणा मिली है और हमारी कल्पनामे कवि उमाशकरजी द्वारा सूचित राजेस्थान और गुजरात की सास्कृतिक एकताका सारसूचक **मारू-गूर्जर** शव्द प्रयोग ठीक उपयुक्त लगता है। राजस्थान और गुजरातके विशिष्ट भाषाविद् विद्वान् इस पर अवश्य विचार करे। इस विषयमे हम अपने कुछ विशेष विचार किसी अन्य अवसर पर प्रकट करना चाहते है।

हमारी कामना है कि कवि जानकी अन्य रचनाए भी इसी तरह सुसपादित हो कर प्रकाशमे आनी चाहिये।

सर्वोदय साधना आश्रम,
चदेरीया
ता. १०-३-५३

–जिनविजय मुनि

क्यामखा रासाके कर्त्ता कविवर जान और उनके ग्रन्थ

हिन्दी साहित्यमें जान कविके क्यामखा रासो आदि ग्रन्थोंका सबसे पहला उल्लेख राजस्थान विद्वद्रत्न परम साहित्यनुरागी व संत साहित्यके अद्वितीय संग्राहक स्वर्गीय पुरोहित हरिनारायणजीने, १५ वर्ष हुए अपनी "सुन्दर ग्रन्थावली" में किया था। संतकवि सुन्दरदास सं० १६८२ में फतहपुर पधारे, और अधिकतर यहीं रहने लगे। अतः फतहपुरके विद्यानुरागी नवाबोंका आपके सम्पर्कमें आना स्वाभाविक था। इसी प्रसंगसे पुरोहितजीने अलफखां व उनके रचित चार ग्रंथ, फतहपुरके नवाबोंके नाम एवं क्यामरासोका उल्लेख किया था। यथा—

"सुन्दरदासजी फतहपुरमें नवाब अलफखांके समयमें आगये थे। सम्भव है यहां उस वीर और कवि नवाबसे इनका मिलना हुआ हो, क्योंकि नवाब सम्वत् विक्रमी १६६३ (सन् हिजरी १०५३ रमजान की २८ ता० को) तलवाड़ेके युद्धमें बड़ी वीरतासे वीरगतिको प्राप्त हुआ था। यह महामहिम नवाब अलफखां प्रायः शाही खिदमतमें रहा करता था। यह बड़ी बड़ी मुहिमों और युद्धोंमें भेजा जाता था और प्रायः सदा विजयी रहा करता था। परन्तु ग्रन्थकार हमसे भी कहते हैं कि यह एक अच्छा कवि भी था, और हिन्दी काव्यमें कई ग्रन्थ भी बनाये हैं[1] जो प्रायः शेखावटीके अन्दर प्रसिद्ध हैं।"

आपने टिप्पणामें लिखा है कि अलफखां-काव्योपनाम जान कविने बनाये हुए चार ग्रन्थ १ रतनावली, २ सतवन्तीसत, ३ मदनविनोद, ४ कविवल्लभ हैं, जो हमारे संग्रहमें हैं। (पृष्ठ ३६ ३७) पृष्ठ चालीसकी टिप्पणीमें उपर्युक्त टिप्पणीकी बातको पुनः दुहराते हुए क्यामरासाके रचयिताका नाम [2]नेहमतखां बतलाया था। यथा—

"अलफखां फतहपुरके नवाबोंमें नामी वीर और कवि हुआ। यही जान कवि था, जिसने कई ग्रन्थ रचे थे। उनमेंसे चार ग्रन्थ हमारे संग्रहमें भी विद्यमान हैं। इसके छोटे बेटे "नेहमतखां" ने कायमरासा बनाया। इसहीके अनुसार नजमुद्दीन पीरजाद झुंझणूं फतहपुरने "नसतुल मुसलमान" फारसीमें तवारीख लिखी, जिसकी नकल झुंझणूंमें हमने करवायी थी परन्तु यह मांगकर कोई ले गया था सो अबतक लौटाई नहीं। इसीके आधारपर "तारीख खानेजहानी" हैदराबाद दक्षिणमें बनी है। नवाब न० १२ कामयाबखांके समयमें शेखावत वीर शिवसिंहजीने सं० वि० १७८८ में फतहपुरको तलवारके जोरसे छीन लिया। तबसे शेखावतोंके अधिकारमें है। ("वारियान कौम कायम खानी" "फतहपुर तवारीख" तथा "शिखर वंशोत्पत्ति पीढ़ी वार्तिक" एवं सीकरका इतिहास।)

पुरोहितजीके पश्चात् धूमकेतुके सम्पादक पं० शिवशंकर द्विवेदीने धूमकेतुके तीसरे अंक (अगस्त सन् १९३८) में तीन ग्रन्थोंका परिचय प्रकाशित करते हुए जानका नाम अलफखां

---

१ फतहपुर परिचयके पृष्ठ १३६ में भी इसी भ्रान्त परम्परा को अपनाया गया है।

२ फतहपुर परिचय ग्रन्थमें नियामतखां लिखा है।

लिखनेके साथ-साथ उसे मुगल सम्राट् शाहजहाँका साला बतलाया। इसका आधार अज्ञात है।

इसके पश्चात पं. झावरमलजी शर्माने सन् १९४० में हमारे द्वारा सम्पादित "राजस्थानी" त्रैमासिक (वर्ष ३ अङ्क ४)में "कायमखानी नवाब अलफखाँ और उसकी हिन्दी कविता" नामक लेख छपवाया जिसमें कायमखानी वंशकी पूर्व-परम्पराके साथ सतवंतीसत, मदनविनोद एवं कविवल्लभका रचयिता अलफखाँको बतलाया। इस लेखमें पण्डितजीने पुरोहित हरिनारायणजीके अलफखाँकी मृत्यु[1] सं. १६९३ (तलवाडे युद्ध) में होनेके कथनपर सन्देह प्रकट किया क्योंकि कविवल्लभका रचनाकाल स्वयं ग्रन्थमें ही सं १७०४ दिया गया है। पुरोहितजीके कथनानुसार इन्होंने कायमरासाके रचयिता अलफखाँके छोटे बेटे नेटमतखाँको ही बतलाया है एवं हिन्दी साहित्यमें प्रसिद्ध ताजको कायमखानी नवाब फदनखाँकी पुत्री एवं अलफखाँ के पिता ताजखाँ (द्वितीय) की बहिन होना बतलाया है। जब मैंने इस लेखको पढा, मनमें विचार हुआ कि सभी व्यक्ति जान कविको अलफखाँ बतला[2] रहे हैं। पर ग्रन्थकारने कहीं भी इसका सूचन नहीं किया। अतः वास्तविकताकी शोध करनी चाहिए।

इसी समय बीकानेर राज्यकी अनूप संस्कृत लाइब्रेरीका पुनरुद्धार-कार्य आरंभ हुआ और उसमें जान कविके कई ग्रन्थोंकी हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त हुईं। फलतः व्रजभारतीमें प्रकाशित (सं १९४२ में) अपने लेखमें मैंने जान कविके ९-१० ग्रन्थोंका उल्लेख किया था। अनूप संस्कृत लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन श्री रावत सरस्वत बी. ए. से जान कविके सम्बन्धमें बातचीत होने पर इन्होंने शेखावाटीके किसी स्थानमें जान कवि के ७० ग्रन्थोंकी संग्रह प्रतिकी जानकारी दी। उनकी दी हुई ७० ग्रन्थोंकी सूची देते हुए मैंने एक लेख भी तैयार करके रखा, और उपर्युक्त संग्रह प्रतिके खरीदनेकी बात चल रही थी। इसी बीच वह प्रति मेरी[3] सहायतासे जुलाई सन् १९४४में हिन्दुस्तानी अेकडेमीने खरीद ली। सन् १९४५ मे रावत सारस्वतने सरस्वती (जनवरी) एवं विश्ववाणी (मई) में जान कविके ग्रन्थोंके परिचायक दो लेख प्रकाशित किये, पर जान कविका वास्तविक नाम व परिचय वे भी प्राप्त नहीं कर सके उन्होंने नाम मुहम्मद जान होनेकी संभावना प्रगट की। अेकडेमीकी प्रतिके आधारसे श्रीकमल कुलश्रेष्ठने हिन्दुस्तानीके जनवरी-मार्च सन् १९४५ के अंकमें उक्त प्रतिके ६८ ग्रन्थोंका ज्ञातव्य परिचय प्रकाशित किया।

जान कविके ग्रन्थोंमें बुद्धिसागर नामक ग्रन्थ भी था। उसकी एक प्रति दिल्लीके कूचे दिगम्बर जैन मन्दिरमें ज्ञात हुई। वहाँके सरस्वती भण्डारकी सूची अनेकान्त व० ४ अं० ७ ८ में प्रकाशित हुई। उसमें बुद्धिसागरके ग्रन्थ रचियताका नाम "न्यामतखाँ" बतलाया था। अतः दिल्ली जानेपर मैंने इस प्रतिको देखनेका प्रयत्न किया पर सफलता नहीं मिली। इसी बीच जैनाचार्य श्रीजिन

---

१. वास्तवमें यह सम्वत् भी सही नहीं है। यहाँ सम्वत् १६८३ चाहिए।

२. श्रीयुत मोतीलाल मेनारिया और कमलकुलश्रेष्ठने भी इसीका अनुकरण किया है, क्योंकि कविने क्याम रासेके अतिरिक्त किसी ग्रन्थमे अपना वास्तविक नाम नहीं दिया है।

३. हिन्दुस्तानी, भाग १५ अंक १.

ऋद्धिसूरिजी महाराजके दर्शनार्थ सुरूम मेरा और भवरलालका जाना हुआ, और वहाँसे विदुषी साध्वी श्री विचक्षणश्रीजीके वन्दनार्थ सूझणू भी गये। वहाके जैन उपाश्रयमें स्थित प्रतिजाके सग्रह के गढम हमें जान कविके तीन ग्रन्थों (कायम रासो, अलफखाकी पैडा, बुद्धिसागर) की उपलब्धि हुई, जिनमेंसे कायमरासो एव अलफखाकी पैडी दोनों ऐतहासिक काव्य थे, पर अलफखाके सम्बन्ध में रचे गये थे। उसकी प्रारभिक पक्तियोंको पढ़ते ही यह तो निश्चय हो गया कि जान कवि अलफखा नहीं, पर उसका पुत्र था। फिर सूक्ष्मतास विचार करनेपर उसका नाम उपयु क्त बुद्धिसागर ग्रन्थकी लेखन प्रशस्तिमें उल्लिखित न्यामतखा ही, जो कि अलफखाके पाच पुत्रोंमें द्वितीय थे, सिद्ध हुआ। इसकी सूचना सर्वप्रथम हमने हिन्दुस्तानीके अप्रेल, जून १९४५ के अकमें कायमरासोका परिचय प्रकाशित करते हुए दी। वैसे "कविवर जान और उनके ग्रन्थ" नामक लेख इस सम्बन्धमें पहले लिखा जा चुका था, पर कागजकी दुष्प्राप्यतादिक कारण वह बादमें १९४९ की राजस्थान भारती' में प्रकाशित हुआ। इस लेखमें मैंने जान कविके ६ ग्रन्थ अपने सग्रहमें एव अन्य ग्रन्थोंकी प्रतिया अनूप सस्कृत लाइब्रेरी राजस्थान रिसर्च सोसाइटी, सरस्वती भडार (उदयपुर) एव एशियाटिक सोसाइटीमें प्राप्त होनेका उल्लेख करते हुए राजस्थानस प्राप्त ७० ग्रन्थोंकी सूची दी। उपर्युक्त १७ ग्रन्थोंमेंसे बारह ग्रन्थोंके नाम तो इन ७० ग्रन्थोंमें मिल जाते हैं, पर ५ ग्रन्थ उनसे अतिरिक्त मिले। अत जान कविकी कुल ७५ रचनाओंका परिचय इस लेखमें मैंने दिया था। पीछेसे हमारे सग्रहके बुद्धिसागर ग्रन्थके सम्बन्धमें अनुसन्धान करनेपर वह ७० ग्रन्थोंकी सूचीमें उल्लिखित बुद्धिसागरसे भिन्न ही सिद्ध हुआ, अत रचनाओंकी सख्या ७६ हो जाती है।

इन ग्रन्थोंके रचना कालपर विचार करनेसे कविकी सवतोल्लेख वाली सर्व प्रथम रचना शतकत्रय प्रतीत होती है, जिसकी रचना १६७१ में हुई है, और अन्तिम सवतोल्लेख वाली रचना जाफरनामा पदनामा है जो स० १७२१ में रचित है। अत कवि ५० वर्षतक निरन्तर साहित्यकी सेवा की और इस तरह ७० वर्षकी आयु अवश्य पाई सिद्ध होता है। उपलब्ध ग्रन्थों में सबसे बड़ा ग्रन्थ बुद्धिसागर है जो कि ३५०० श्लोक परिमाण का है। उसके बाद परिमाणमें कविवल्लभ एव कायमरासोका स्थान आता है। कविकी भाषा और शैली सुन्दर है। वह आशु कवि था। उसने कई ग्रन्थोंके १, ३, ८ प्रहरमें व १ २ ३ दिनोंमें रचे जानेका उल्लेख स्वय किया है। रस तरगिणी, बुद्धिसागर आदि ग्रन्थोंमें स्पष्ट है कि कवि सस्कृत एव फारसीका भी अच्छा ज्ञाता था। प्रथम ग्रन्थका आधार सस्कृत ग्रन्थ है, दूसरेका फारसी ग्रन्थ। कविका अध्ययन भी बहुत विशाल था। हिन्दी भाषापर तो इसका विशेष अधिकार था ही। अलकार रस, काव्य शास्त्र, वैद्यक एव इतिहास सम्बन्धी ग्रन्थोंकी रचना करनेके अतिरिक्त आख्यानक प्रेम काव्य लिखना उसका प्रिय विषय रहा प्रतीत होता है।

[टिप्पणी—सूफी काव्य सग्रहमें आयुत परशुरामजी चतुर्वेदीभी लिखते हैं कि इस कविकी विशेषता इसकी रचनाओंकी पक्तियोंकी प्रवाहशीलतामें दीख जा सकती है। जान पड़ता है कि इसको प्रत्येक पक्ति

तत्क्षण अपने आप बनती चली जाती है, न तो इसे उसके लिए कुछ सोचना पड़ा है और न कोई परिश्रम ही करना पड़ा है। कथानककी रूप रेखा इस कविके केवल संकेत मात्रसे ही भरती चली जाती है और कुछ कालमें एक प्रेमगाथा प्रस्तुत हो जाती है। फिर भी इसकी रचनाएं केवल तुक बन्दियां नहीं कही जा सकती। उनके बीच २ में कुछ ऐसी सरस पंक्तियां आ जाती हैं जो किसी भी प्रौढ एवं सुन्दर काव्यका अङ्ग बन सकती हैं, और उनकी संख्या किसी प्रकार भी कम नहीं कही जासकती।

इस कविने पात्रोंके चरित्र-चित्रण तथा घटना-विधानमें भी कभी-कभी अपना काव्य कौशल दिखलाया है और कोई न कोई नवीनता ला दी है।]

रावत सारस्वत द्वारा प्राप्त सूचीमें 'रस कोष' का रचनाकाल सं० १६६७ लिखा हुआ था, उसी आधारसे राजस्थान भारतीमें प्रकाशित अपने लेखमें, मैंने उसे सर्वप्रथम रचना बतलाई थी। श्रीयुत परशुराम चतुर्वेदीने सूफी काव्य संग्रहके पृष्ठ १३९-४०में उसीका अनुकरण किया है। पर मेरे लेख छपनेके पश्चात् सं० १६८४ जेष्ठ वदीमें कवि भीखजनके फतहपुरमें लिखित प्रति अनूप संस्कृत लाइब्रेरीमें अवलोकनमें आई। जिससे इस ग्रन्थका वास्तविक रचनाकाल १६७६ सिद्ध होता है। यथा –

"जहांगीरके राज्यमें हिरन चित्त को दोष।
सोलहसै षट हुतरै, कियो जान रस कोष॥" १४१। चौ. ५०

प्रस्तुत ग्रन्थ, रसमंजरीकी भाँति नायक नायिकाके वर्णन वाला है।

"अवहि बखानौं नाइका नाइक कहि कवि जान।
मथूं कथूं रसमंजरी सुनो सबे धर कान॥३॥

ग्रन्थका परिमाण ३०० श्लोकोंका है।

कविका गुरु

कविने हाँसीके शेखमोहम्मद चिस्तीको अपना गुरु बताया है।

शेखमुहम्मद मेरो पीर, हाँसी ठाम गुनीन गंभीर।
शेखमुहम्मद पीर हमारो, जाकौ नाम जगत उजियारो।
रहन गाँव जानहु तिहँ हाँसी, देखत कटे चित्तकी फांसी।

कविवल्लभ एवं बुद्धिसागर ग्रन्थमें पीर मुहम्मदके ४ पूर्वज कुतवों १. जमाल २. बुरहान ३. अनवर एव ४. नूरदीके भी नाम दिए हैं। यथा—

"कुतब भये न इनके कुलचार, तिनको जानत सब संसार।
पहले जानहुँ कुतब जमाल, जिहि तन तक्यो सु भयौ निहाल॥३॥
दूजै भयौ कुतुब बुरहान, प्रगट्यो जाकौ नाम जहान।
कुतब अनवर दादौं भयौ, जिनकौं छत्रपति नयौं।
कुतब नूरदी नूरजहांन, प्रगट भयौ जग जैसे भांन।
हाँसीमें इनको बिसराम, जियारत करै सरै मन काँम।

हाँसो ऐसी ठौर है, उत जो रावत जाइ।
इच्छा पूजै सुखित ह्वै, हँसत खेलत घर आइ।
सेखमोहम्मद पीर हमारौ, जाको नाम जगत उजियारौ।
रौजो ऊपर बरसत नूर, करामात जग भइ हजूर।
ज्यारत करत फिरसते आवत, मनुषनुको को बात सुनावत।
नइ नाही कछु होति आइ, इनके कुलमें आदि बडाइ।

७० ग्रन्थोंकी संग्रह प्रति

श्री कमलकुल श्रेष्ठके लेखानुसार इस प्रतिके पृष्ठोंकी लम्बाई चौडाई ६×४ है। प्रारम्भिक कुछ अश प्राप्त नहीं हैं। बीच बीचमें भी एकाध पृष्ठ गायब है। प्रति स० १७७७ ७८ में फतह चन्द ताराचन्द डीडवाणिया द्वारा लिखित है। लिखावट स्पष्ट है। कहीं-कहीं कीडोंके खाने आदि कारणोंसे पढनेमें कठिनाई होती है। पहले यह एक जिल्दमें होगी अब सब पन्ने अलग अलग हैं।

कमल कुलश्रेष्ठकी वर्गीकृत ग्रन्थ सूची

१ छोटे-छोटे चरित्र काव्य
२ मुक्तक शृङ्गारवर्णन काव्य
३ उपदेशात्मक काव्य
४ कोष
५ मिश्रित

इनमें छोटे छोटे चरित्र काव्योंको दो भागोंमें विभक्त किया गया है—प्रेम कहानियाँ व स्वतन्त्र कहानियाँ। प्रेम कहानियाँ दो उपभागोंमें विभाजित की जा सकती हैं।

१ अविवाहिता नायिकासे प्रेम होने और प्राय विवाहमें समाप्त होने वाली कहानियाँ।
२ परकीया प्रेम-मूलक कहानियाँ।

पहले उपवर्गमें निम्न काव्य हैं—

१ रतनावली, रचना सवत १६९१, मि म ७ (हि स १०४४) छन्द दोहा-चौपाइ, विस्तार १७५ दोहे।

(प्राय ७ चौपाइयोंके बाद १ दोहा आता है। इस प्रकार दोहोंकी सख्या दी गई है, उसके साथ चौपाइयोंकी सख्या भी जान लेनी चाहिए)

यह ग्रन्थ ९ दिन में रचित है, प्रारम्भिक ७४ दोहे इस प्रतिमें नहीं हैं।

२ लैला मजनू र स १६९१, छन्द वही, पद्य ६५९ (बीकानेर अनूप स० ला प्रतिके अनुसार)

३ रतनमंजरी, र स १६८६, छन्द वही, २६४ दोहे, प्रारभके पचास (५०) दोहे अनुपलब्ध हैं।

४. नल-दमयंती, र. सं. १७१६, छन्द वही, विस्तार, १४६ दोहे।

५. पुहुप वरिषा. र. सं. १६७८, छन्द वही, पृष्ठ २७ (१७२ चौ.) राजकुमार पुरुषोत्तम व सुकेसीके प्रेम और विवाह से सम्बन्धित है।

६. कलावती, र. सं. १६९६, छन्द वही, दोहे २०४ (१२ दिनमें रचित) (रावत सारस्वतके लेखानुसार चौ. २०७)

७. छवि-सागर, रचना सम्वत् १७०६, छन्द वही, दोहा १६ (राजा जैत एवं राजकुमारी छविसागरकी प्रेमकहानी)

८. कामलता, र. सं. १६७८, छन्द वही, दोहा ३२ (हंसपुरीके राजा तथा कामलताकी प्रेम कथा है) हिन्दुस्तानीमें पूर्ण और कुछ अंश सूफी काव्य संग्रहमे प्रकाशित।

९. कलावती, र. अस्पष्टता, छन्द वही, दोहा २६ (पुरन्दर और कलावती प्रेमकथा) (रावत सारस्वतानुसार दोहा २६, चौपाई २६, छन्द १२, सोरठा २, र. सं. १६७६, दो प्रहर-मे रचित)

१०. छीता, र. सं. १६९२. कातिक सुदी ६, छन्द वही, दोहा २७। कुछ अंश सूफी काव्य संग्रहमें प्रकाशित।

११. रूपमंजरी, र. सं. १६९४ छन्द वही, दोहा १२२, ज्ञान एवं रूपमंजरीकी प्रेमकथा।

१२. मोहिनी, र. सं. १६९४, मि. सु. ४, छन्द वही, पद्य १२२, ३ प्रहर मे रचित।

१३. चन्द्रसेन शीलनिधान, र. सं. १६९१, छन्द चौपाई, दो. १८, ८ प्रहर मे (रावत सारस्वतानुसार ढाई प्रहर मे) रचित।

१४. कामरानी पीतमदास, र. सं. १६९१, छन्द वही, दोहा १२, सवा दो प्रहर मे रचित।

१५. कलन्दर, र. सं. १७०२, छन्द वही, पृ. २.

१६. देवलदेवी खिजखां, र. सं. १६९४, छन्द वही, दोहा ८५, प्रसिद्ध उपाख्यान।

१७ कनकावती, र. सं. १६७५, छन्द वही, दोहा ८१, राजा भरतके पुत्र परमरूप और कनकावतीकी प्रेमकहानी, ३ दिन में रचित।

१८. कौतूहली, र. सं. १६७५, छन्द विविध, पृष्ठ ३३ (चन्द्रसेन एवं कौतूहलीकी प्रेमकथा)

१९. सुभटराई, र. सं. १७२०, छन्द दोहा चौपाई, दोहा ६० (सूरजमलके पुत्र सुभटराई एवं राजकुमारीकी प्रेमकहानी)

२०. मधुकरमालती, र. सं. १६९१, फा. व. १. छन्द वही, पृष्ठ २६, कुछ अंश सूफी-काव्य संग्रहमे प्रकाशित।

२१. बांदी नामा, रचनाकाल अज्ञात, छन्द वही, पृष्ठ ४, (किसी मियांका क्रीतदासीसे अनुचित प्रेम, प्रेमकथाके ढांचेसे भिन्न।

दूसरे उपसर्गकी रचनाएं—

१ निर्मल, र स १७०४ माघ, छन्द वही, दोहा १३, निर्मलकी सतीत्व रक्षाकी कहानी।

२ सतवती, र स १६७८, छन्द वही, दोहा ५२, सतवतीकी रक्षाकी कहानी।

३ तमीमअनसारी, र स १७०२, चौपाई १५०, तमीम अनसारीके पत्नीकी सतीत्व रक्षाकी कहानी।

४ शीलवती, र स १६८४, छन्द वही, दोहा २५, शीलवतीकी सतीत्व रक्षाकी कहानी १ दिनमें रचित।

५ कुलवती, स १६९३ पोष, छन्द वही, दोहा ४७ कुलवतीकी सतीत्व रक्षाकी कहानी।

स्वतन्त्र कहानिया—

१ पलकिया विरही, र स १६८६, चौपाई १२८, एक दिन मे रचित, ईश्वर प्रेममें पागल पलकिया विरहीके एक लोभीके उद्धारकी कहानी।

२ अरदेसरकी कहानी, र स १६९०, दोहा चौपाई, दोहा २३, दो प्रहरमें रचित।

मुक्तक शृंगार वर्णन, १. वर्णनात्मक, २. रीति काव्य वर्णनात्मक—

१ बारहमासा, र स अज्ञात, सवैया १५, वियोग शृंगारका बारहमासा।

२ कथ बरवा, र स अज्ञात, बरवा ७०, संयोग वियोग षट् ऋतु वर्णन।

३ षट् ऋतु बरवा, र स अज्ञात, बरवा २२, षट् ऋतु वर्णन।

४ षट् ऋतु पवगम, र स अज्ञात, पवगम पृ २ षट् ऋतु वर्णन।

(विशेषता—सत पदोंको एकत्रण जो मानिये।
सो बरवा सब है है सदै विचारिये॥)

५ घूंघटनामा, र स अज्ञात, दोहा चौपाई ४, पृष्ठ, यौवन व घूंघटका वर्णन।

६ सिंगार-सत, र स १६७१, दोहा १०१, स्त्रियोंके शृंगारका वर्णन, ३ दिनमें रचित।

७ मानसत, र स १६७१, पृष्ठ ६, शृंगार रस, २ दिनमें रचित।

८ विरहसत, र स १६७१ दोहा, १००, वियोग शृंगार, ५ दिनमें रचित।

९ दरसनामा, र स अज्ञात, चौपाई २१ "घूंघट खोल दरस परसाय"।

१० अलकनामा, र स अज्ञात, चौपाई २३, अलकोंके सौंदर्यका वर्णन।

११ दरसन नामा, र स अज्ञात, चौपाई ३३।

१२ बारहमासा, र स अज्ञात, पृष्ठ २, कुंडलिया छन्द।

१३ प्रेमसागर, र स १६९४, दोहा २१४, प्रेममहिमा।

१४ वियोगसार, र स १७१४, दोहा, सवैया, पृष्ठ १६, विरह वर्णन।

१५ कन्दर्पकलोल, र स अज्ञात, कवित्त सवैया, पृ० ३२, शृंगाररस मुक्तक छन्द। प्रतिमें

अन्त नहीं है।

१६. भावकलोल, र. सं. १७१३, छन्द विविध, पृ. २० मुक्तक छन्द।

१७. विरहीको मनोरथ, र. सं. १६९४, दोहा ४४।

१८. मानविनोद, र. सं. अज्ञात, छन्द विविध, पृष्ठ ४, मान वर्णन।

१९. प्रेमनामा, र. सं. १६७५, दोहा-चौपाई, दोहा २१।

शृंगार रस-रीति ग्रन्थ

१. रसकोष, र. सं. १६७६, दोहा चौपाई, दोहा १४१, नायक-नायिका, दूत-दूती भेद वर्णन।

२. शृंगार तिलक, र. सं. १७१०, चौपाई पृ. ३५, नायक-नायिका वर्णन।

३. रसतरंगिणी, र. सं. १७११ माघ, विविध छन्द २२७, (संस्कृत रसतरंगिणीकी भाषा, सं. १७२४ लिखित प्रति आचार्य शाखाभण्डार बीकानेरमें।)

उपदेशात्मक काव्य

१. चेतननामा, र. सं. अज्ञात, चौपाई ३५।

२. सीख ग्रन्थ, र. सं. अज्ञात, चौपाई २२ (छन्द पारसी मति)।

३. सुधा सिख, र. सं. अज्ञात, छन्द अस्पष्ट, पृष्ठ ४।

४. सतनामा, र. सं. १६६३, दोहा चौपाई, दोहा १९।

५. वर्णनामा, र. सं. अज्ञात, दोहा ३२, अक्षरोंपर दोहे।

६. बुद्धिदायक, र. सं. अज्ञात, छन्द अस्पष्ट, पृष्ठ ४, मोदक छन्द।

७. बुद्धिदीप, र. सं. अज्ञात, छन्द अस्पष्ट, पृष्ठ ४।

८. उत्तम शब्द, र. सं. अज्ञात, दोहा ३५, अली, उसमान एवं बीबी फातिमाका संवाद।

९. सिखसागर, र. सं. १६९५, दोहा २४६।

१०. पदनामा, र. सं. १७३१, दोहा ८० (लुकमान)

११. जफरनामा, र. सं. १७२१, चौपाई १३५।

कोष ग्रन्थ

१. नाम-माला अनेकार्थी, र. सं. अज्ञात, पृष्ठ २४, दोहा।

मिश्रित काव्य

१. बाजनामा, र. सं. अज्ञात, दोहा, पृष्ठ ३, बाजकी चिकित्सा।

२. कबूतरनामा, र. सं. अज्ञात, दोहा, पृष्ठ ४, कबूतरकी चिकित्सा।

३. गूढ़ग्रन्थ, र. सं. अज्ञात, दोहा ९०।

४. देसावली, र. सं. अज्ञात, दोहा-चौपाई, दोहा, ४७, पृथ्वीके विस्तारका वर्णन।

५. वेदक सिखनामा. र. सं. १६९५ दोहा, १०१ वैद्यक ग्रन्थ।

६. पाहन परीक्षा, र. सं. अज्ञात, दोहा, चौपाई, पद्य ४७।१५ रत्न पत्थरोंका वर्णन।

कुल ग्रन्थ २१, ४, २, १९, ३, ११, १, ६,=६८।

श्री रावत सारस्वतसे प्राप्त सूचीके अनुसार १ - सुधासागर और २ - स्वास संग्रह, दो और होने चाहिए, अतः कुल मिलाकर ७० होते हैं।

अन्य ग्रन्थ

१ कवि वल्लभ, र. सं. १७०४, शाहजहाँके समय। काव्य शास्त्रका महत्वपूर्ण ग्रन्थ।

२ मदनविनोद, र. सं. १६९० का. सु. २, कोक, पंचसायक, अनंगरंग, शृङ्गारतिलकके आधारसे रचित।

३ बुद्धिसागर, र. सं. १६९५ मि. सु. १३, पंचतंत्रका अनुवाद, शाहजहाँको भेंट किया। इस ग्रन्थके संबंधमें विशेष जाननेके लिए 'कविजानका सबसे बड़ा ग्रन्थ' शीर्षक लेख देखना चाहिए, जो कि हिन्दुस्तानी, भाग १६, अङ्क ४ में प्रकाशित है।

४ ज्ञानदीप, पद्य ८६०।८ कथाएँ, सं. १६८६ वै. व. १२, १० दिनमें रचित। (जय चन्दजी संग्रह, श्री पूज्यजी संग्रह, बीकानेर) देखें ब्रजभारती, वर्ष १, अङ्क ११।

५ रसमंजरी, र. सं. १७०१ का, पत्र ४१, सरस्वती भण्डार, उदयपुर।

६ अलफखाँकी पैड़ी, - प्रस्तुत ग्रन्थके परिशिष्टमें प्रकाशित हो रही है।

७ कायम रासा - प्रस्तुत क्यामखां रासा।

उपर्युक्त ग्रन्थोंमेंसे बीकानेरके संग्रहालयोंमें जान कविके निम्नांक ग्रन्थोंकी प्रतियाँ प्राप्त हैं। सम्पादनादिमें उपयोगी समझ सूचना दी जा रही है—

अनूप संस्कृत लाइब्रेरीमें

१ सतवंतीसत, र. सं. १६७८, सम्वत् १७२६ व १७२९ की लिखित दो प्रतियाँ प्राप्त हैं।

२ लैला मजनूं, सं. १६९१, (सम्वत् १७५४ की लिखित संग्रह प्रतिमें)।

३ कथामोहनी, र. सं. १६०४ मि. सु. ४ (सं. १७२९।३० लि. संग्रह प्रतिमें)।

४ कविवल्लभ, र. सं. १७०४ पत्र, ८६। महत्वपूर्ण काव्य ग्रन्थ, चित्र काव्य भी हैं।

५ रसकोष, र. सं. १६७६, पत्र ३७ (सं. १६८४ फतहपुरमें लिखित प्रति)

६ मदनविनोद, र. सं. १६९० का. सु. २ पत्र २७ (सं. १७४३ में लि. प्रति)

हमारे अभयजैन ग्रन्थालयमें

१ बुद्धिसागर, सं. १६६५ पत्र १८६ (सं. १७१६ लिखित)।

२ क्यामरासो, सं० १६९१ (प्रति सं. १७११में की गई)।

३ अलफखांकी पैड़ी, पद्य १००, सं. १६८४ लगभग (सं. १७१६ लि.)।

४ वैद्यक मति, सं. १६९५।

५. शिखासागर, सं. १६६५। (एक साथ सं. १७०१मे मरोटमें लिखित)।

६. पदनामा।

७-८. सतवंतीसत व मदन विनोदकी अपूर्ण प्रतियां हैं।

आचार्य शाखा भण्डार

१. रसतरंगिणी, सं. १७११ माघ (सं. १७२४ लि. परिमाण ग्रन्थ १०५४ पद्य ३२७)।

श्रीपूज्य संग्रह

१. ज्ञानदीप, र. सं. १६८६।

जयचन्दजी संग्रह

१. ज्ञानदीप ,, ,,
२. रसमंजरी (अपूर्ण प्रति)।

बड़ा भण्डार

१. पाहन परीक्षा।

प्रकाशित ग्रन्थ व ग्रन्थोंके विवरण

जान कविके प्रेमाख्यानोंमेंसे कामलता 'हिन्दुस्तानी' भाग १५, अङ्क ३ मे प्रकाशित हो चुका है। हिन्दी साहित्य सम्मेलनसे प्रकाशित सूफी काव्य संग्रहमें १. कनकावती, २. कामलता ३. मधुकर मालती, ४. रतनावली ५. छीता इन पाँचोंकी कथा एवं कथाओंके कुछ अंश प्रकाशित हुए हैं। अतः उनके संबन्धमें विशेष जाननेकी इच्छा वालोको उक्त ग्रन्थ देख लेना चाहिए।

कविके अन्य ग्रन्थोंमेंसे १. सतवन्तीसत, २. मदनविनोद और ३. कविवल्लभके आदि अन्त, राजस्थानी, भाग ३, अंक ४ में प्रकाशित हैं। एवं १. कविवल्लभ, २. रसतरंगिनी, ३. रसकोष, ४. वैदकमति, ५. पाहनपरीक्षा, ६. कथामोहिनी, ७. बुद्धिसागर, ८. लैलामजनू, ९. ज्ञानदीप, १० कायमरासा, और ११. अलफखांकी पैडीका आदि अन्त, मेरे सम्पादित "राजस्थानमें हिन्दीके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी खोज" के द्वितीय भागमें प्रकाशित है। रसमन्जरीका आदि अन्त सह विवरण मोतीलालजी मेनारिया द्वारा सम्पादित इसी ग्रन्थ के प्रथम भागमें है।

क्यामखानी दीवानोंके समयमें रचित ग्रन्थ

दीवान अलिफखाँ व दौलतखांके समयमें रचित कई हिन्दी ग्रन्थ उपलब्ध हुए हैं, जिनमें इन दीवानोंके सम्बन्धमें निम्नोक्त उल्लेख प्राप्त हैं—

१ बीकानेरकी राजकीय अनूप संस्कृत लाइब्रेरीमें (सं. १७५४ लि. गुटकेमें) प्राप्त सं. १६५७ फतहपुरमें रचित रूपावती नामक आख्यानकके प्रारंभमें निम्नोक्त महत्वपूर्ण उल्लेख है —

जंबुद्वीप देश तहाँ बागर, नगर फतेपुर नगरा नागर।
आसि पासि तहाँ सोरठ मारू, भाषा भली भाव पुनि सारू।
राजा तहाँ अलफखाँ जानहु, चहुवान हठीका पहिचानहु।
ताकर कटक न आवै पारा, समद हिलोरनि ज्यों अधिकारा।
तुरक समकि चढ़े केकाना, नगर नगर भू परे भगाना।
राजपूत असि चढ़ि करि कोपह, रविरथ थकै गिर्मनिकों लोपह।

दोहा

ता घरि पूत सुलखना, मनमोहन सुर ज्ञान।
चिरजीव दिनपति उदो, दूलह दौलतिखान।

चौपाई

अलफखान चहुवानकी सरभरी, कौं करि सकै न देख्यो कर भरी।
इह विधि कीयो आप सवार, करम जोति ज्यों दिपै लिलार।
इन्द्रकी सभा सुनी हम कानि, परतकि देखी इन्ह पहचानि।
जास्यों रस सो नो निधि पावै, जाहिस्यों रिशि सो मूल गवावै।
दीनदार दया अभि कीनु, हपरति कह्यो सु सिर धरि लीनु।
ता त्रिगि सेरखान नित्य साहे, दीनदार अर सभाव निमोहे।
सारदुल अर सब विराजै, गुनै साल शिवाजी भाजै।

दोहा

साहि वजीर साहिबखां, औरंगखान उकील।
एक ही एक समस्तग, बैठे करह सबोल॥

(राजस्थानमें हिन्दीके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी खोज, पृ० ८१ से)

२ बीकानेर के स्व. श्री पूज्य जिन चारित्र सूरिके संग्रहमें कवि निरंजन रचित मालती नाममालाकी प्रति है। यह ग्रन्थ सं. १६८५ में फतहपुरमें रचा गया है। कविने दौलतखाँ व उनके पुत्र ताहरखाँनका उल्लेख इन पद्योंमें किया है —

बागर मधि गुन आगरो, सुथम फतेहपुर गांव।
चक्रवर्ती चहुवान निरप, राज करत तिहाँ ठांव ॥१०॥

राज करत रससों भयौ, ज्यों जगतिपति इन्द्र ।
अलिफखांन नन्दन नवल, दौलतिखान नरिंद ॥११॥
दान क्रिपांन सुजान पन, सकल कला सम्पूर ।
रवि विरंचि ऐसौ रच्यौ, वचन रचन सति सूर ॥१२॥
ता नन्दन अन्दन जगत, गुन छंदनह निधान ।
कवि पंछी छाया रहे, तरवर ताहरखान ॥१३॥
अजा सिंघ नित एकठां, धर्म रीति आनन्द ।
सकल लोक छाया रहे, बिनैराज हरिचन्द ॥१४॥
तहाँ सुभग शोभा सरस, वर्ने वरन छत्तीस ।
तहाँ भीखजनु जानिकैं, इह मनि भई जगीस ॥१५॥

(उपर्युक्त ग्रन्थ के पृ० ६, पद्य १० से १५)

३. उपर्युक्त भीखजनकी लिखित कवि जान रचित रसकोष व आनन्द रचित कोकसारकी सं. १६४८-८५ में लिखित प्रति, अनूप संस्कृत लाइब्रेरीमें है । भीखजन रचित बावनी छप चुकी है ।

४. सुन्दर ग्रन्थावलीमें राघवदासजीके भक्तमालसे संत कवि सुन्दरदासजीके नवाबके चमत्कार दिखानेका उल्लेख वाला पद्य उद्धृत है । पद्यमें यद्यपि नवाबका नाम नहीं है पर सुन्दर-दासजीके समय पर विचार करने पर दौलतखां होना सम्भव है । पद्य इस प्रकार है –

"आयो है नवाब फतहपुरमें लग्यौ है पाई, अजमति देहु तुम गुसइयां रिझायौ है ।
पलौ जो दुलीचाको उठाइ करि देख्यौ तब, फतहपुर बसै नीचै प्रगट दिखायौ है ॥
येक नीचै सर येक नीचे लसकर बड, येक नीचे गैर बन देखि भय आयौ है ।
राघा धारे राखि लीये दबते नवाब केर, सुन्दर ग्यानीकौ कोई पार नहीं पायौ है ॥

इस घटना और चमत्कारोंके लिए कहते हैं कि नवाब स्वयं सुन्दरदासजीसे मिलनेको उनके स्थल पर कभी कभी आ जाते थे और कभी कभी सुन्दरदासजी नवाबके यहां चले जाते थे । नवाब उनके उपदेशोंसे लाभ उठाते थे । एक समय करामात दिखानेकी प्रार्थना की तो सुन्दरदासजीने नवाबसे कहा कि ईश्वर समर्थ है संसार सारा ही करामात है । नवाबने बहुत नम्रतासे आग्रह और हठ किया तो सुन्दरदासजीने उस गलीचेके किनारोंको, जिस पर दोनों बैठे थे, उठा कर देखनेको नवाबसे कहा । देखा तो एक कूंटके नीचे फतहपुर नगर बसता हुआ दिखाई दिया । दूसरेके नीचे फतहपुरका सर (जोहडा, तालाब) दिखाई दिया । तीसरेके नीचे नवाबकी फौज और रिसाले, तोपखाने आदि सारी सेना दिखाई दी और चौथेके नीचे फतहपुरका बडा भारी बीड (बीहड, घासका मैदान) दिखाई दिया । यह अजमत (करामात) देख कर नवाबको मनमें यह भय हुआ कि कहीं यह फकीर मेरे आग्रहसे रुष्ट तो नहीं हो गये हैं और यह भी कि ये बडे करामाती

साधु हैं इनसे डरते ही रहना चाहिए और इनकी सेवा और भक्ति करके इनको रिझाना और प्रसन्न रखना चाहिए।

पुरोहित हरनारायणजीने उपरोक्त घटनाके अतिरिक्त एक अन्य चमत्कारी घटनाका भी उल्लेख किया है। यथा —

"एक और समयकी बात है कि स्वामी सुन्दरदासजी फतहपुरके गढ़में नवाबके पास बैठे थे। बातों ही बातोंमें स्वामीजीने तुरन्त फुर्तीसे नवाबको सावधान किया कि तबेलेमेंसे सब घोड़े बाहर निकलवाओ और असबाबको फौरन तबेलेमेंसे बाहर निकाल कर गढ़से बाहर ले जाओ। हुक्म होते ही वहा देर क्या थी। सैकड़ों सहस और सवार और सिपाही लग गये। घोड़ों और सामानका बाहर निकालना था कि तबेला 'धरर' धराट करके गिर पड़ा। यों स्वामीजीने नवाबके घोड़ोंकी रक्षा की। नवाबने स्वामीजीके कदम पकड़ लिए और बहुत भक्ति की। इस प्रकार कई चमत्कार अनेक समयोंमें दिखाये थे।"

सुन्दरदासजीसे नवाबोंका अच्छा सम्बन्ध तो था ही, इन्होंने फतहपुरमें रह कर बहुतसे ग्रन्थ इन नवाबोंके समयमें रचे।

क्यामखां रासाका ऐतिहासिक कथा - सार

रासाका प्रारंभ करते हुए कवि जान सब प्रथम सृष्टिकर्त्ता व मुहम्मदको स्मरण कर अपने पिता दीवान अलफखां और उसके वंशका सत्य इतिहास लिखता है। पहले पौराणिक ढंगसे सृष्टिकी उत्पत्ति और चौहान वंशका विवरण इस प्रकार लिखा है —

सृष्टिकर्त्ताने पहले मुहम्मदके नूरको रचा, और उससे स्वर्ग, फरिश्ते, चन्द्र, तारे, देव, दानव, गिरि, समुद्रादि निर्माण किए। मनुष्योंकी उत्पत्तिमें प्रथम आदम हुए जिनसे आदमी हुए। हिंदु और मुसलमान दोनों एक ही पिंडसे उत्पन्न हैं, रक्त चर्मादिका कोई भेद नहीं, करनीसे अलग अलग नाम हुए। पैगंबर आदम एक हजार वर्ष जीवित रहे, उनका पुत्र सीस ९१२ वर्ष, सीसका पुत्र उनूस ९६५ वर्ष, उसका पुत्र कीनानने ९६२ वर्षके जीवनकालमें सुन्दर आराम, कोट, गढ़ आदि बनवाए। कीनानका पुत्र महलाइल, उसका पुत्र यजद हुआ। यजदका पुत्र इदरीस पैगंबर हुआ जो ३६५ वर्ष पृथ्वी पर रहा। उसका पुत्र मसतूम हुआ जिसने धर्म छोड़ दिया। उसका लदन नामक हुआ। फिर नूह नबी हुआ जो १५० वर्ष जीवित रहा और जिसने संसारमें धर्मका पथ प्रकट किया। नूहके तीन पुत्र थे साम, हाम और यासफ। सामके अरबी, रूमी, इराक, खुरासान इत्यादि हुए। चौहान, पठान आदि सामके वंशज हैं। हामके उजबक, हिंदी, बबरी, हबसी, पुरबी हुए। और यासफके फिरंगी, रूसी, यूनानी, तुर्क और चीनी हुए।

सामका पुत्र इमन, उसका पुत्र उज और उसका पुत्र समूद हुआ। समूदका पुत्र राजा आद हुआ, उसका सनाद, फिर जुगाद, मझाद, मेर, मदिर, कैलास, ममुद, फैन, वासित, राह, रावन,

धुंधुमार, मारीच, जमदग्नि, परशुराम, सूर, वच्छ, चाह और चाहुवान क्रमशः हुए। चक्रवर्त्ती चाहुवानकी आन चारों दिशाओंमें हैं, उनके साँभरका नमक सब लोग खाते हैं। उसी चौहानके कल्पवृक्ष रूपी वंशमेंकी निम्नोक्त शाखाएं हैं—क्यामखानी, देवडे, सीसोदिये, भदौरिये, चित्तोरिये, वावौर, मलखीची, निरवान, चाहिल, मोहिल, माहों, टूगट, वलिसे, जौंर, मोनगरे, गिलग्गौर, मांदलेचे, गुहिलौत, उमट, साचोरे, गोधे, राकसिये, हाले, झाले, दाहिमे, गूंदल, वालौत, हाडे, छोकर, वघेरे, खैल, वारौरिये, धुकारने, चीवे, गोवलवाल, हुलतावर, दलोहोर आदि। पंडग्गूर, आसोप, पीपारे, गौतम, दागी, भरिल आदि सबका मूल चौहान है।

अब चौहान वंशके छत्रपति राजाओंका विवरण लिखते हैं —

दिल्लीमें मानिकदे चौहानने २ वर्ष ६ मास १७ दिन राज्य किया, रायलदेने ९ वर्ष ७ दिन, देवसिंहने ६ वर्ष ९ मास, स्योंदेवने १० वर्ष, १ मास २२ दिन; बलदेवने ५ वर्ष ११ दिन, पृथ्वीराजने २२ वर्ष ११ दिन तक दिल्लीका शासन किया। इसने बहुत युद्ध किए, काबुलसे दूब मँगा कर घोडोंको चराया। चौहान वंश सबमें सिरमौर है जिसमें वीसल, आना, हमीर जैसे वीर राजा हुए।

चहुवानके पुत्र मुनि, अरिमुनि, मनिक और जैपाल थे जिनमें एक योगी हुआ बाकी राजा हुए। मानिकके कुलमें सोमेश्वरका पुत्र पृथ्वीराज हुआ, आठ चौहान अरि मुनिके वंशज हैं। चहुवानके बाद मुनि हुआ उसने कूचौरेमें राज्य किया। फिर भोपालराय, कहकलंग, घंघराय हुआ, जिसने घांधू गाँव बसाया।

एक बार घंघराय शिकार खेलने गया। उसके हरिनका पीछा करते हुए बहुत दूर चले जाने पर सेवक लोग व्याकुल हो कर उसे खोजने लगे। इधर राजा मृगके पीछे लोहगिरि तक पहुँचा। यहां आते ही मृग अदृश्य हो गया। राजाने चितातुर हो कर सजल नेत्रोंसे एक वृक्षकी छायामें विश्राम लिया। निकट ही एक जल-कुंड था जिसमें स्नान करनेके लिए चार महान सुंदरी अप्सराएं आई। वस्त्र उतार कर उन्होने कुंडमें प्रवेश किया। राजाने कौतूहलसे उनके वस्त्रोंको उठाकर अपने कब्जेमें कर लिया। अप्सराओंके मांगने पर राजाने कहा चारोंमेसे यदि एक मेरे साथ शादी करे तो वस्त्र दे सकता हूं। अप्सराओंने बहुत कुछ समझाया, पर न मानने पर आखिर एक जो सबसे छोटी थी, उसे राजाको देनेका वचन दिया। तब राजाने वस्त्र दिये और वे सुसज्जित हो कर बाहर आईं। राजाने एक अप्सराके साथ विवाह किया अर्थात् हरिणका पीछा करते हुए हरिणाचीकी प्राप्ति की।

अप्सराके गर्भसे तीन पुत्र हुए—कन्ह, चंद और इंद। चंदने चंदवार, इंदने इंदौर बसाया। कन्हरदेव पिताका राज्याधिकारी हुआ। उसके चार पुत्र थे अमरा, अजरा, सिधरा और बजरा। अजरासे चाहिल, बछरासे मोहिल, अमराके वंशज चौहान हुए। अमराका पुत्र जेवर राज्याधिकारी हुआ। उसके गूगा, बैरसी, सेस और बरह, यह चार पुत्र थे। गूगाके नागिन, बरहके भोयर और

भरह और वैरसीके उदैराज, उसके जसरान फिर कैसोराइ और उसके पुत्र विजयराज और हरराज हुए। हरराजके वैसो और नद हुए, उसके पृथ्वीराज, फिर लालचद, अजयचद, गोपाल, जैतसी, पुनपाल क्रमश हुए। जैतसीके मूलराज, असरथ, दौंका, साँगा, रातू, पातू, महियल पुत्र थे। पुण्यपालके रूप, फिर रावन और उसका पुत्र तिहुँपाल हुआ। उसका पुत्र मोटेराय हुआ, जो ददरेवेंमें राज्य करता था। मोटेरायके पुत्र करमचदको बादशाहने तुर्क बना कर "क्यामखा" नाम रक्खा। मोटेरायके चार पुत्रोंके नाम — क्यामखा, जैनदी, सदरदी और जगमाल थे। इनमें चौथा, जगमाल[1] हिंदू रहा। दीवान कमामखाके पाँच पुत्र ताजखा, महमदखा, कुतुबखा, इख्तियारखा और मोमनखा थे।

अब क्यामखा (करमचन्द) तुर्क कैसे हुआ इसका विवरण लिखते हैं —

एक बार कुंवर करमचद शिकार खेलता हुआ थक कर एक वृक्षके नीचे विश्राम करने लगा और उसे नींद आ गई। दिल्लीपति बादशाह पेरोसाह (फिरोजशाह) हिसारसे शिकार खेलता हुआ इधर आ पहुँचा, कुँवरको सोते देख कर बड़ा हर्ष और कौतूहल हुआ, क्योंकि सब वृक्षोंकी छाया ढल जाने पर भी जिस वृक्षके नीचे करमचद सोया था, छाया नहीं ढली थी। बादशाहने सैयद नासिरसे पूछा। उसने कहा कि कोइ महापुरुष होगा, जगावें। हिंदू देख कर विस्मय हुआ और उसे तुर्क बनानेकी ठानी। बादशाहने उसे जगा कर परिचय पूछा और प्यारसे गले लगा कर बहुत सम्मानित किया। बादशाहने उसका नाम क्यामखा रक्खा और अपने साथ हिसार ले गया। उसे पढ़ानेके लिए सैयद नासिरको सौंप दिया।

इधर करमचन्दके लौटने पर ददरेमें हाहाकार मच गया। सैयदके द्वारा खबर पा कर मोटेराय हिसार गया। बादशाहने बड़ा सम्मान किया और कहा कि इसके तुर्क होनेकी चिन्ता न करो। मैं इसे अपने पुत्रकी तरह रक्खूगा; इसे पाँच हजारी पदवी मिलेगी। इस प्रकार समझा बुझा कर सिरोपाव दे कर मोटेरायको विदा कर बादशाह दिल्ली गया।

क्यामखां सैयदके पास पढ़ने लगा। मीरांके १२ पुत्रोंके साथ खेल कूदमें उसके दिन बीतते थे, भोलेपनमे आपसमें लड़ते झगड़ते भी थे। एक बार हाँसीसे कुतब नूरदी, नूरजहान आए। क्यामखाको उदास देख कर उसे राजी किया और नींबू व गिंदोड़े दिए। उसने पहले नींबू और फिर गिंदोड़े लिए तो मीरने कहा कि इनके गोत्रमें पहले खट्टे हो कर फिर मीठे होनेकी रीति होगी। जब क्यामखांकी पढ़ाइ हो चुकी, तो सैयदने कहा अब नमाज पढ़ो, सुन्नत करो, और दीनमें आओ। क्यामखाने कहा और तो ठीक है, शादी कैसे होगी, सैयदने कहा—बड़े बड़े राजा महाराजाओंके डोले आवेंगे, दिल्लीपति बहलोल अपनी पुत्री देगा। क्यामखां मुसलमान हो गया, मीर उसे

---

१ फतहपुर परिचयमें जेठदीन व जयरदीन नाम लिखा है। इनके वशज भी क्यामखांनी कहलाते हैं। क्यामखांके मुसलमान होनेका समय इस ग्रन्थमें स १४४० लिखा है।

दिल्ली ले गया। मीरको बादशाहने सम्मान दे कर मनसब बढाया। मीरांके साथ बादशाहका बहुत प्रेम था, जब वह बीमार हुआ तो बादशाह मिलने आया। मीरांने कहा कि मेरे पुत्रोंमे कोई सपूत नहीं है, इस क्यामखांको मनसब देना, यह तुम्हारी सेवा करेगा। बादशाह जब चला गया तो मीरांने अपने पुत्रोंको बुला कर क्यामखांकी आज्ञामें रहनेकी व क्यामखांको इन्हें प्यारसे रखनेकी शिक्षा दे कर परलोक गमन किया।

बादशाहने क्यामखांको मनसब, सरपाव, और बावनी दे कर उमराव किया। एक बार बादशाह क्यामखांको दिल्लीका फौजदार बना कर स्वयं ठटा विजय करनेके लिए गया। मुगलोंने बादशाहकी अनुपस्थितिका लाभ उठा कर दिल्ली पर चढाई कर दी। चौहान क्यामखांने मुगलोसे इस प्रकार युद्ध किया कि लडे सो मरे और बचे सो भाग गए। लूटमें जो बहुत-सा माल-खजाना हाथ लगा, क्यामखांने उसे बादशाहके सुपुर्द कर दिया। बादशाहने उसे सरपाव दे कर सम्मानित किया और मनसब बढा कर खानजहां नाम रक्खा। पेरोसाह (फिरोजशाह) बादशाहने और उसके पीछे उसके पुत्र महमूदने फिर नजीरखांने बादशाह हो कर क्यामखांका बहुत सम्मान किया। जब बादशाह नसीरखां बीमार हुआ तो उसके पास मलूखां नामक गुलाम (जिसे बादशाह पेरोसाहने पाल-पोस कर बड़ा किया था) प्रधान पद पा कर बादशाहके पास रहता था। लोगोंने यही निश्चय किया कि इसीने तख्तके लोभसे बादशाहको मारा है।

बादशाह नसीरखांके कोई पुत्र नहीं था, खुशामदी कामदारोंने मलूखांको बादशाह बन बैठनेकी राय दी। जब क्यामखांने सुना तो कहा कि जो नौकर है वह बादशाह कैसे होगा? गुलामको बादशाह बनानेमें शोभा नहीं है। प्रधानने गढ़की चाबियां ला कर दीवान क्यामखांके सम्मुख रक्खीं, और दिल्लीके तख्त पर बैठनेका आग्रह करते हुए कहा कि "आप ही दिल्लीका तख्त लीजिए, आपके पूर्वज दिल्लीपति थे, आपके लिए यह कुछ नई बात नहीं है!" क्यामखांने कहा-"मुझे दिल्लीपति बननेकी बिल्कुल इच्छा नहीं है, कौन भावी संततिके लिए आफत मोल ले?"

प्रधानने तब कहा -"यदि आप बादशाह नहीं होते तो फिर हम मलूखांको तख्त पर बिठाते हैं।" ऐसा कह कर मलूखांको बादशाह बना दिया। क्यामखांने वहांसे निकल कर अपने घरकी राह ली। जब मलूखांको यह ज्ञात हुआ तो वह ससैन्य क्यामखांको मारनेके लिए चल पडा। २० कोसके फासलेमें जब क्यामखांको मालूम हुआ तो वह मलूखांसे युद्ध करनेके लिए पीछे लौट आया और दोनोंमें परस्पर घमासान युद्ध हुआ। मलूखांके पैर उखड़ गए, वह दिल्लीमें आ कर छिप गया। क्यामखांने भागते हुएका पीछा किया परन्तु हाथी, घोडे, द्रव्य आदि जो लूटमे हाथ लगे ले कर हिसारमें आ विराजा। देश-देशसे पेशकश आने लगी। कमधज, कछवाहे, बैरिया, भट्टी, तँवर, गोरी, जाट्ट, तावनी, सरोवे, नारू, खोखर, चंदेले, हुसैन अकलीम सा, साह महमद, ममरेजखां, इदरिस, मौजदी, मुगल, आदि सब सेवा करने आए। दूनपुर, रिणी, भटनेर, भादरा, गरानौ, कोठी,

बजवारा, कालपी, एटावा, उज्जैन, धार आदि सब क्यामखाके अधीन हो गए। मलूखा और क्यामखाका फिर कभी मिलाप न हुआ।

उस समय काबुलमें बादशाह तैमूर राज्य करता था जिसने आठों दिशाओंमें अपनी धाक जमा ली थी और जिसने रूम, इराक और खुरासान आदि जीत लिए थे। हिन्दुस्तान लेनेके लिए वह चढ़ आया। मलूखा तैमूरसे जा भिड़ा, परन्तु तैमूर लग जैसे जबरदस्त शक्तिशालीके सामने वह क्षण भर भी न ठहर सका। दिल्लीको तैमूरने खूब लूटा और तख्त पर आ बैठा। कुछ दिन रह कर खिदरखाको पचास हजार पठानोंके साथ दिल्ली छोड़ कर वह स्वयं काबुल लौट गया। जब मलूखाने तैमूरलगके जानेकी बात सुनी तो उसने दलबल सहित आ कर दिल्लीको घेर लिया। खिदरखाके साथ युद्धमें मलूखा मारा गया और तैमूरके दलकी जीत हुई।

मलूखाकी ओरसे निश्चिन्त होकर खिदरखाने सब भोमियों, जमीनदारोंको वशमें कर लिया और क्यामखा चौहान पर फरमान दे कर मौजदीनको भेजा। मोजदीन लाहोरका शक्तिशाली फौजदार था। उसने क्यामखाको फरमान दे कर बादशाह खिदरखाकी सेवा करनेके लिए बहुत समझाया, किन्तु वह अपने निश्चय पर अटल रहा और युद्ध करनेके लिए तैयार हो गया। दोनों ओरसे घमासान युद्ध हुआ। अगवान मौजदीन और क्यामखा चौहान भिड़ पड़े। मौजदीनकी फेंकी हुई बरछीसे बच कर क्यामखाने बाणके द्वारा उसका काम तमाम कर दिया। मौजदीनके मर जाने पर खिदरखाकी सेना तितर बितर हो गई।

अपनी हारसे खिदरखा बहुत रुष्ट हुआ। क्यामखाने भी दिल्लीका शासक बदल डालनेका निश्चय किया और अपने पूर्व परिचित नौकरीवाले लकब वाल अन्य खिदरखाको पत्र लिखा कि—"मैं तुम्हें दिल्लीका राज्य देता हूं, यदि इच्छा हो तो आओ।" उसने पत्र पाते ही तुरन्त दलबल सहित तैयार हो कर क्यामखाको पत्रोत्तरमें अपनी तैयारीका समाचार दे कर उसे भी तैयार होनेको लिखा। क्यामखा सेना सहित मुलतानमें खिदरखासे जा मिला और पहले नागोरमें राठौड़ोंसे युद्ध कर फिर दिल्ली लेनेकी ठानी। नागौरमें उस समय राव चूडा था उसकी मृत्यु हुई और राठौर सेनाकी पराजय हुई।

क्यामखा और खिदरखा दोनों नागौरको वशमें कर पठान खिदरखाको जीतनेके लिए दिल्ली चले। पठान भी अपनी सेना ले कर लड़ने आया परन्तु क्यामखाके साथ युद्ध करता हुआ हार कर भाग गया। क्यामखाने अपने मित्र खिदरखाको दिल्लीका सुलतान बनाया और दोनों सुख पूर्वक रहने लगे। खिदरखाने सोचा कि क्यामखा सबल है इसकी इच्छानुकूल शासन होगा, अत इसे मार डालना ही श्रेष्ठ है। इन कुत्सित विचारोंसे उसके उपकारको भूल कर एक दिन बादशाह खिदरखाने क्यामखाको धक्का दे कर नदीमें गिरा दिया। क्यामखा नदीमेंसे निकल आया और खिदरखाकी बदनीतीको जानते हुए भी बादशाहसे लड़ना धर्म विरुद्ध समझ कर सतोष किया। अपने जीवनमें क्यामखाने बड़े बड़े युद्ध किए थे। ९५ वर्षकी उम्रमें उसके शरीरका अन्त हुआ।

क्यामखांके पाँच पुत्र थे ताजखां, अहमदखां, कुतवखां, इख्तयारखां, और मौनखां, ये पाँचों वडे वीर और मनस्वी थे। खिदरखांके वार-वार बुलाने पर भी ये सलाम करने नहीं गए। हिसार में सुखसे बैठे रहे। दीवान ताजखांके छः पुत्र थे – फतहखां, रुका, फखरदी, मोजन, इकलीमखां, और पहाडा। कृतघ्नी वादशाह खिदरखांके निःसंतान मरने पर मुवारक, महमदफरीद, अलावदी और मुवारक वादशाहका पुत्र अमानतखां क्रमशः वादशाह हुए। फिर वहलोल लोदीने अपने भुजवलसे दिल्लीका तख्त प्राप्त किया। उस समय ढोसी पर अखनका राज्य था।

एक वार वादशाह वहलोलने ईराकसे वहुतसे घोडे मँगाए। मार्गमें अखनने उसमेंसे नौ चुन कर रख लिए। वादशाहने कुपित हो कर घोडे वापिस न देने पर चढ़ाई करनेकी धमकी दी। उसने उत्तरमें लिखा कि मेरे लाख घोडे हैं, परन्तु तुमसे युद्ध करनेकी इच्छासे ही मैंने घोडे रक्खे हैं। तुम निस्संकोच आ जाओ मैं ढोसीमें पर्वतकी तरह स्थिर बैठा हूँ। वादशाह इस उत्तरसे रुष्ट तो अवश्य हुआ परन्तु वह उसका कुछ भी न विगाड सका। अखनने मेवातियोंको वहुत तंग किया, पहाडके पास उसने अखन-कोट वसाया। आस-पासके सब भोमियाछ*उसे दंड देते थे। आंवेर वाले वार्षिक १२ लाख और अमरसर वाले ८ लाख भरते थे। तुबखां जो क्यामखांका चौथा पुत्र था, वारुवै जा वसा और पांचवां[1] पुत्र मौनखां वगरमें वसने लगा। आस-पासके भोमियोंसे वह कर उगाहता था, और कछवाहोंमें उस चौहानकी धाक जमी हुई थी।

क्यामखांके दोनो वडे पुत्र हिसारमें प्रीति-पूर्वक रहते थे। नागौरके फिरोजखांके बुलाने पर दोनों भ्राता वहां गए। खांने वडे आदरके साथ इन्हें रखा और कहा कि मैं भी दिल्लीपतिको सलाम नहीं करता। अच्छा हुआ जो एकसे तीन हुए। एक वार चित्तोडके स्वामी राणा मोकल पर आक्रमण करनेका विचार कर वे दलवल-सहित चले; राणा भी लडनेके लिए मोरचे पर आ पहुँचा। राणा मोकलसी और फिरोजखामें परस्पर युद्ध होने लगा। ताजखां और महमदखां खडे-खडे देखते रहे। राणा मोकलने खांके पैर उखाड़ दिए। वह नागौरकी ओर मुंह करके भागा। राणाने चार कोस तक उसका पीछा किया और नेजा-निसान छीन कर चित्तोडकी राह ली। दोनो चौहान भ्राता ताजखां, मुहम्मदखां अवसर देख कर राणासे जा भिडे, और युद्धमें राणाको परास्त कर नागौरके नेजे निसान वापिस ले लिए। उन्होंने भागते हुए राणाके हाथी-घोडे इत्यादि लूट लिए और नागौर ले आए।

जिन नेजे-निसानोको हार कर फिरोजखां दे आया था, उन्हें चौहान-बंधुओंके वापस लाने पर खां उन्हे लज्जाके मारे मुँह न दिखा सका। स्वामीके भागने पर भी सेवक लडे अर्थात् जड

---

* जमीनदार।

१. फतहपुर परिचयमे ७ स्त्रियोसे ६ पुत्र होनेका बतलाते हुए मुहम्मदखां नाम अधिक दिया है। क्यामखाके स्वर्गवासका समय इस ग्रन्थमें सं० १४७५ लिखा है। मुहम्मदखांका नाम आगे रासामें भी आता है।

उखड़ जाने पर भी वृक्ष स्थिर रहा, यह एक विचित्र बात हुई। फिरोजखाने लज्जासे ऐसा रुख बदला कि वह इनसे हँस बोल कर बात भी न करता था। ताजखां और मुहम्मदखाने अपने घर जानेका इरादा किया और दमामे बजाए। ग्याने रुष्ट हो कर सेवकोंको आज्ञा दी कि क्यामखानी चौहान बन्धुओंको मत जाने दो। स्वय दलबल-सहित युद्धके लिए तैयार हुआ। दोनों भ्राता बड़ी वीरता पूर्वक लड़े। ताजखां युद्ध करता हुआ घायल हो कर गिर पड़ा। महमदखाको युद्धसे ही कब फुरसत थी कि भाइकी खबर लेते। राठौड़ लोग घायलोंको उठाते हुए आए। उन्होंने ताजखांको उठा कर देश भाल की और घाव अच्छा होने पर उसे हिसार भेज दिया। ताजखाने युद्ध भी किया और जीवित भी रह गया। इससे इसका बड़ा सुयश हुआ। फिरोजखा तो इससे बड़ा भय खाता था। इसने खेतड़ी, खरकड़ा, बधौड़ाना, पाटनको जीता। पाटन और रेवासे मिल कर उसने आमेरको वशमें किया। कछवाहे, निरबान, तवर और पवार आदिसे पेशकश ली। ताजखां हिसारमें और महमदखा हाँसीमें रहा। ताजखांकी[1] मृत्युके बाद बड़ा पुत्र फतहखां हिसारमें पिताका उत्तराधिकारी हुआ।

फतहखाके दस पुत्र थे —जलालखा, हैबतसाह, महमद साह, असदखा दरिया साह, साह मनसूर, सेख सलह, बड़ा, बखामसूर और हैसम।

फतहखा बड़ा प्रबल और वीर था। उसने एक ही मुहूर्तमें छ कोटकी नींव डाली। स० १५०८ चैत्र शुक्ला ५ के दिन अपने नामसे उसने फतहपुर शहर बसाया[2]। उस दिन हिजरी सन् ८५७ सफर महीनेकी २० तारीख थी। आस पासके भोमिये पव्हू, सहेवा भादरा, भारग, बाइले आदिके स्वामी जुहार करने आए। जब कोट तैयार हो रहा था वह रनाउमें रहा और कोट तैयार होने पर फतहपुर आ गया। एक बार बादशाह बहलोल लोदी रणथमोर लेनेके लिए चढ़ कर आ रहा था। जब फतहखांने सुना तो वह भी सदल बल बादशाहसे जा मिला। बादशाहने उसका बड़ा सम्मान किया और फतहखाके आगमनको अपनी फतहका चिन्ह समझा। उधर रणथमौरकी सहायताके लिए माडूका सुलतान हिसामदी आ पहुँचा। परन्तु बादशाहसे लड़नेमें असमर्थ हो कर फाटक बद कर बैठा रहा। फतहखाने माडूके सुलतानके साथ घमासान युद्ध किया और उसका सर काट कर बादशाहके पास भेजा। फतहखाका बड़ा नाम हुआ और बादशाहने उसे मनसब दे कर सम्मानित किया। बादशाहसे जय पत्र ले कर फतहखां स्वदेश लौटा और सुख पूर्वक रहने लगा।

भारनौलसे बरतनने कहलाया कि मेवाती लोग मिल कर बगावत करने पर उद्यत हैं। तुम स्वय आओ, या सेना भेजो। फतहखांने अपनी सेना भेजी जिसने मेवातियोंको लोहीकी

---

१ फतहपुर परिचयानुसार स०१४७७ से १५०३ तक २६ वर्ष राज्य किया।

२ फतहपुर परिचयमें मुहम्मदखांके भूमा बाटकी सलाहसे बसानेका उल्लेख है पर मूलत यह शहर १४वीं सदीके पहलेका बसा है।

तरफ भगा दिया। इधर इख्तारखांने सामनेसे आक्रमण किया। दोनों ओरसे मार पडनेसे मेवाती लोग निर्बल हो कर हार गए। विजयी फतहखान लौट कर फतहेपुर आया।

फतहखांने अपनी वीरतासे बडी प्रसिद्धि पाई। कांधल और रिणमल, राणा सांगा, अजा साँखला आदिके साथ रणक्षेत्रमें उसकी सेनाने शत्रु-दलका संहार कर विजय प्राप्तकी थी। फतहखांके यहां वीर बहुगुन तो ऐसा था कि सिर कट जाने पर भी युद्ध करता रहा। (इसकी कब्र व कुआ अब तक मौजूद है)।

मुसकीखां नामक किरांनी पठान फतहखां चौहानसे युद्ध करनेके लिए आया और सरमेके पास दोनोंकी मुठभेड हुई। फतहखाने मुसकीखां किरांनीको मार कर विजय प्राप्त की। फिर आंबेर पर चढ़ाई करके वहांके भोमियोंको भगा कर आंबेरको लूट लिया। भिवानीको घेर कर जाट्ट जावलोंसे युद्ध किया और उन्हे हराया। भिवानीको लूट कर बहुतोंको बंदी बना कर लाया।

राव जोधाने सोचा कि यदि फतहखांसे संबन्ध हो जाय तो उधरका खटका मिट जाय, इस लिए उसने नारियल भेजा। कांधलने बहुगुनको मारा था, इस वैरसे फतहखांने नारियल लेना अस्वीकार कर दिया। महमदखांका बेटा समसखां उस समय झूंझणूमें था। 'उसके पास भी नारियल भेजा गया' उसने कहा, वहां व्याहने कौन जाय? यहीं डोला भेज दो। जोधाने डोला भेजा। मीरांजीने जो भविष्यवाणी की थी वह सफल हुई।

बादशाह बहलोलखां लोदीने फतहखांको बुला कर अपने पास रक्खा। परस्पर बडी प्रीति थी। एक दिन बादशाहने कहा कि अपने-आपसमें अदल-बदलका विवाह संबंध करो जिससे पारस्परिक प्रीति बढे। फतहखांने कहा अब मेरे तो कोई पुत्री अविवाहित नही है। बादशाहने इसे बुरा माना। तब फतहखां रुष्ट हो कर फतहपुर आ गया और फिर दिल्ली नहीं गया। बादशाहने समसखां चौहानके पास अदल-बदल संबंधके लिए कहलाया। उसने प्रसन्न हो कर शाहजादी अपने पुत्रको व्याही और अपनी बहिन बादशाहको दी। फतहखां आजीवन ढिल्लीपतिको सलाम करने न गया। फतहखांकी[1] मृत्युके बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र जलालखां फतहपुरका स्वामी हुआ।

दीवान जलालखांके दस पुत्र थे — दौलतखां, अहमदखां, नूरखां, फरीदखां, निजामखने पहाडखां, दाऊदखां, लाडखां, अखन, और महमदशाह।

जलालखांने[2] पिताके बनाए हुए कोटको बढाया और जबरदस्त पोल (दरवाजा) बनाई। जलालखां बड़ा शूर-वीर था। वह भी पिताकी तरह दिल्लीपतिके कदमोंमें सलाम करने नहीं जाता था। नागौरके खानका माल लूट-लूटकर जलालखां उसे तंग करने लगा। उसने रुष्ट हो कर जलालखांके

---

१. फतहपुर परिचयमे इनका राज्य सं० १५०५ से १३५१ लिखा है। मृत्यु १५३१मे हुई थी।

२. फतहपुर परिचयमें इनका राज्य सं० १५३१ से १५४६ तक लिखा है।

ऊपर आक्रमण करनेके लिये अगणित सैन्य एकत्र किया और बीड़ा फेरा। मुगल चौपानखाने बीड़ा उठाया और जगोर कगरायलके पास दलबल सहित आ पहुँचा। जलालखा भी तैयार हो कर युद्धमें उतरा। उसने शत्रुके छक्के छुड़ा दिए। चौपानखाको पकड़ कर उसके नितंब पर दाग लगाया और उसके हाथी, घोड़े, इत्यादि लूट कर छोड़ दिया। फिर जलालखान छोपोरी पर चढ़ाई की और विजय प्राप्त कर आमेरको जा घेरा। वहाके मीमिए बड़ी वीरतासे लड़े। मिल कर उन्होंने जलालखाके हाथीको आ घेरा। साथी लोग सब लूटमें लगे थे, तो भी अकेले दीवान जलालखाने बाणोंसे शत्रुदलको भगा दिया।

चौहान समसखाके मर जाने पर उसका पुत्र और बादशाह बहलोल लोदीका जमाई, फतहखा उत्तराधिकारी हुआ। अपने अभिमानमें मस्त हो कर अपने भाई मुबारकशाह और विमाताको बँटवारा न दे कर झूंझणूकी समस्त आय वह स्वयं खाने लगा। मुबारकशाहने अपने नाना राव जोधाके पास जा कर शिकायत की। राव जोधाने कहा कि तुम्हारे मामा बीका और बीदा तुम्हारे निकट हैं, उनसे कहो। मुबारकशाह मामाके पास आया, किंतु वहासे निराश हो कर लौटा, और फतहपुरमें जलालखाके पास आया। मुबारकशाहको उसने आश्वासन देते हुए कहा कि मुझे बादशाहका कोई खौफ नहीं, मेरे पिता भी उससे नहीं डरे तो डर कर क्यों करूं ए ? जलालखाने ससैन्य झूंझणू पर चढ़ाई की। फतहखाकी सेना भाग गई, तब उसने मुबारकशाहको झूंझणूका राज्य दिया। फतहखा मर गया। महमदखाको राज्य न मिला। मुबारकशाह ही राज्यका मालिक रहा।

जलालखा लोहागर जा कर रहने लगा। वहा पहाड़की ओट ग्रहण कर नागौरी खानको तंग किया करता था। इधर फतहपुरको सूना सुन कर उसके लिए बीदाका मन ललचाया और वह सदलबल नरहरमें दिलावरखासे जा मिला। दस हजार रुपया और एक बेटी दनेकी बात कर पठानको भी ससैन्य फतहपुर ले आया। लोहागरमें जलालखाको खबर मिली तो उसने तुरत अपने पुत्र दौलतखांको भेजा। उसने फतहपुरके गढ़में प्रवेश कर अपनी जय पताका फहराई। बीदा और दिलावरखा व्याकुल हो कर लौट गए।

जलालखाके मरने पर उसका पुत्र दौलतखा उत्तराधिकारी हुआ। उसके तीन पुत्र थे — नाहरखां, होजनखा, और बाजिदखा। दीवान दौलतखा चौहान महान् तेजस्वी और जबरदस्त वीर था, उसकी ऐसी धाक जमी हुई थी कि शत्रु लोग भयसे मुँह छिपाते फिरते थे। वह अनातिक खान कराबका भी कौड़ीके समान गिनता था। किसीको अपनी अंगुल मात्र भूमि भी नहीं देता और न किसीकी लेता था। मात सुलतान भी यदि उसके प्रतिस्पर्द्धी हों तो भी वह संग्राममें पीठ नहीं दिखाता था। उसमें वचनसिद्धिकी भी विशेषता थी।

राव बीका दासीस अजमल लौटा था, अत लूणकरनने सदलबल तैयार हो कर पाटौदेमें डेरा किया, और पत्र दे कर प्रधानको दौलतखांके पास भेजा। पत्रमें लिखा था कि — दौलतखां, यदि

भला चाहते हो तो शीघ्र हमसे आ कर मिलो, या सहायता भेजो। दौलतखांने क्रुद्ध हो कर चिट्ठी पर पेशाब किया और दूतके अंचलमें रेती बांध कर कहा कि तुम्हारा स्वामी यदि चढ कर न आया तो उसके सिर पर धूल है। प्रधानोंको धक्के दे कर उसने निकाल दिया। प्रधानोंके जाने पर लोगोंको चिंतातुर देख कर दौलतखांने भविष्यवाणी की कि लूणकरन जीवित नहीं बचेगा।

प्रधान अपमानित हो कर राव लूणकरनके पास गए। वृत्तांत सुन कर उसने क्रुद्ध हो कर कहा कि पहले ढोसी जीत कर फिर आते समय दौलतखांकी खबर लेंगे। राव अपार सैन्य शक्तिके साथ ढोसी गए परंतु वहां तुरकमानकी मददसे पठान लोग खूब लडे, और लूणकरनको मार कर उसके साथियोंको लूट लिया। दौलतखांका वचन सत्य हुआ।

एक बार काबुलसे दिल्ली देखनेके लिए बाबर कलंदरके वेषमें बाघको साथ ले कर चला। मार्गमें फतहपुर ठहर कर दीवान दौलतखांसे मिल कर बाघके लिए एक गाय मँगा देनेको कहा। दीवानने तुरंत गाय मँगाई और कहा कि मैं देखता हूँ कि बाघ कैसे गायको मारता है? जब बाघ गायके समक्ष आया तो दौलतखांने सिंहनाद कर बाघको फटकारा। वह उस गायको खानेको असमर्थ हो कर स्तंभितकी भाँति खडा रहा। सत्य सुभट पुरुषोंके वचनका सिंह भी उल्लंघन नहीं कर सकते। गजेंद्रका मद भी उनके सामने सूख जाता है। फिर बाबरने अलवरमें मेवाती हसनखांके कटकको और दिल्लीपति बादशाह सिकंदरशाहको विस्मित हो कर देखा।

जब बाबर हिंदुस्तान देख कर काबुल लौटा तो लोगोंने इधरकी बातें पूछीं। उसने कहा— सारे हिंदमें तीन आदमी देखे — सिकंदरशाह, हसनखां और दौलतखां। इस प्रकार बाबरने दीवान दौलतखांकी बडी प्रशंसा की।

एक बार दौलतखांने सुना कि गौर निरवाण व नागौरके गावोंको लूट कर जा रहे हैं उसने ससैन्य जा कर उन्हें घेर लिया और उन्हें हरा कर लूटका सारा माल छीन लिया। एक दिन दौलतखां शिकार खेलने चला। बाज, कुही, बहरी आदि बहुतसे उसके साथ थे। उसने बहरीको कुंजके लिए छोडा। वह आकाशमें ऊँची उड गई, फिर अदृश्य हो गई। दीवानजी उसको छोड कर चले आए। बहरी उडती-उडती हिसार जा पहुँची, वहां मीरने पकड कर सिकंदरको सौंपा। दौलतखां यह ज्ञात कर ससैन्य हिसार पहुँचा। हिसारका सिकदार मुहब्बतखां साराखानी पठान सेना-सहित लडनेको आया। नासौमें दोनों सेनाएं मिलीं। दूरसे दीवान दौलतखांका मुंह उतर गया। मुहब्बतखां भय-भीत हो भागा। दौलतखांने विजयके नगाडे बजाए।

दौलतखां अपने सिद्धांतोंका पक्का था। स्वगोत्रीय पर घाव न करना, परमात्माको एक मानना, न्याय-मार्ग पर निश्चल रहना चाहे लाखों विरोधी हों, न्यायके समय निष्पक्ष रहना, आदि उसके विचार मँजे हुए थे। बादशाह बहलोल लोदीके मरने पर सिकंदर उत्तराधिकारी हुआ, पर दौलतखां उसके दरबारमें भी न गया।

मुबारक साहके बडे पुत्र कमालखांको झूंझणूका राज्य मिला और दूसरे पुत्र साहबखांको नौहाका। वह जब तक जिया भाईके अधीन रहा। कमालखांका पुत्र भीखनखां झूंझणूका स्वामी

हुआ और साहबखाका पुत्र मुहब्बतखा उसे प्रतिदिन सलाम करता था। एक बार परस्पर चित्त-कालुष्य हो जानेसे मुहब्बतखा नौहा छोड कर दौलतखाके पास फतहपुर चला गया। उसने दौलत खाके पौत्र फदनखाको पुत्री दी और उसकी सेवा करने लगा। मुहब्बतखाके निवेदन करने पर दौलत खाने कहा-नोहा तुम्हारा है, तुम वहा जाकर रहो। तुम्हें कौन निकालने वाला है? यदि भीखनखां कुछ गडबड करे तो मुझे खबर देना।

मुहब्बतखा नौहा जा कर रहने लगा। भीखनखा तत्काल सेना ले कर चढ आया। मुहब्बतखाके फतहपुर कहलाने पर दौलतखाका बडा पुत्र नाहरखा भी सहायतार्थ आ पहुँचा। आभूसरके ताल पर घमासान युद्ध होने लगा। नाहरखाको देखते ही भीखनखा युद्धक्षेत्र छोड कर भाग गया। नाहरखा जीत कर घर आया। पिताने प्यारसे गले लगा लिया। दौलतखाके मरने पर उसका पुत्र नाहरखा फतहपुरकी राजगद्दी पर बैठा।

दीवान नाहरखांके[1] तीन पुत्र थे — फदनखा,[2] बहादुरखा, और दिलावरखा। नाहरखा बडा वीर और विलास प्रिय भी था। घरमें धन बहुत था, उसने बहुत सी पातरिया रख ली और नाच गानका अखाडा रात दिन जमा रहता था। आस पासके भोमिए जमीदार भय खाते थे। बीकानेरके राव लूणकरनके मरने पर पूर्व निश्चयानुसार वजीरोंने प्रेम सबध स्थापित करनेके लिए राज कन्या दी। दिल्लीपति सिकदरके मरने पर इब्राहीम बादशाह हुआ। उसे मार कर बाबर और फिर उसका पुत्र हुमायू बादशाह हुआ। नाहरखाके समय शेरशाह दिल्लीका बादशाह था। वह नाहर खाको बहुत मानता था और उसे मामा कह कर पुकारता था। उसने हुक्म दिया कि फ़तहपुरकी पेशकश घर बैठे मज़ेसे खाओ।

नाहरखाने स० १५९३ भाद्र सुदी ८ सोमवारके दिन फ़तहपुरमें एक सुंदर अद्वितीय महल बनवाया।

एक बार चित्तोड़के राणाने नागौरके खान पर चढाईकी। पूर्वकी प्रीतिके कारण नागौरीके आमत्रणसे नाहरखा सहायतार्थ चला। राठौड व कछवाहे उसे दिल्लीपतिसे भी अधिक मानते थे राव गागा, जैतसी, सूजा और पृथ्वीराज आदि सब ससैन्य आ मिले। जब नाहरखाने सुना कि नागौरसे १२ कोस पर राणा ठहरा हुआ है और खान नागौरसे निकल कर लडनेको नहीं जाता है, तो वह नागौरमें न जा कर तीन कोस और आगे गया। नागौरीखाके बुलाने पर नाहरखाने कहा, "राणा निकट ठहरा हुआ है। तुम कोटकी ओटमें क्यों छिपे हो? मैं अब आगे निकल आया, लौट नहीं सकता। तुम्हीं आ कर मिलो।" नागौरीखा भी नाहरखाकी धाक सुन कर राणा उलटे पैर चला। नाहरखा भी उसी मार्गसे सबके साथ पीछे पीछे गया। राणाके पहाड़ोंमें प्रवेश करने पर

---

१ राज्यकाल स० १५४६ से १५७०

२ राज्यकाल स० १५७० से १६१२

सेना लौट चली और उसने सारे गाँवोंको लूट लिया। जगमाल पँवारने कहलाया कि राणाने मुझे अजमेर दिया था; उसके सब गाँव तुम लोगोंने लूट लिए। यदि सच्चे राजपूत हो तो प्रहर दो प्रहरके लिए ठहर जाओ। मैं आता हूं। यह सुन कर बीकानेर, सूजा अमरसर, और आंबेर वाले आवेर चले गए। किन्तु नाहरखाने कहा—तुम बेखटक आओ। यह कह कर नाहरखां मकराणेके तालमें प्रतीक्षा करने लगा। अजमेरका फौजदार जगमाल पंवार राणाकी सेना ले कर आया। दोनोंमें परस्पर घमासान युद्ध होने लगा। अन्तमें पँवार भागा और चौहान नाहरखांकी जीत हुई।

नाहरखाके मरने पर उसका पुत्र फदनखा फ़तहपुरका स्वामी हुआ उसके तीन पुत्र थे-ताजखां, पिरोजखां, दरियाखां। दिल्लीमें जब पठान सलेमसाह बादशाह हुआ तो उसने फदनखांका बडा सत्कार किया। मुहब्बतखांका पुत्र खिदरखां फदनखांके पास खडा था। बादशाहने फदनखांकी बडी प्रशंसा की और कहा कि सब (क्यामखानी) भाइयोंमें सिरमौर हैं। हुमायूंने भी बादशाह हो कर फदनखांको अच्छा आदर-मान दिया।

दिल्लीपति अकबर भी फदनखांसे प्रेम रखता था। बीरबलके पूछने पर बादशाहने कहा कि और तो सब मेरी कृपासे बने हैं, इन्हें करतारने बडा बनाया है। राजपूतोंकी जातिमें ३॥ कुल हैं— प्रथम चौहान, द्वितीय तँवर और तीसरे पँवार, आधेमें शेष सब हैं। बाजिओंमें जैसे निसान बड़ा है वैसे ही गोत्रोंमें चौहान बड़ा है। फदनखांने बादशाह अकबरको अपनी बेटी दी; इससे पारस्परिक प्रेममें विशेष वृद्धि हुई। बादशाहको भोमियोंका (हिन्दू जमींदारोंका) विश्वास नहीं था। उसने कहा हिन्दू बदलते देर नही लगाते, अतः तुम इनकी जमानत दो तो मैं मनसब दूँ। फदनखांने सबकी जमानत दी और बादशाहने उन्हे मनसबदार कर दिया। फदनखांने राय सालको दरबारी बना कर मनसब दिलाया।

बीदावत लोग इधरके गाँवोंमें आ कर चोरी लूट कर जाते थे। यह दीवान फदनखांको बुरा लगा और उसने सेनाके साथ बीदावतोंके प्रदेशमें प्रवेश किया और छापर द्रोणपुरमें बीदावतोंको हरा-कर चोरीको शपथ दिला दी। इसके बाद फदनखाने छापौरी और पूगपर हमला किया, निरबानोंको हरा कर उनके गांवोंको जला दिया। उसने बहादुरखांकी सहायता करके झुंझणू दिलाया।

फदनखांके पश्चात् उसका बडा पुत्र ताजखां[1] फतहपुरका स्वामी हुआ। उसके ८ पुत्र थे— महमदखां,[2] महमूदखां, शेरखां जमालखां जलालखां, मुजफ्फरखां, हैबतखां और हबीबखां। ताजखां रूपमें अत्यंत सुंदर था, देश-विदेशमे उसका सौंदर्य प्रसिद्ध था। उजियारैं (?) के दौलतखां पठानने प्रशंसा सुन कर दीवान ताजखांका चित्र बनवा कर मंगाया और उसे देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

---

१. राज्यकाल सं० १६०२ से १६०६।
२. राज्यकाल सं० १६०९ से १६२७।

खानखा अलवरसे सदलबल चढ़ा। उसने सारा और सरकशीको नष्ट किया। लखान गढ़को लूटा। मलिक ताजके यहा लूटमार कर रेवाड़ीका थाना नष्ट कर दिया। दीवान ताजखाके बड़े पुत्र मुहम्मदखाके तीन पुत्र थे – अलफखा, इब्राहीमखा और सरमस्तखा। मुहम्मदखाने क्योर और वैराटको विजय किया। माटनके पुत्र कूपावत राठौर कुमकरनको उसने रणक्षेत्रसे भगाया।

तानखाका जियमानतामें ही मुहम्मदखाकी मृत्यु हो गई। पुत्र वियोगसे पिताको अत्यत दु ख हुआ परतु रुदन करनेसे आसूके सिवा क्या हाथ आ सकता था, अत अपने पोत्र अलफखाके मस्तक पर हाथ रक्खा और उसे शाही दरबारमें ले गया। बादशाह जलालुद्दीनसे (अकबरसे) खानखाने निवेदन किया कि मेरे घरमें यह बड़ा है, इसे आप सम्मान दें। बादशाहने अलफखाको बड़ा प्यार किया। जब तक ताजखा जीवित रहे, अलफखाको क्षण भरके लिए भी अपनेसे अलग नहीं किया। उसके मरने पर अलफखा उत्तराधिकारी हुआ। बादशाहने उसे टीका दे कर फतहपुरका स्वामी बनाया और उसे हाथी, घोड़ा सिरोपाव दिए। अलफखाने शाही फरमान ले कर फतहपुर भेजा, कछवाहे गोपालके पुत्र स्यामदासके न मानने पर सिकदार शेरखाने उसे निकाल दिया। दीवान अलफखाको फतहपुर मिला और वह नवाब कहलाने लगा। नवाब अलफखाके पाच पुत्र थे – दौलतखा,[1] न्यामतखा, सरीफखा, जरीफ और फकीरखा।

फुमणूके स्वामी बहादुरखाके मरने पर उसका बड़ा पुत्र समसखा उत्तराधिकारी हुआ, किंतु दूसरे भाइ उसे नहीं मानते थे और उसे सतत दु ख दिया करते थे। अलफखा उसे बादशाहके पास ले गया और बादशाहके द्वारा मनसबका सम्मान दिलाया। यही रीति चलती है कि फतेहपुर वाले जिसे बड़ा करें वही झूमणूम बड़ा होता है।

बादशाह अकबरने पहाड़में युद्ध करनेके लिए जगतसिंह और दीवान अलफखाको सेना सहित भेजा। धमेहरीमें जा कर ब्रवन लोगोंको पराजित कर उनके गायोंको नष्ट किया। राना तिलोकचन्द भयभीत हो कर शरणमें आ गया। दीवानजीने उसे बादशाहके कदमोंमें हाजिर किया।

सलीमने जब राणा पर चढ़ाइ की तो उसने बादशाह अकबरसे कह कर अलफखाको भी साथमें ले लिया। मेवाड़में आ कर शाहजादेने विशाल सेनाको विभाजित कर सादड़ीका थाना अलफखाके जिम्मे लगाया। उसने राणा अमरसिंहके थाने पर आक्रमण कर दलको मार भगाया और लूटका बहुत सा माल हाथमें किया। राणा बहुत रुष्ट हुआ परन्तु वह भी सादड़ी थानमें असमर्थ रहा। ऊठालेमें समसखा था। उसने भी राणाको खूब छकाया। जब शाहजादेने सुना तो उसने अलफखा और समसखा दोनों चौहान वीरोंकी बड़ी प्रशसा की।

---

१ राज्यकाल स० १६२७ पर यह चिंतनीय है। पेढ़ीके अनुसार इनका जन्म १६२१ म हुआ था।

बादशाह अकबरके मरने पर शाहजादा सलीम जहांगीरकी उपाधि धारण कर राजगद्दीपर बैठा। उसने दीवान अलफखांका बडा सम्मान किया और उसके नाम फतहपुरका लाल मुहरका पट्टा कर दिया। राय मनोहरने अलफखांको मेवात देशमे भेजा। वहां मेव लोग इनकी बडी सेवा करते और भेटों द्वारा द्रव्यकी भी उन्हें अच्छी प्राप्ति हुई।

बीकानेरके राजा दलपतसिंहने अगणित सेना एकत्र कर बादशाहके विरुद्ध हो कर लूट-मार शुरू कर दी। वह सरसामे गया और ज्याबदीनको हटा कर उसने शाही खजाना लूट लिया। बादशाहको ज्ञात हुआ तो वह बडा क्रुद्ध हुआ और शेख कबीर व अलफखांको बीस उमरावोंके साथ विशाल सेना दे कर सरसा भेजा। दलपतसिंह वहांसे अन्यत्र चला गया। एक दिन पानीके लिए परस्पर युद्ध छिड गया। एक ओर २१ उमराव थे और दूसरी ओर अकेला अलफखां। घमासान युद्ध हुआ, बहुतसे सुभटोंके मारे जाने पर स्वयं शेख कबीरने बीच-बिचाव किया। उसने दीवान अलफखांकी बड़ी प्रशंसा की और उन्हें सम्मानित किया। युद्ध बन्द कर दोनो दल परस्पर मिल गए और दलपतिसिंहको जीतनेके लिए भाटू पर चढाई की। वह बीकानेरके बहुतसे सरदारोंके साथ था। शाही सेनाके सामने दलपतिसिंहने लडनेमें असमर्थ हो कर जलालखां द्वारा दीवान अलफखांसे कहलाया कि तुम मेरे बडे भाई हो। शाही सेनाको रोको। हमारे पूर्वज लूणकरन, प्रतापसी, जोधा, मालदेव आदिकी प्रीतिका प्रतिपालन करो। अलफखांने तत्काल युद्ध बंद कर प्रेमपूर्वक बादशाहके पास भेज कर दलपतिसिंहको बचा लिया। दिल्लीपतिने शेख कबीरको बुला लिया, उसके स्थान पर मुबारक आया।

दीवान अलफखां और पठानने मिल कर भिवानी पर चढाई की। वहां जाटू जाबलोने पैर थाम कर युद्ध किया। फिर गढईमें जा कर गोली चलाने लगे। दीवानके दलने तुरन्त गढईको तोड़ कर जाटुओंको हरा दिया और गांवोको लूट कर ख्याति प्राप्त की।

बादशाहने अलफखांको मेवात देश पर चढाई करनेकी आज्ञा दी और हाथी, घोडा, सिरोपाव दे कर मनसब बढाया। दीवानजी ससैन्य मेवात देशकी ओर चले। सर्व-प्रथम सारा विजय कर अलफखाने कारहंडेमें डेरे किये। वहां भी मेवातियोंको मार कर घनहटा गए। मेव लोगोने खूब वीरतासे लड कर प्राण दिए। इस विजयसे सारे पहाडमे अलफखांकी धाक जम गई।

बादशाहने शाहजादे परवेज़के साथ दीवान अलफखाको भी दक्षिण विजय करनेके निमित्त भेजा। बुरहानपुर पहुँचने पर युद्धके लिए सब थाने-बांटे गये। अलफखांको मलकापुर मिला। शाहज़ादा एदलाबाद ठहरा और सेनाको उसने आगे भेजा। खानखांना, लोदी खानजहान, अब्दुल्ला जख्मी, कछवाहा मानसिंह, राठोर रायसिंह आदिका अगणित दल इस सेनामे था। अब्दुल्लाने ख़ूब वीरतासे लडाई की पर आख़िरमें उसके पैर उखड़ गए। वह बुरहानपुर लौट चला, लिखी अलफखांके मलकापुरके सिवाय सब थाने उखड गए। सब सरदारोंने दीवानको चिट्ठी लिखी कि सब थाने उखड गए, तुम क्यों बैठे हो? जैसा पंच करे वैसा करो, इसमे कौन-सी लाज है?

अलफखाने उत्तर लिखा कि अपने पूर्वज चौहान हमीर आदिको इस तरह लजा कर मैं कैसे आ सकता हूँ ? दक्षिणके प्रबल दलने उमड़ कर मलकापुर पर चढ़ाई कर दी, दीवानने घमासान युद्ध करके दक्षिणी दलको भगा दिया। जब शाहजादेने यह सुना तो अलफखांकी बड़ी प्रशंसा की और भीलोंके थानेको विजय करनेके लिए मलकापुरसे भेजा। उसने अविलंब जालवापुर आदि सारे मैवासको विजय कर भीलोंको परास्त कर दिया। फिर फतहपुर आ कर वह वापस मैवास चला गया। वहाँके लोग अलफखांकी निरन्तर सेवा करने लगे। दीवान स्वयं दक्षिणमें रहते थे, उनका बड़ा पुत्र दौलतखां फतहपुरमें रहता था। बादशाहने दीवानका मनसब बढ़ा कर उसे बड़ा उमराव बनाया।

बीदावत सरदार चोरी करता था। उसके न मानने पर फतहपुरसे दौलतखाने चढ़ाई करके उसे परास्त किया और उसके गाँवको जला दिया। पटौधी और रसूलपुरके कछवाह भी चोरी और लूटका धंधा करते थे, व राहगीरोंको मार देते थे। जब बादशाहके दरबारमें इसकी पुकार की गई तो बादशाहने महाबतखांसे सलाह ली। उसने कहा — कछवाहोंको दौलतखां धूलमें मिला देगा। बादशाहने तत्काल फरमान भेज कर दौलतखांको बुलाया। दौलतखां अजमेरमें आ कर बादशाह जहांगीरसे मिला। बादशाहने हुक्म दिया — "सुजावत चोर है उसने सगरसे पटी छीन ली है, यदि तुममें शक्ति हो तो उसे निकाल कर पटी अपनी जागीरमें मिला लो।" दौलतखाने तुरन्त शाही आज्ञा स्वीकार की। बादशाहने उसे सिरोपाव दे कर सम्मानित किया और दोनों पटी दीवानके मनसबमें लिख दी।"

दौलतखाने बादशाहसे रुखसत पा कर कछवाहोंसे कहलाया कि हमारी पटी अविलंब छोड़ दो, अन्यथा युद्धके लिए तैयार हो जाओ। कछवाहोंने कहा — "रायसिंह और राणा सगर भी हमें नहीं निकाल सके। उन्होंने भी जागीर छोड़ दी। तुम कौन उनसे बढ़ कर आ गए। सुधारो, तरबीयतखां और खवास खालिया शेख भी हमारे सामने नहीं टिके, तुम किस फेरमें हो।" यह सुन कर दौलतखाने तुरन्त धावा बोल दिया। कछवाहे भाग गए। माधव, नरहर और नरहरखाने दौलतखांके आगे गीदड़की गति पकड़ी। गिरधरके पुत्र गोकुलने आ कर जुहार किया।

दौलतखान नरहरदासको पटीसे निकाल दिया, वह सकुटुम्ब लोहारू जा कर रहने लगा। माधव भादौवासीमें रह कर चोरी करने लगा। माधवके विरुद्ध लोगोंकी पुकार होने पर दौलतखान उसे भादौवासी छोड़ देनेको कहलाया। उसके न मानने पर दौलतखाने माधव पर जो सेखावतोंके दलसे गर्विष्ठ था, आक्रमण किया। वह लड़नेमें असमर्थ हो भाग गया। दौलतखान उसका छूटा हुआ द्रव्य और सामान उसके पास उदारता पूर्वक भेज दिया।

दिल्लीपतिने अलफखांको नरहरकी जागीर दी। उस पर अधिकार करनेके लिए दौलतखान सदलबल चढ़ाई की। नाहरखाने खूब सेना तैयार की पर आखिर चौहानोंसे न लड़ सका और शरण स्वीकार करके दौलतखांके बड़े पुत्र नाहरखांको अपनी बेटी दी। बादशाहके दरबारमें अलफखांका बहुत सम्मान था। बादशाहने उदयपुर भारवाकी जागीर भी इसे इनायत की। गिर

धरने अलफखांको जागीर न छोडनेके लिये संदेश भेजा और दौलतखांने लिखा कि यदि सीधे तौरसे नहीं निकलोगे, तो मै लड कर भगा दूँगा। तब उसने लिखा कि मेरे पैर पातालमे हैं; ऐसा कौन योद्धा है जो मुझे निकाल सके। दौलतखाने तुरन्त ससैन्य चढ़ाई कर दी अलफखां भाग गया और खीरौरमें न रह सकने पर खोहमे मारा मारा फिरने लगा। दौलतखाने विजय-दुन्दभी बजाते हुए उदयपुरमें प्रवेश किया। उसकी धाक चारो ओर जम गई, खंडेला और रैवासेमे भी खलबली मच गई।

अलफखांको बादशाहने दक्षिणसे बुला कर तीसरी बार मेवातकी फौजदारी दे कर भेजा। दीवानने दौलतखांको साथ ले कर बांकी, खेरी, चोरटी, मैवास आदिको तहस-नहस कर डाला। बहुतसे भोमिए लड मरे। कितनोंने युद्ध बन्द करके अपनी पुत्रियां दी। मेवात फतह करनेके बाद अलफखांको बादशाहने तुरन्त दक्षिण भेज दिया।

कांगड़ा पर चढाई करनेके लिए बादशाहने दीवान अलफखांको दक्षिणसे बुलाया और राजा विक्रमाजीतको साथ दे कर विदा किया। राजा सूरजमल नूरपुरमे था, शाही सेनाके साथ युद्धमे भाग गया। राजा विक्रमाजीत और दीवान अलफखांने नूरपुर पर कब्जा कर लिया और वहीं डेरा जमा दिया। दीवान अलफखां नूरपुरमे रहा और राजा विक्रमाजीतने नगरकोट पर चढाई करनेके लिए कूच किया। जब सूरजमलने सुना कि राजा नगरकोट पर गया तो उसने नूरपुर पर सदलबल चढ़ाई कर उसे वापिस लेनेकी ठानी, परन्तु दीवानजीसे लडनेमे असमर्थ हो कर कुछ भी घात न कर सका।

राजा विक्रमाजीत कांगडे गया। वहां वैरीसे बात कर असफल-सा होकर लौटा और दीवानजीको काहलूर पर चढाई करनेको कहा। तत्काल अलफखांने कूच कर ग्वालियरमे डेरा किया तो कहलूरिया दीवानजीके आनेकी बात सुनते ही पेशकश सहित हाजिर हुआ। अलफखांने उसे विक्रमाजीत राजाके पास भेज दिया। राजा जब बढ-बढ कर बात करने लगा तो बादशाहने लिखा कि कांगडा जैसे हो अधिकारमें लाओ।

शाही सेनाने नगरकोटके चारों तरफ घेरा डाल दिया और गढ तोड कर अधिकार कर लिया। दूसरोंके वहां रहना अस्वीकार करने पर राजा विक्रमाजीत और दीवान अलफखांने सलाह करके दीवानजीको ही वहा रक्खा। बादशाहने अलफखांका मनसब बढा कर सत्कृत किया।

बादशाह जहांगीर स्वयं कांगडा देखनेके लिए आया। दीवान अलफखांसे मिल कर वह अति प्रसन्न हुआ और उसे सम्मानित कर काश्मीरकी ओर चला गया। जब ठटा वालोंने सिर उठाया तो बादशाहने अलफखाको बुला कर ठटा भेजा। उसने तुरंत वहा जा कर ठटा सर कर लिया। इधर दीवानजीके चले जानेसे कांगडेके सब पहाडी एक हो कर मुगल सल्तनतके विरुद्ध हो गए। बादशाहने सादिकखाको ससैन्य भेजा, परन्तु उसके असफल होने पर शाही फरमान द्वारा दीवान अलफखा कांगडे आया। अलफखाके आते ही सब पहाडी उसे जुहार करने आए। सादिकखां दीवानके प्रभावसे बडा चमत्कृत हुआ।

काबुलके भोमियोंके बगावत करने पर शाह जहाँगीर स्वयं लाहौर आया और उसने काबुल भेजनेके लिए काँगडाम अलफखाँको बुलाया। इसी समय लगा जगलकी पुकार आई कि दुदो और बट्ट लागोंने मुल्क ऊजड कर दिया है। बादशाह सोच रहा था कि लखी जगलके भोमियोंको गिरफ्तार कर लाहोर लानेके लिए किसे भेजा जाय, तब आसफखाने दीवान अलफखाको भेजनेकी राय दी। बादशाहने दीवानजीको सिरोपाव दे कर ससैन्य लखी जगलकी ओर विदा किया।

दीवान अलफखा लाहौरसे चल कर कसूर आया। भटी मनसूर डरसे भाग कर बादशाहके पास चला गया। दीवानजीने अलीकी गढ़ी पर आक्रमण किया। परस्पर घमासान युद्ध हुआ। ३०० मनुष्योंको मार कर शेष सबको बन्दी बना लिया। आखिरको जीत कर दीवानजी डोगरोंकी तरफ मुड़े। इनका आगमन सुन कर डोगरे पहलहोमें भाग गए। दीवानजी बट्ट गए, वहाँ धाल भी दीवानजीका सामना करनेमें असमर्थ रहे। फिर दीवानजीने साई डेरा किया, आसपासके भोमिए सब आधीन हो गए। वहाँसे चिहुनी, देपालपुर गए। दुदो पहाड़खाने आ कर भेंट दी और अधीन हो गया। जो भोमिए (जागीरदार) भेंट ले कर आए थे, सबको अलफखाने बादशाह जहाँगीरके पास भेज दिया। बादशाह अत्यंत प्रसन्न हुआ। चिहुनी, देपालपुर, महमदकोट, भटिंडा, पट्टन, आलमपुर, फिरोजपुर, भटनेर, जमालाबाद, धिंग, कमूला, रहमताबाद, रहीमाबाद, आदि लखी जंगलके सरदारोंको सर कर लिया। भटा, समेजा, जोहिए, हुला, बट्ट, नैपाल, सिराटे, डागर, वरल, अरब और धाला, खेड़ा आदि सब पर दीवानने विजय दुन्दभी बजाई।

काँगड़ाके पहाड़ पर सरदारखा शासक था। उसकी मृत्युके बाद पहाड़ी फिर बगावत करने लगे। बादशाहने अलफखाको बुला कर उसे चौथी बार पहाड़ फतह करनेके लिए भेजा। दीवानजीके सदलबल पहुँचने पर पहाड़ी लोग सम्मुख न आ कर पहाड़ोंकी खोहमें छिप रहे। दीवानजीने काहलूर, मइड, सिकंदराको अपने अधीन कर लिया। उधर सिकंदर शाहके सिवा कोई भी तुर्क नहीं गया था। दीवान अलफखाके जाने पर पहाड़ी घर-बार छोड़ कर आगे फिरते थे। उन सबने विचार किया कि दीवानसे हम सब एक हो कर लड़ेंगे। जगतसिंह पठानिया, विसम्भर चन्द्याल, भीनका चन्द्रभान, जसवाल चन्द्, भोदत, अमूल, बूला, सूरजचन्द, ठकर कल्याण, श्यामचंद, जगत माल, भनिया, राय कपूर आदिक सारे कटकने एकत्र हो कर नगरोटेमें डेरा किया। श्यामखानी और पहाड़ियोंमें परस्पर खूब घमासान युद्ध हुआ। पहले दिन जगतसिंह रणक्षेत्रसे भाग गया। दीवान अलफखाकी विजय हुई। दूसरे दिन फिर पहाड़ी सेना एकत्र हो रणक्षेत्रमें आई। दीवानजीने उसे हरा दिया, इसी प्रकार तीसरे दिन भी पहाड़ी हारे। चौथे दिन और भी बहुतसे भोमिए पहाड़ी दलमें शामिल हो कर लड़े परन्तु उनकी हार हुई। पाँचवें दिन और छठे दिन भी अलफखाकी जीत और पहाड़ियोंकी हार हुई। दीवानने सादकखांने अलफखांको पत्र लिखा कि या तो तुम आ कर मिलो या सेना भेजो। अलफखांने कहा कि समुद्रके उमड़ा हुआ है। युद्धसे मैं क्यों लौट कर अपने कुलमें कलंक लगाऊँ? मरना एक दिन है ही। उसने अपने भाई दलको रवाना कर सलतनतशाही सेना सारी पृथक सादकखांके पास भेज दी।

जब जगतसिंहने सुना कि अलफखांके पास थोड़ी सी सेना है, तो वह निदान बनाता हुआ

सदल रणक्षेत्रमें आ पहुंचा। दीवानजीने भी अपने दलकी तीन अनी बनाई। एक ओर रूपचन्द दूसरी ओर वासो उदयाल और मध्यमें दीवान स्वयं रहा। पहाड़ियोंने इन्हें चारो तरफसे घेर लिया। घमासान युद्ध हुआ। रूपचंद और वासी हार कर भाग खड़े हुए, अलफखां सत्य और साहसके बल पर पैर रोप कर युद्ध करने लगा।* दीवानजीके बड़े-बड़े वीर योद्धा इस लड़ाईमें काम आए। एदल और कमाल क्यामखानी और जमाल, मुजाहद, भीखन, बहलोल, लाडू, पिरोजखां, दोला, अबू इस कंदर, मारूफ, सरीफ, ऊदा, परता, चतुरभुज, जगा, मनोहरदास, कौजू, हरदास, तोडराज, मोहत आदिने हजारों पहाडी वीरोंको धराशायी करके अंतमें वीरगति प्राप्त की। स्वयं दीवानजी और उनके चतुर नामक हाथीने अपने चौहान वंशका पानी बड़ी सफलतासे दिखाया। पहाड़ी लोग तंग आ कर भागने लगे। दीवानने उन्हे खदेड़ते हुए पीछा करके १३०० मनुष्योंको मार डाला। जब पहाडियोंने देखा कि भागनेसे छुटकारा नहीं होगा, तो सब एकत्र हो कर युद्ध करने लगे। घमासान युद्ध करते हुए दीवान अलफखा शहीद हो गए।

वि० सं. १६८६, हि० सन् १०३५ रोजा तारीखके दिन दीवान अलफखां वीरगतिको प्राप्त हुए। दीवानजीकी दरगाह बडी चमत्कारी है, बहुतसी करामातें प्रकट हैं। निर्धनको धन और निर्बुद्धिको बुद्धि व मार्गभ्रष्टको मार्ग देनेवाले हैं। इस प्रकार अलफखा महा पीर प्रगटे।

कवि जानने वि० स. १६९१में पुराने कवित्तके अनुसार इस ग्रन्थकी रचना की। अब दीवान दौलतखांका विवरण लिखते हैं–

दीवान अलफखांके पीर हो जाने पर उसका पुत्र दौलतखां उत्तराधिकारी हुआ। बादशाह जहांगीरने उसे मनसब दे कर कांगडेका गढ सुपुर्द किया। वह भी कांगडेमें रह कर पहाड़ी सरदारों द्वारा सेवा कराता हुआ शासन करने लगा। जहांगीरकी मृत्यु हो जाने पर सब थाने उठ गये और अराजकता छा गई, किंतु दीवान दौलतखां अपने स्थान पर अविचल रहा। पहाडियोंने मिल कर गढके चौतरफ घेरा डाल दिया, तब दीवानके दलने पहाडियोंको मार भगाया और नगरकोटकी रक्षा की।

शाहज़हांने दिल्लीके तख्त पर बैठते ही दौलतखाको मनसब बढा कर सम्मानित किया। दीवानने १४ वर्ष कांगडेमें रह कर शासन किया; फिर काबुल और पेशावरमें जा कर रहा। सीमाके सब शासक दीवानसे मिल कर चलते थे। दौलतखांके तीन पुत्र थे—ताहरखां, मीरखां, और असदखां।

दौलतखांका पुत्र ताहरखां बादशाहसे मिलनेके लिए अकबराबाद गया। बादशाहने प्रसन्नतासे उसे मनसब दे कर बडा प्यार किया। जब शाही दरबारमे गजसिंहके पुत्र राठौर अमरसिंहने सुलाबतखांको मारा तो बडा घमासान मच गया। बादशाहने हुक्म किया कि राठौड़ोंको मारो,

*कवि जानने इस युद्धका वर्णन बडे विस्तारके साथ किया है, और दीवान अलफखाकी वीरताकी बडी प्रशसा की है।

जिससे भविष्यमें कोई दरबारमें बेअदबी न करे। अमरसिंहके जो सेवक आगरेमें थे वे सबके सब लड़ मरे, कोई भी न भागा। रावजीका कुंवर नागौरमें था। बहुतसे जोधावत पासमें थे अत उनके त्रासके कारण नागौर लेनेकी किसीने भी स्वीकृति नहीं दी। आखिर वीर ताहरखाने नागौरके लिए बीड़ा उठाया। बादशाहने नागौरका पट्टा लिख कर दौलतखाको काबुलसे बुलानेके लिए फरमान भेजा और मनसब भी ड्यौढ़ा कर दिया।

एक दिन बादशाहने ताहरखांसे[1] पूछा—काबुलसे अपने पिताके आने पर नागौर जाओगे या पहले ही जा कर राठौड़ोंको निकालोगे? ताहरखाने कहा "आपका फरमान मस्तक पर है। मैं अभी जाकर नागौर दखल करता हूँ।" बादशाहने नागौर दे कर उसे बड़ा उमराव बनाया और सिरोपाव दे विदा किया। ताहरखाके पुत्र सरदारखाको बादशाहने मनसब दे कर अपने पास रक्खा। ताहरखाने स्वदेश लौट कर बड़ी भारी सेनाके साथ नागौरकी ओर प्रयाण किया।

ताहरखाके नागौर आने पर जोधाने गढ खाली कर दिया। ताहरखाने उस पर कब्जा कर लिया और अमरसिंहके स्थान पर जैगदम रहने लगा। चार मासके बाद दीवान दौलतखां भी काबुलसे आ पहुंचा और पिता पुत्र दोनों आनन्दपूर्वक नागौरमें रहने लगे। ७ = महीनेके अनन्तर बादशाहने फरमान भेजा कि फरमान पाते ही तुम शीघ्रतासे पेशावर जाओ। शाहजादा वहांसे बलख लेनेके लिए जायेगा, तुम भी उसके साथ जा कर फतह करो। शाही फरमान पाते ही दीवानजीने प्रयाण किया और ताहरखा नागौरमें ही रहा। ८ मास नागौरमें सुख पूर्वक उसने बिताए। जब ताहरखाने फौजके बलख जानेकी बात सुनी तो उसने बादशाहके पास लाहौर अरज भेजी कि हुक्म हो तो मैं हाजिर होऊं। बादशाहने उसे बलख भेज दिया। छोटे शाहजादेने कटकके साथ बलखको फतह कर लिया। दोनों शाहजादोंने दक्षिणी रुस्तमखा और दीवान दौलतखाको हदपह स्थानमें भेज दिया। शाहजादेके पास बलखमें ताहरखा था। आयु पूर्ण हो जानेसे युवावस्थामें ही अचानक उसकी मृत्यु हो गई। नगरमें ताबूत आने पर हाहाकार मच गया[2]। पिता दौलतखाको बड़ा दुःख हुआ। बादशाहने सुन कर दुःख प्रकट किया और सलावतखाको बुला कर दिलासा दिया।

बलखसे शाही सेना लौट कर काबुल आई तो बादशाहने कंधार विजय करनेकी आज्ञा दी, और कुमुक भेजी। इधर शाहजहांकी सेना और उधर शाह अब्बासकी सेना परस्पर लड़ने लगी। जब शाही सेनाके पैर उखड़ते देखे तो रुस्तमखा दक्षिणी और दीवान दौलतखा रणक्षेत्रमें उतर पड़े और उन्होंने शत्रुसेनाको परास्त कर दिया।

जब शीतकालमें बरफ़ जमने लगी तो शाही सेना कंधार छोड़ कर काबुल आ गई। जब

---

१ राज्यकाल सं० १६८३ से १७१० इनके नामसे रचित 'अलिफखानीनोदसारसंग्रह' नामक विशाल वैद्यक ग्रन्थकी अपूर्ण प्रति अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेरमें उपलब्ध है। इसकी पूरी प्रति अन्वेषणीय है। आपका चित्र फतहपुर परिचयमें प्रकाशित है।

२ कविने बड़े ही करुण शब्दोंमें विलाप किया है।

मौसम ठीक हुआ तो फिर सेना कंधार लेने गई पर उसके हाथ न आने पर वापिस सेनाको काबुल लौटना पड़ा। तीसरी बार बादशाहने फिर सेनाको भेजा। कंधारमें घमासान युद्ध होने लगा। दौलतखां दीवान भी चढ़ाईके ओरे करता था। इसी बीच उसे ज्वर हो गया और कुछ दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई। वि० सं० १७१०, हिजरीमें दीवानकी मृत्यु हुई। बादशाहने दिलासा दे कर ताहरखांको सिरोपाव दे कर स्वदेश विदा किया। सरदारखां अपने वतन लौट कर सुखपूर्वक राज्य करने लगा। सरदारखां और पूरनखां चिरायु हों।

प्रस्तुत रासा यहीं समाप्त होता है। पं. झाबरमलजी शर्माके लेखानुसार, 'शजनुल मुसलमीन' और 'तारीख खानजहानी' ग्रन्थ इसी रासाके अनुसार बने हैं और उपर्युक्त सरदारखांके (१७१०-३७) बाद दीनदारखां (सं. १७३७ से ६०), सरदारखां द्वि. (१७६०-८६) कामयाबखां[1] (१७८६-८८) फतहपुरके नवाब हुए। अंतिम सरदारखाने अपना विरुद 'सवाई क्यामखां' रखा और यही अंतिम नवाब हुआ। सीकरके सामन्त राव शिवसिंह सेखावतने उसे पराजित किया और सं. १७८८ में स्वयं फतहपुरका स्वामी बना। फतहपुर परिचयसे सरदारखांके परवर्तीय नवाबोंका वृतांत परिशिष्टमें दिया गया है।



क्यामखां रासाकी प्रतिका परिचय।

हमें प्राप्त प्रतिके अनुसार ग्रन्थका नाम "रासा श्री दीवान अलिफखांका" है। पुरोहित हरिनारायणजी, पं. झाबरमलजी व फतहपुर परिचय आदिके लेखकोंने इसका नाम "कायमरासा" लिखा है। इसका प्रधान कारण यही प्रतीत होता है कि इसमे क्यामखानी नवाबोंका इतिहास है केवल अलिफखांका ही नहीं। हमे यह प्रति कुम्हणूंके जैन उपासरेसे मिली थी। इसकी अन्य प्रति स्व. पुरोहितजीके पास होनेका जाननेमें आया तब पुरोहितजीसे पूछा गया तो आपने उत्तर दिया कि कोई सज्जन मेरे यहांसे ले गये थे, उन्होने वापिस लौटानेकी कृपा नहीं की। अतः इसका सम्पादन हमारे संग्रहकी एक मात्र प्रतिसे ही किया गया है। प्रति बहुत शुद्ध एवं रचना-समयके आसपासकी ही लिखित है। अतः हमे कोई दिक्कत नहीं हुई।

प्राप्त प्रति पुस्तकाकारके ७० पत्रोंमें है। साइज ४॥। × ८॥। है। प्रत्येक पृष्ठमें १६ से १८ पँक्तियां व प्रति पंक्ति अक्षर १८के लगभग हैं। गणनासे ग्रन्थ परिमाण १३५० श्लोकका होता है।

यद्यपि इस प्रतिमें लेखन-सम्वत् नहीं दिया गया है, पर हमारे संग्रहकी दीवान अलफखांकी पैडी और उसके लेखक एक ही हैं। अतः उसकी पुष्पिका नीचे दे दी जाती है—

---

१ फतहपुर—परिचयमे सरदारखाकी विद्यमानतामें कामयाबखाके २ वर्ष राज्य करनेका लिखा है पर यह कुचामण चला गया था। वहीं मरा। अब भी वहा इसके वंशज विद्यमान हैं। झाबरमलजीने बीचमे एक काम और दिया है पर ठीक नहीं है।

"सवत् १७१६ मिति कातिक वदी २१ शनिवार ता २३ मा मुहरम सन् १०७० लिखाइत पठनार्थं फतैहचद् लिखत भीखा"

झुंझणूंसे हमें तीन ग्रन्थोंकी प्रतिया मिली थी उनमेंसे बुद्धिसागर ग्रन्थ भी इसीका लिखित है–

"सम्वत १७१६ मिती आसोज सुदी १२ वार सोमवार ता ११ मास मुहर्रम स १०७० पौथी लिखाइत पठनार्थ फतहचन्द लिखत मीश्रदेवै । श्रीमालशकगोत्र सभवत । श्री

हिन्दुस्तानी एकेडेमी सग्रह वाली प्रति भी फतैहचन्दकी है। सभवत दोनों फतेहचन्द एक हों। फतहचन्दको जान कविकी रचनाओंसे छोटी उम्रमे ही प्रेम रहा प्रतीत होता है। एकेडेमीकी प्रतिसे कामलता ग्रन्थका पुष्पिकामेल नीचे दिया जाता है–

"सम्वत् १७७८ मिती कातका सुदी ६ त्रिमपतिवार हमतरात फतेहचन्द ताराचन्दका बीद वानिया पौथी फतेहचन्दके घरकी । श्री। श्री ।

क्यामखा रासाका महत्त्व

क्यामखा रासा अनेक दृष्टियोंसे महत्त्वपूर्ण है। साहित्यकी दृष्टिसे यद्यपि उसकी तुलना पृथ्वीराज रासा, सदेश रासा आदिसे नहीं की जा सकती, तथापि यह तो मानना ही पड़ता है कि उसकी शैलामें एक विशेष प्रवाह है। प्रेमपूर्ण आख्यायिकाओं और प्राकृतिक वर्णनोंसे जान भी इसे सुसज्जित कर सकता था, वह वीर रसका ही नहीं शृगार रसका भी कवि था किन्तु उसने सरल ओजस्विनी भाषामें ही अपने वशके इतिहासको प्रस्तुत करना उचित समझा, उसने यथाशक्ति मितभाषिता और सत्यका आश्रय लिया।[1] जानने जहा तहा सुन्दर पद्य भी लिखे हैं। जिनमें कुछ यहां प्रस्तुत किये जाते हैं–

याकै याकैही यने, देखहु जियहि विचार ।
जो याकी करवार है, तो याको परवार ॥
याकैसौं सूधो मिले, तो नाहिन ठहराइ ।
ज्यों कमान कवि जान कहि, बानहिं दत चलाइ ॥

* * * * *

कहा भयो कवि जान कहि, बैरी यकीय कुयात ।
कयके गिर गिर कहात हैं, पै गिर ना गिर जात ॥

* * * * *

१ कहत जान यथ परनिहौं, अलिफखानकी नाव ।
पिता जान यदि न कहौं, भाखौं साची बात ॥

सूर वीर अरु मीन जल, इनको येक सुभाइ ।
रपि रपि दोऊ मरै, जो पानी प्याद्दे जाइ ॥
रहे न केहूं हीन जल, सहे न दोऊ गार ।
सूर वीर चुनि मीनकों, पानी हीसौं प्यार ॥
येक बात कवि जान कहि, वढ्यौ मीनतें सूर ।
मीन मरे पानी घटे, सूर मरे जल पूर ॥

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

ताहरखां कीनौ गवन, स्रवन सुने ये बैन ।
वस्त्र भगौंहे ह्वै गये, रत रोये जुग नैन ॥
पूनोको पहुंच्यौ नहीं, भग कमोदनि मंद ।
यह वपरीत लागे बुरी, गयो सप्लो चंद ॥
थारीके मुक्ता भये, ठरे ठरे ही जाहि ।
सुरतर ताहरखांन विनु, केहूं न दग ठहराइ ॥
हिय कमल नांहिन खुलत, मुर्भित पल पल माहि ।
छवि रवि ताहरखांन जू, डिष्ट परत है नांहि ॥
कहु कैसे कै ऊपजे, नैन चकोर अनंद ।
कहूं डिष्ट परै नहीं, ताहरखां मुखचन्द ॥
मीर करि ताहरखांन जू, हितवन हिय हित दीन ।
नैन वहन हिरदै दहन, मनहि गहन तन छीन ॥
धर्मराज कैसे कहूँ, कौन धर्म यहु आहि ।
काटत ऐसो कलपतर, कृपा न उपजी काहि ॥

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

सूरज नाव कहाहि है, उलटौ सबै सुभाइ ।
छप्यौ रहत है स्योसकूं, निसको निकसत आई ॥

दिल्लीका यह वर्णन भी पठनीय है —

अनंत भताहरि भखि गइ, नैकु न आई लाज ।
येक मरै दूजै धरै, यहै दिल्लीको काज ॥
जात गोत पूछत नहीं, जोई पकरत पान ।
ताहिसौं हित मिल चलें, पै भखि जार निदान ॥

एक साहित्यिक व्यक्ति द्वारा लिखे जानेके कारण रासामें सहृदयजनके लिए आनन्दकी इस भांति पर्याप्त सामग्री है। किन्तु वास्तवमें उसका महत्व साहित्यिक नहीं, ऐतिहासिक है। साहित्यकी दृष्टिसे अनेक अन्य कृतियाँ कायमरासासे बढ़ी चढ़ी हैं, किन्तु अपने निजी क्षेत्रमें यही प्रमुख वस्तु है। कायमखानियोंका इतना अच्छा और इतना विश्वसनीय वर्णन हमें अन्यत्र नहीं मिलता, और वह भी इतने रोचक ढंगसे कि पाठकका मन कभी नहीं ऊबता, यही इच्छा बनी रहती है कि वह और पढ़े। वंशके गर्वसे यत्र तत्र कुछ बातें शायद बिना जाने ही कुछ बढ़ा कर लिखी हों। किन्तु जान कर तो शायद उसने ऐसा न किया होगा। सच्चे भारतीयकी तरह वह कभी यह भूल नहीं पाता कि यह संसार क्षणभंगुर है। ओजस्वीसे ओजस्वी वर्णनके पश्चात् जब वह लिख बैठता है—

जो लौं दौलतखा जिये, साके किये अपार।
अंत न कोउ थिर रहै, या झूठे संसार॥

तो हमें प्रतीत होता है कि वह कोई दरबारी इतिहास लेखक नहीं है, न अबुलफजल है और न बाबर। सत्य इसे प्रिय है, वह व्यर्थकी अतिशयोक्तिमें विश्वास नहीं रखता।

पुस्तकका ऐतिहासिक सार पूर्व दिया जा चुका है। पुस्तकके अन्तमें दी हुई टिप्पणियों द्वारा हमने रासाके ऐतिहासिक मूल्यांकनका भी प्रयत्न किया है। अतः सामान्यरूपसे ही रासाके ऐतिहासिक महत्वका हम यहां निर्देश कर रहे हैं।

क्याम‍रासा या क्यामरासा

यह पुस्तक आजकल 'कायमरासा' के नामसे अधिकतर विद्वानोंको ज्ञात है। किन्तु इसके मूल नायकका वास्तविक नाम 'क्यामखां' होनेके कारण 'क्यामरासा' कायमरासासे कहीं अधिक शुद्ध शब्द है। यह शब्द बिगड़ कर 'क्यामरासा' बन गया है। इसे शुद्ध कर कायमरासाका रूप देना ठीक नहीं है। 'क्यामखां' के वंशजोंको भी कायमखानी न कह कर 'क्यामखानी' या 'क्यामखानी' कहना अधिक ठीक होगा। हमने कायमरासाके स्थान 'क्यामखांरासा' लिखना उचित समझा है।

पुस्तकका रचनाकाल संवत् १६९१ अर्थात् सन् १६२४ है। उस समय बादशाह शाह जहां दिल्लीके सिंहासन पर उपस्थित था। मुगल साम्राज्य अपने वैभवके शिखिर पर पहुँच कर अधोमुख होनेकी तय्यारी कर रहा था। बलख और कन्धारकी पराजय, जिनका वर्णन रासामें वर्तमान है, उसके प्रथम लक्षण थे। दक्षिणमें मलिक अम्बरके विरुद्ध युद्ध करते हुए जिन कठिनाईयोंका सामना करना पड़ा था, उनका भी इसमें अच्छा दिग्दर्शन है। रचयिताके पिता अलिफखां, भाई दौलतखां, और भतीजे ताहरखांने इनमें भाग लिया था। अतः इनका वर्णन ठीक होना स्वाभाविक ही था।

रचयिताके पिता अलिफखांने बडी आयु प्राप्त की थी, उसने अकबरसे ले कर अन्त तकके अनेक युद्धोंमे भी भाग लिया था। इसलिये उसके जीवनसे मुगल कालीन भारतका हम अच्छी तरह ज्ञान प्राप्त करते हैं। बादशाह अकबरने उसके नाम फतहपुरका पट्टा लिख दिया; किन्तु उसका अधिकार दिलानेके लिये शिकदार शेरखांको श्यामदास कछवाहेके विरुद्ध बलका प्रयोग करना पडा।

अकबरके अन्तिम और जहांगीरके समग्र समयमें जितने उपद्रव हुए उनकी अलिफखांके जीवनसे हम खासी सूची तय्यार कर सकते हैं। सलीमकी मेवाड पर चढाईके समय अलिफखां सादडीका थानेदार नियुक्त हुआ। जब दलपतने जहांगीरके विरद्ध विद्रोह किया तो शेख कबीरके साथ अलिफखां भी दलपतके विरुद्ध भेजा गया। तुजुके जहांगीरीमें इस विद्रोहका अत्यन्त संक्षिप्त वर्णन है। उसके विशेष वर्णनके लिये हम आपके आभारी रहेंगे। स्वयं दिल्लीके पासके प्रदेश भी अनेक बार उपद्रव करते रहते थे। अलिफखांने जाटुओंको हरा कर भिवानी फतह की। मेवातमे तो उपद्रवोंको शान्त करनेके लिये उसे अनेक बार नियुक्त होना पडा। पाटौंधि और रसूलपुरको उसके पुत्र दौलतखाने सर किया। दक्षिणमें अनेक सेनापतियोंकी अधीनतामे अलिफखांको मलिक अम्बरकी सेनाओंका सामना करना पडा। चार बार अलिफखांको कांगडे भेजा गया, और वहीं सन् १४२६में वह विद्रोही पहाडियोंके विरुद्ध लडता हुआ मारा गया।

अलिफखांसे पूर्वका वर्णन किसी पुराने कवित्त पर आश्रित है। उसका अंतिम भाग जानके समयके निकट होनेके कारण स्वभावतः प्रायः ठीक है। किन्तु प्रारम्भिक भागमे अनेक भूले हैं, और संभवतः इसका भी यही कारण है कि यह पुराना कवित्त भी कायमखांके मरणके अनेक वर्षों बाद लिखा गया था। नामसाम्यके कारण जो भूलें हुई हैं उनका विशेष विवरण टिप्पणियोंमें दिया गया है, पाठक वहीं देखें। चौहानोंकी उत्पत्तिकी कथा रोचक है। उसकी पृथ्वीराजरासा आदिकी कथासे तुलना ऐतिहासिक दृष्टिसे लाभप्रद सिद्ध हो सकती है। वीर चौहान जाति वत्सगोत्रीय थी। जान वत्स ऋषिसे ही चौहानोंकी उत्पत्ति मानते हैं, चांद, सूरज आदिसे उन्हे मिलानेका जानने प्रयत्न नहीं किया।

तुगलक, सय्यद, लोदी, सूर और मुगल वंशो पर रासामे पर्याप्त सामग्री प्राप्त होती है, जिसका ऐतिहासिक सावधानी पूर्वक प्रयोग कर सकते हैं। जोधपुर, बीकानेर आदि राज्योंके इतिहास पर भी जानकी लेखनी कुछ नवीन प्रकाश डालती है। अतः इस ऐतिहासिक रासाको प्रकाशित कर राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर प्रशस्य कार्य कर रहा है। हम व्यक्तिगत रूपसे उसके आभारी हैं; उसने हिन्दी भाषाकी एक कविकी रचना पाठकोंके संमुख प्रस्तुत करनेका हमें सुअवसर प्रदान किया है।

दशरथ शर्मा

—०—

परिशिष्ट नं० १

दीवान दौलतखाँ रचित हिन्दी वैद्यक ग्रन्थ

दीवान दौलतखाँ[1] द्वारा रचित हिन्दी वैद्यक ग्रन्थका नाम है 'दउलति विनोदसार'। इसकी एक अपूर्ण गुटकाकार प्रति बीकानेरकी अनूप संस्कृत लाइब्रेरीमें विद्यमान है। प्रस्तुत प्रतिमें अन्य कई वैद्यक ग्रन्थोंका भी संग्रह है, केवल बीचके पृ० २६७ से पृ० २९७ तकमें यह ग्रन्थ लिखा हुआ है। पूर्ण प्रतिकी अनुपलब्धिके कारण इसमें ग्रन्थका कितना अंश कम रह गया है व अन्तमें ग्रन्थके रचनाकाल आदिका उल्लेख था या नहीं, यह कहा नहीं जा सकता। उपलब्ध पत्रोंमें करीब १५०० पद्य हैं, जिनमें हिन्दीके अतिरिक्त संस्कृतके भी सैकड़ों श्लोक हैं। संभवतः वे किसी अन्य ग्रन्थसे उद्धृत किये गये होंगे। आश्चर्य नहीं कि वे ग्रन्थकारके बनाये हुए भी हों, क्योंकि उनमें किसी ग्रन्थसे उद्धृत किये जानेका उल्लेख देखनेमें नहीं आया।

जैसा कि राजा महाराजाओंके नामसे रचित बहुतसे ग्रन्थोंके सम्बन्धमें देखनेमें आता है, संभव है कि यह ग्रन्थ भी स्वयं दौलतखाँका रचा न हो पर उसके आश्रित किसी वैद्यविद्याविशारद कविका रचा हुआ हो। पर प्राप्त अंशमें कहीं ऐसा नाम निर्देश न मिलनेसे दौलतखाँ द्वारा रचित मान लेना ही ठीक जान पड़ता है। ग्रन्थका प्रारंभिक अंश व अधिकारोंके नामादि नीचे दिये जा रहे हैं, जिससे ग्रन्थका महत्त्व भली भाँति विदित हो जायगा—

दउलतिविनोदसारसंग्रह

श्रीमत सच्चिदानंद, चिद्रूप परमेश्वरम्।
निरंजन निराकारं, तं किंचित्प्रणमाम्यहम् ॥१॥
चरकादि सद्ग्रन्थे वाग्भटे वाग्भटे वरे।
शास्त्र विरच्यते स्पष्टं, इह (ही) दृष्ट्वा शास्त्राण्यनेकशः ॥२॥
"दउलतिविनोदसारसंग्रह" नाम सद्ग्रन्थ परमाद्भुतम्।
यथा स पाराशरे वै, सम्मत सुमत कवीन्द्राणां ॥३॥
श्रीमद्गाढ महम्मदिनिमिर श्रीणावभा सदन।
श्रीमता निरत्नानमूर्धन्दिर मध्यामुरालन्दरा॥
गम्भीरोदय स्वतुम दिवाकरे आदित्यभा भास्करे।
श्रीमद्दउलति खान नाम बहुधाय सो सुधीशाधिवे ॥४॥

---

[1] इनका परिचय पृथक् ग्रन्थमें प्रकाशित है।

धनंतरि मुख्य वैद्य बहु, सिद्ध चिकित्साकार ।
तन सुद्धिइं मुणि योग पथ, लहइ संसारह पार ॥५॥
ताथइं चिकिछक योगविद, पछइं चिकित्सा सत्थ ।
मुक्ति होई परमवि निपुण, रहां चाहइ तउ ग्रत्थ ॥६॥
धर्म अर्थ ग्ररु काम कउ, साधन एह शरीर ।
तसु निरोगता कारणई, उद्यम करइ सुधीर ॥७॥
धुरि निदांन विग्यान तसु, ओपधके गुण दोप ।
तास सुद्ध वैद्यक हुवइ, जानु करइ जु ग्रमोस ॥१२॥
देश काल वय वन्हि सम, ओपध प्रकृति विचार ।
देह सत्व बल व्याधि फुनि, घइ ओपध गुनकारि ॥१३॥

इति श्री दउलति विनोदसार संग्रहे श्री दउलतिखांन नृपति वर विनिर्मित वैद्यगुणाधिकारः ।
अधिकारोंके अंतमें –

ज्ञान परम इहु जोगी जानइ, कइ किछु परम वैद्य बखानइ ।
ग्रन्थ विसेषि जिहां कछु पाया, भूपति दउलतिखांन दिखाया ॥१॥

× × ×

जामाता मधुरइ सीतलेहि, तिउं पित्तह सेवउ मन अनेहि ।
इहुं काल ज्ञान जानहुं सुजांन, भास्यउ नृप श्री दउलतिखांन ॥३॥

× × ×

षोडश ज्वर लक्षण सहित, ओषध कवाथ बखांन ।
कह्या वागड देशाधिपति नृप श्री दउलतिखांन ॥१७॥

इति श्री वागड देशाधिपति श्री आलिफखांन नंदन श्री दउलतिखांन विरचित श्री दउलति विनोद सार संग्रह षोडश ज्वराधिकारः ।

प्राप्त ४९ अधिकारोंके नाम–

वैद्यगुणाधिकार, परमज्ञानाधिकार, कालज्ञान, मूत्र परीक्षा, नाड़ी परीक्षा, ज्वर चिकित्सा, अतिसार, संग्रहणी, हर्प, दुनामोनिरूपण, मन्दाग्नि, विसूति, अजीर्ण, कृमिनिदान, पांडु, राजयक्ष्मा, काश, छीकनिदान, स्वरभेद, आरोचक, छर्दि, तृष्णा, दाह, उन्माद, वातनिदान, आमवात, शूलनिदान, गुल्म, हृद्रोग, मूत्रकृच्छ, मूत्रघात, अश्मीरी, प्रमेह भेद, उदरामय प्लीहा, शोथ, अंड वृद्धि, गंडमाल, श्लीपद जयानां, विस्फोट, भगंदर, उपदंश, सूक कष्ट, शीत पित्त, आम्लपित्त, बिसर्पि तथा भावाँ लूता । (इसके बादका अंश प्राप्त नहीं है) ।

जैसा कि ऊपर लिखा गया है, प्रस्तुत ग्रन्थकी केवल एक ही अपूर्ण प्रति प्राप्त हुई है ।

फतेहपुरादिमें खोजने पर सभव है इसकी अन्य पूर्ण प्रति भी उपलब्ध हो जाय। आशा है, आयुर्वेद एव हिन्दी साहित्यके प्रेमी सज्जन अन्वेषण कर इस ग्रन्थके सम्बन्धमें विशेष प्रकाश डालनेकी कृपा करेंगे।

हिन्दी भाषा व आयुर्वेद चिकित्सा पद्धतिका प्रचार दिनों दिन बढ रहा है, पर खेद है कि अभी हिन्दी भाषामें इस विषयके ग्रन्थ बहुत ही कम प्रकाशित हुए हैं। यह हिन्दी साहित्यके लिए उचित नहीं है। इन ग्रन्थोंकी बिक्री भी अच्छी हो सकता है, अत साहित्य सम्मेलन, नागरी प्रचारणी सभा आदि सस्थाओं व ग्रन्थ प्रकाशकोंको वैद्यक सम्बन्धी ग्रन्थोंके प्रकाशनकी ओर शीघ्र ध्यान देना चाहिए।

क्यामखानी दीवानोंके समयके शिलालेख

सतकवि सुन्दरदासके स्थान पर स १६८८ का व ६ बुधवारका लेख लगा हुआ है जिसका फोटू सुन्दर ग्रन्थावलीके जीवन चरित्र पृ १२८ में छपा है। दौलतखाँ व ताहिरखाँका उल्लेख इस प्रकार है –

दीली पति जहाँ सुत, राजत शाही जहान।
दौलतखाँ नृप फतेहपुर, ता नन्दन ताहिरखान।

ताहरखाँको, राठौर अमरसिहके शाही दरबारमें सलाबतखाँको मार कर स्वय मर जाने पर सम्राटने नागौरका परगना दे दिया था। वहाँ पहुँच कर ताहरखाँने राठौरोंसे नागौर छीन लिया। गढके पास मसजिद बनाई गई थी। जिसके हिजरी सन् १०७६ के लेखमें शाहजहाँ एव ताहरखाँ नाम खुदा है। (सुन्दर ग्रन्थावली, जीवन चरित्र पृष्ठ ३७)

फतहपुर किलेका जीर्णोद्धार व आश्चर्यजनक बावडीका निर्माण दौलतखाँने स १६६२ १६७१ में किया ऐसा उल्लेख फतहपुर परिचयमें किया है। सभवत इसके सूचित शिलालेख वहाँ हों।

परिशिष्ट नं० २

"मुहणोत नैणसीरी ख्यात" मूलसे क्यामखानीकी उत्पत्ति यहां उद्धृतकी जाती है –

"अथ क्यामखांन्यारी उतपति अर फतैपुर झूंझणू वसायो।

देरेरा वासी चहुवांण, तिणां ऊपर हसारसो फोजदार सैद नासर दोडियो। तद दरेरो मारियो अर लोक सरब भागो। पछै बालक २ फोजदाररै हाथ गुदराया। ताहरां फोजदार दीठा। हुकम कियो "जु हाथीरै महावतनू सांपो अर दूध पावो मोटा करो।" ताहरां फौजदार सैद नासर दोनू बालकांनू आपरी बीबीनू सोंपिया अर कह्यो —"जु हम दो लाये हैं सो इनको तुम पालो" ताहरां दोनू बालकांनू बीबी पालिया। लडका बरस १० तथा १२ रा हुआ ताहरां

हांसीरै सेखनूं सांपिया। तद कितरेक दिन सैद नासर फौत हुवो। तद सैद नासररा बेटा अर औ दोनूं पुतरेला पातसाह लोदी पठांण नाम बहलोल तैरी नजर गुदरगया। ताहरां सैद नासररा बेटा पातसाहरी नजर उसड़ा न आया अर औ चहुवांण नजर आयो। तैरो नाम क्यामखांन हुतो सु इयेनूं सैद नासररो मुनसब हुतो सु दियो अर जाटरो नांम जैनूं हुतो तैरा जैननदोत कहाया। सो जूंफणूं फतैपुर मांहे केहीक रहै छै। अर पातसाह थोडो बीजानूं पण दियो। अर क्यामखांनीनूं हंसाररी फोजदारी दीवी। तद इयें दीठो "जु कोइक रहणनूं ठिकांणो कीजै तो भलो" ताहरां जूंफणूं आछी दीठी। ताहरां चोधरीनूं तेडियो। ताहरां कह्यो—"चोधरी! तूं कहै तो म्हे ठिकांणो रहणनूं करां" ताहरां चोधरी बोलियो—"जु भलो ठोड़ वणावो। ऊ पण म्हारो नांम रहै त्यूं करीज्यौ" ताहरां कह्यो 'भलो'। ताहरां चोधरीरो नाम जूंफो हुतो सु तिकेरै नांम जूंफणूं वसायौ। अनै जूंफणूं मांहिली ही ज धरती काढ नै फतैपुर वसायौ। नै औ भोमिया थका रहै। पछै कितरैहेके दिन अकबर पातसाह मांटण कूपावतनूं जूंफणूं जागीरमें दी हुती। अर फतैपुर इण जूंफणूं मांहिली ही ज हुती सु फतैपुर गोपालदास सूजावत कछवाहैनूं दी हुती। सु भोमिया थका रैहता। मुकातो देता। सु पछै जहांगीर पातसाहरा चाकर हुवा। सु पैंहला तो समसखां जूंफणूं चाकर रह्यौ। पछै अलमफखां रह्यौ।

दूहो—

पैहली तो हिंदु हुता, पाछै हुआ तुरक्क।
वा पाछै गोले हुवै, तातैं वडपण तुक्क ॥१॥
धाये कांम न आवही, क्यांमखांनि गंदेह।
बंदी आद-जुगादके, सैद नासर हंदेह ॥२॥

इति क्यांमखान्यांरी वात संपूर्ण ॥"

———०———

परिशिष्ट नं० ३

क्यामखांरासामें सरदारखांके राज्याधिकार प्राप्ति तकका उल्लेख है, अतः परवर्ती इतिवृत्तकी पूर्ति फतहपुर परिचयसे की जाती है—

१—नवाब सरदारखां (१)

(संवत १७१० से १७३७ तक तदनुसार सन् १६५३ से १६८० तक)

नवाब दौलतखां और ताहिरखांके संवत्-१७१०में प्राणान्त हो जानेके बाद, ताहिरखांके पुत्र सरदारखांको शासनाधिकार मिला। अपने नामसे उसने "सरदारपुरा" गांव आबाद किया। वह शासनस्थ प्रजाकी और अपने राज्यकी रक्षा करनेमें हर समय लगा रहता था।



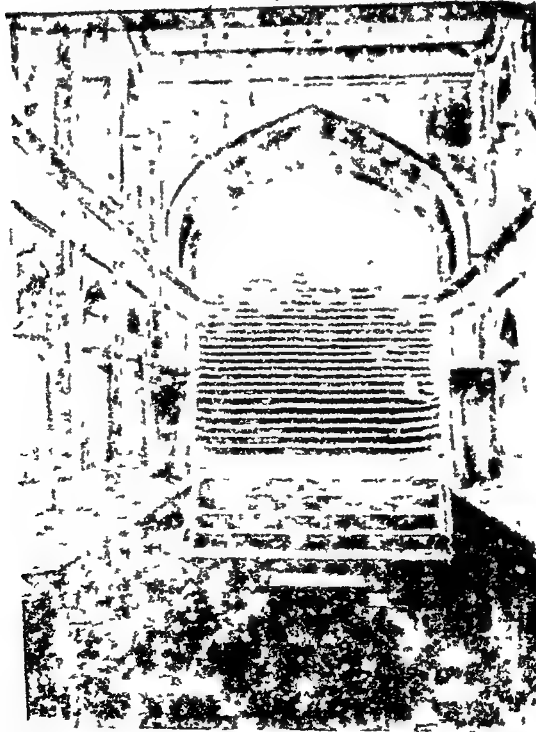
नवाब दौलतखाँ (द्वितीय)
शासनकाल सं० १६८३-१७२०



फतहपुर का किला
(निर्माण संवत् १५०८)



नवाब अलिफखां का मकबरा



नवाबी बावडी

फदनखां नामक एक लड़का नवाब सरदारखांके था, जो असमयमें नवाबकी जिन्दगीमें ही मर गया था, इससे नवाब दुःखी रहने लगा। रात-दिन दुःखमें डूबे रहनेसे उसे राज्य-कार्य अरुचिकर हो गया था, जिससे उसने संवत् १७३७ तक २७ वर्ष ही राज्य करनेके बाद गद्दी छोड़ दी और राज्यका अधिकार अपने छोटे भाई दीनदारखांके सुपुर्द कर दिया।

१०—नवाब दीनदारखां

(संवत् १७३७से १७६० तक-तदनुसार सन् १६८०से १७०३ तक)

संवत् १७३७में नवाब सरदारखांने, अपने पुत्रकी मृत्युसे दुःखित होनेके कारण राज्यासन छोड़ कर अपने भाई दीनदारखांको गद्दी पर बैठाया। वह पहलेके नवाबोंकी तरह बहादुर और बुद्धिमान न था, बल्कि शक्तिहीन और मूर्ख था।

अपने नामसे "दीनदारपुरी" नाम रख कर नवाब दीनदारखांने एक गांव झुंझणूके रास्तेमें बसाया। नवाबके २ लड़के पैदा हुए जिनका नाम— रसीदखां* और मुजफ्फरखां रक्खे गये।

कम अकल होनेसे नवाब दीनदारखां अधिक दिन तक राज-काज न निभा सका, इससे उसके पोते सरदारखांने संवत् १७६०में उससे राज्यभार ग्रहण करके नवाबी अपने हाथमें ले ली।

११—नवाब सरदारखां (२)

(संवत् १७६०से १७८६ तक, तदनुसार सन् १७०३से १७२९ तक)

नवाब दीनदारखांके राज-काज न सम्भाल सकनेके कारण उसके पोते सरदारखांको उसके जीते जी ही १७६०में गद्दी सौंप दी गयी। यह भी नवाब दीनदारखांके समान मूर्ख और बलहीन था। ऐयाश भी अव्वल दर्जेका था। उसने एक तेलिनको उसके रूप पर आसक्त हो कर रख लिया था, जिसका महल आज तक फतहपुरके किलेमें विद्यमान है, जो "तेलिनका महल" ऐसा कहा जाता है। तेलिनसे एक लड़का भी नवाबके हुआ, जिसका नाम महबूब था।

संवत् १७९२में नवाब सरदारखांने किसी कारण वश क्रोधावेशमें आ कर भोजराजजीके वंशज बरयाके केशरीसिंह और सुजानसिंहको जानसे मरवा दिया। यह बात जब भोजराजजीके वंशज वीरवर शार्दूलसिंहजीने सुनी, तो वे इतने क्रोधित हुए कि सिरसे पैर तक क्रोधाग्निसे तिल मिलाने लगे। उन्होंने तुरन्त ही राव शिवसिंहजीको साथमें ले कर १५० सवारों सहित फतहपुर पर चढ़ाई की।

---

*रसीदखां नवाब दीनदारखांका बड़ा बेटा था। उसने अपने नामसे "रसीदपुरा" बसाया। उसके २ लड़के थे। सरदारखां और मीरखां। सरदारखां उसका बड़ा बेटा था, इससे उसे ही नवाब दीनदारखांने अपनी गद्दी पर बैठाया।

फतहपुरकी बीहड़में पहुँच कर शार्दूलसिंहजी और राव शिवसिंहजीने नवाबके ऊंटोंके समूहको वहां चरता हुआ पाया। उन्होंने उस समूहको घेरा। नवाबने अपने सर्वेसर्वा काजीको वहां भेजा। काजी और शार्दूलसिंहजी वगैरहमें लड़ाई छिड गयी। अन्तमें काजी और ग्यारह कायमखानी उस स्थान पर मारे गये और बाकी सब भाग गये।

उसी समयसे शार्दूलसिंहजी और राव शिवसिंहजी कायमखानियोंको नीचा दिखाने और उनकी भूमि उनसे छीन लेनेके लिए प्रयत्नशील हुए। अपने प्रयत्नमें लगे हुए उन्होंने झुंझुणूको संवत् १७८६में कायमखानियों से छीन कर, उस पर अपना अधिकार कर लिया। बादमें फतहपुर पर अपना अधिकार स्थापित करना चाहा, इसके लिए वे उचित अवसरकी बाट जोहने लगे।

महबूबको अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहनेके कारण नवाब सरदारखांसे अन्य कायम खानी सरदार मनमुटाव रखने लगे थे। कायमखानी चाहते थे कि अधिकार महबूबको न मिल कर कामयाबखांको मिले; पर नवाब यह न चाहता था। उसने तो महबूबको ही उत्तराधिकार देना चाहा; यद्यपि वह कायमखानियोंके कहनेसे कामयाबखांको दत्तक-पुत्र बना चुका था।

कायमखानी नवाबसे बिलकुल असंतुष्ट हो गये। चूड़ी और बेसवाके कायमखानियोंने राव शिवसिंहजीके पास जा कर करबद्ध प्रार्थना की कि "आप फतेहपुरका अधिकार कामयाबखांको दिला दें, आपकी सेवामें हम २५ गांव भेंट स्वरूप दे देंगे और फतेहपुरकी राज्य-व्यवस्था भी आपकी सलाहसे की जावेगी।"

कायमखानियोंकी प्रार्थना सुन कर राव शिवसिंहजीने काशलीके कुंवर रामसिंहको बुलवाया रामसिंह और प्रार्थी कायमखानियोंको साथ ले कर संवत् १७८६में राव शिवसिंहजीने फतेहपुर पर चढ़ाई की। भयंकर लड़ाई हुई, दोनों तरफके अनेक वीर आहत हुए और अनेक मारे गये। बादमें नवाबने यह जान कर कि कायमखानियोंने ही शेखावतोंको साथ ले कर चढ़ाई की है वहराव शिवसिंहजीके चरणोंमे आ पडा। राव शिवसिंहजीने नवाबके लिए नौ हजार रुपया वार्षिक निश्चित किया और कामयाबखांको गद्दी पर बैठा दिया।

१२—नवाब कामयाबखां

(संवत् १७८६से १७८७ तक तदनुसार सन् १७२९से १७३० तक)

नवाब सरदारखां, जो महबूबको राज्याधिकार देना चाहता था, उससे राव शिवसिंहजीने राज्यका अधिकार संवत् १८८६में कामयाबखांको दिलवा दिया, जो नवाबके छोटे भाई मीरखांका लडका था और नवाबके द्वारा दत्तक भी स्वीकृत किया जा चुका था।

नवाब कामयाबखां अपनेसे पूर्वके दो नवाबोंकी भांति ही बलबुद्धिसे रहित था। वह राज्यकी व्यवस्था पर ध्यान न दे कर अपने आरामकी तरफ ही विशेष ध्यान देता था। हिताहितकी बातोंकी उसे पहचान न थी।

राव शिवसिंहजीने नवाब कामयाबखांको जब गद्दी दिलवाई थी, तब अपने श्वसुर भावसिंहजी बीदावतको उन्होंने नवाबका कामदार नियत किया था। नवाब कामयाबखांने गद्दी पानेमें कामयाब हो कर भावसिंहजी और चूड़ी, वेसवाके कायमखानियोंको थोड़े दिनों बाद ही अपने राज्य फतहपुरसे निकाल बाहर किया। राव शिवसिंहजीने यह बात सुनी। उन्होंने इसे एक अच्छा मौका समझा। तुरन्त शार्दूलसिंहजीको बुलवाया और उनसे सलाह करके चैत्र-कृष्ण १३ संवत् १७८७को फतहपुर पर दो हजार घुड़सवारोंकी सेना ले कर चढ़ आये।

समस्त कायमखानी, झुंझुनूकी तरह फतहपुरको अपने हाथसे जाता देख कर एकत्रित हो नवाबके पक्षमें आ डटे। केवल वेसवाके कायमखानी नहीं आये।

शेखावतों और कायमखानियोंमें प्रबल युद्ध हुआ। दोनों तरफके योद्धा प्रबल विक्रमसे लड़े, जिनमें कई घायल हुए और कई मारे गये। चारों तरफ रुधिरसे लथ पथ रुण्ड और मुण्ड ही नजर आते थे।

निदान नवाब सरदारखां घायल हो गया[1] और नवाब कामयाबखां मैदान छोड़ कर भाग गया।[2] जिसके फलस्वरूप कायमखानियोंकी पराजय हुई। उनसे राज्य छीन कर शेखावतोंने उस पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। संवत् १७८७की समाप्तिके रोजसे राव शिवसिंहजी फतहपुरके शासक पद पर आरूढ़ हुए।

उपसंहार

फतहपुर राज्यके हाथसे चले जानेके बाद कायमखानी हार मान कर चुप न बैठ सके। वे राज्यको फिर हस्तगत करनेके लिए कोशिशें कर रहे थे। उन्होंने दिल्ली जा कर तत्सामयिक मुगल बादशाह मुहम्मदशाहके दरबारमें शेखावतोंके विरुद्ध दावा पेश किया, लेकिन शेखावतोंने पहलेसे ही सवाई जयसिंहजी (द्वितीयको) जो कि दरबारके मान्य व्यक्ति थे फतहपुर पर अधिकार स्थापनकी कथा कह सुनाई थी। जिससे उनकी इच्छित बात ही शाही रजिस्टरोंमें दर्ज हो गयी थी, इससे कायमखानियोंके दावे पर ध्यान न दिया गया। फतहपुर पर राव शिवसिंहजीका ही अधिकार रहा।

संवत् १८०८में कायमखानियोंने समर्थसिंहजी और चांदसिंहजीकी अनुपस्थितिमें* सिन्धी

---

१ नवाब सरदारखां, आहत दशामें ही हिसार ले जाया गया, जहां पर उसका प्राणान्त हो गया।

२ नवाब कामयाबखां, भाग कर कुचामण (मारवाड़में) चला गया। वहीं अपनी जिन्दगीके दिन पूरे होने पर मृत्युको प्राप्त हुआ। उसकी सन्तान आज तक कुचामणमें विद्यमान है।

* समर्थसिंहजी और चांदसिंहजी, जोधपुरके महाराजा अभयसिंहजीके पुत्र रामसिंहकी सहायतार्थ गये हुए जयपुरके महाराजा ईश्वरीसिंहजीके साथ जानेके कारण अनुपस्थित थे।

और बिलोचियोंकी सेना सहित फतहपुर पर चढ़ाई की और उसे हस्तगत कर लिया। चांदसिंहजीने यह समाचार सुन कर लाड़खानियों और अपने मामोंसे सैनिक सहायता ले कर फतहपुरके लिए प्रस्थान किया। सीकरसे बुधसिंहजी ससैन्य आ पहुंचे। फतहपुर पर आक्रमण करके कायमखानियोंके हाथसे वह छीन लिया गया। तदनन्तर फिर संवत १८३१में कायमखांनियोंने बादशाह शाहआलम (द्वितीयसे) मदद मांगी। उसने पीरूखां बिलोची और मित्रसेन अहीरको सेना दे कर शेखावाटी पर भेजा। राव देवीसिंहजी शेखावत सेना सहित जयपुरकी सैन्य सहायता प्राप्त कर मैदानमें आ गये। लड़ाई "मांडण" गांवमें हुई। लडाई होते-होते अन्तमें पीरूखां धराशायी हुआ और मित्रसेन भाग गया। अपने प्रमुखको भागा देख कर सेना भी पलायित हुई, इस तरह शेखावतोंने विजय पायी।

तत्पश्चात् संवत् १८३६में बादशाह शाह आलम द्वितीयने पुनः एक सेना कायमखानियोंकी सहायता-स्वरूप शेखावटी पर आक्रमण करनेके लिए भेजी। शेखावतोंके पक्षमें जयपुरपतिकी भेजी हुई एक सेना और ससैन्य अलवर नरेश प्रतापसिहजी आये। दोनों पक्षोंमें घमासान युद्ध हुआ। अन्तमें शाही सेनाकी पराजय हुई और उसका सेनापति निराश हो कर दिल्ली चला गया।

एक सेना फिर कायमखानियोंको सहायतार्थ दे कर संवत् १८३७में बादशाह शाह आलम द्वितीयने शेखावाटी पर भेजी। राव देवीसिंहजी शेखावतोंको एकत्रित कर "खाटू"के मैदानमें आ डटे। युद्ध आरम्भ हो गया। सहस्त्रों मनुष्य दोनों तरफ मारे गये, परन्तु किसी पक्षकी विजय नहीं हुई। दोनों तरफके योद्धा लडते-लडते बहुत अधिक थक चुके थे, निदान बादशाही सेना दिल्ली लौट गयी और शेखावत अपने स्थानोंको चले गये।

———

(क) नवाबोंकी हैसियत।

तहपुर पर नवाबोंने संवत् १७८७ तक २७९ वर्ष राज्य किया। इतने कालमें १२ नवाब गद्दी पर बैठे, जिनमें प्रारम्भके ८ तो शक्तिशाली और सामर्थ्यशाली हुए और बादके ४ कमजोर। नवाब अलिफखां (फतहपुरका ७ वां नवाब) सर्वश्रेष्ठ नवाब हुआ।

इन नवाबोंकी हैसियत बहुत ऊंची थी। दिल्ली बादशाहोंके यहां भी ये नवाब ही कहलाए। दिल्ली दरबारमें नवाब ताजखां (२), नवाब अलिफखां और नवाब दौलतखां (२) बराबर जाते रहे। अपने समसामयिक सम्राटोंकी ओरसे इन्होंने अनेक लडाइयां वीरतापूर्वक लडीं और उनके लिए सम्मान पाया।

(ख) नवाबोंका राज्य विस्तार।

आजकी शेखावाटी नवाबोंके शासन-कालमें फतहपुरवाटी और झुंझुणवाटीक नामसे प्रसिद्ध रही है, बादमें परम प्रतापी राव शेखाजीके नामसे इसका नाम शेखावाटी पड़ गया।

इसका नवाबी शासन कालका भूमि विस्तार कितना था, इस सम्बन्धमें यथेच्छ जानकारी मुझे नहीं हुई, यद्यपि इस बारेमें मैंने काफी छानबीन भी की, पर जितना, इतिहासोंमें इस सम्बन्धका उल्लख मिलता है, उससे यह तो भली भांति अनुमान लगाया जा सकता है कि फतहपुर वाटी और झुंझुणूवाटीकी भूमि दूर तक विस्तृत थी जोधपुरमें सम्मिलित झाटोदकी पट्टीके ५७ गाव और बीकानरमें सम्मिलित फतहपुर पट्टीके १२० गाव * जिनमें रतनगढ़ और चूरू भी हैं, नवाबोंके शासनकालमें फतहपुरवाटीके ही अतर्गत थे।

परिशिष्ट न० ४

क्यामखानी नवाबोंके बसाये हुए गाँव

१ फतहखाँने फतहपुर बसाया (रासाके अनुसार स० १५०८में)।
२ मुहम्मदखाने जुका जाटकी सलाहसे झुंझणू बसाया (विशेष आबाद किया)।
३ नवाब जलालखाँने जलालसर बसाया जो फतहपुरके दक्षिण ३ कोस पर है। इसन पशुपक्षीके लिए १२ कोस घेरेका बीहड़ रखा जो आज भी है।
४ नवाब दौलतखाँ (१) ने दौलताबाद गाँव बसाया जो फतहपुरका एक मोहल्ला है।
५ नाहरखाँने नाहरसर गाँव बसाये, ये फतहपुरके उत्तर दक्षिणमें ४ ४ कोस पर हैं।
६ फदनखाँने फदनपुरा गाँव बसाया जो फतहपुरके ३ कोस उत्तरमें है।
७ ताजखाँ (२)ने ताजसर गाँव बसाया जो शहरसे ३ कोस पर है।
८ अलिफखाँने अलिफसर गाँव बसाया जो फतहपुरसे दक्षिण पूर्वमें ५ कोस पर बेपय ग्रामके पास है।
९ दौलतखाँने दौलतपुरा गाँव बसाया जो वर्तमानमें बीकानेर राज्यमें है।
१० सरदारखाँने सरदारपुरा बसाया।
११ दीनदारखाँने दीनपुरा झुंझणूके रास्तेमें बसाया।

नवाबोंके लड़कोंके नामसे भी कई गाँव बसाये गये हैं।

---

* फतहपुर पट्टीके ये गाव राव लूणकरणने नवाब दौलतखा (१) से ले लिये थे। इस बारेमें अधिक जानकारीके लिए इसी पुस्तकके तीसरे खण्डमें "नवाब दौलतखा (१)" शीर्षकके अन्तर्गत देखिए।

१. ताहिरखाँके नामसे ताहिरपुरा।

२. रसीदके नामसे रसीदपुरा।

फतहपुर किला नवाबोंका स्मारक है ही। अन्य स्मारक इस प्रकार हैं –

१. नवाब फतेहखाँ (१) वीर सेनापति बहुगुनाको जालके पेडके नीचे दफनाया। वहाँ उनकी कब्र आज भी है, पासमें कुआ है, जिसको बोहगुणका कुआ कहते हैं।

२. दौलतखाँ (१की) कब्र किलेके नीचे दक्षिणमें आज भी हिन्दू मुसलमान दोनोंसे पूजित है।

३. नवाब अलीफखाँके दफन स्थान पर दौलतखाँने [1] मकबरा बनाया जो उल्लेखनीय व दर्शनीय-स्मारक फतेपुरसे पूर्वकी ओर है।

४. सं० १६७१में अलिफखाँके समय दौलतखाँकी देखरेखमें नागौरके शेख महमूदने बड़ी उल्लेखनीय [2] बावड़ी बनाई जो आश्चर्यजनक व दर्शनीय है।

५. सरदारखां (द्वितीयकी) रखेली तेलनका महल किलेमें आज भी तेलनके महलके नामसे प्रसिद्ध है।

६. जलालखांने बीहड १२ कोसकी रखी जिसमें पशु चरते हैं।

परिशिष्ट न० ५

क्यामखानी दीवानोंका वंश-वृक्ष

१. दीवान क्यामखाँ (सं० १४४१से ७५)

१. ताजखाँ, २ मुहम्मदखाँ, ३ कुतबखाँ, ४ इखतियारखाँ, ५ मोमनखाँ।

२. (सं० १४७७-१५०३)

१. फतिहखाँ, २ रूका, ३ फखरदी, ४ मोजन, ५ इकलीमखाँ. ६ पहाड़ा।

३. (१५०३-२१.)

१. जलालखाँ, २ हैबतसाह, ३ मुहमदसाह, ४ असदखाँ, ५ हरियासाह, ६ साह मनसूर ७ सेख सलह, ८ वलों, ९ संग्रामसूर, १० हेतम।

---

१ इसका परिचय व चित्र फतहपुर परिचयमें प्रकाशित है।

२ इसका परिचय व चित्र फतहपुर परिचयमें प्रकाशित है।

४ (१५३१ ४६)

१ दौलतखाँ, २ अहमदखाँ, ३ नूरखाँ ४ फरीदखाँ, ५ निजामखाँ, ६ पहाड़खाँ, ७ लाड़खाँ ८ दाउदखाँ, ९ अथन, १० महमदसाह ।

५ (१५४६ ७०)

१ नौहरखाँ, २ होबनखाँ, ३ बाजिदखाँ ।

६ (१५७० १६०२)

१ फदनखाँ, २ बहादरखा, ३ दिलावरखाँ ।

७ (१६०२ ९)

१ ताजखा, २ पेरानखाँ, ३ दरियाखाँ ।

८ (१६०९-२७)

१ महम्मदखाँ, २ महमूदखाँ, ३ सेरखाँ, ४ जमालखाँ, ५ जलालखाँ, ६ मुजफ्फरखाँ, ७ हेबतखाँ, ८ हबीबखाँ ।

९ (१६२७ ८३)

१ दौलतखाँ, २ न्यामतखाँ, ३ सरीफखाँ, ४ जरीफखाँ, ५ फकीरखाँ ।

१० (१६८३ १७१०)

१ ताहरखाँ, २ मीरखाँ, ३ असदखाँ ।

१ सरदारखाँ ।

११ (स० १७१० ३७)

फदनखाँ (क्यामखाँ इसकी विद्यमानतामें बना) यह असमयमें स्वर्गवासी हो गया। इससे सरदारखाँने अपने भाई दीनदारखाँको राज्याधिकार दे दिया ।

फतहपुर परिचय ग्रन्थमें वंश वृक्ष दे दिया है, उसमें कुछ नामान्तर व अधिक नाम ये हैं–

१ क्यामखाँका अहमदखाँ नामक एक और पुत्र बतलाया है । मोमनखाँको मोहनखाँ लिखा है ।

२ दौलतखाँ (१के) पुत्रोंके नामोंमें न० ८ ९-१० नामोंके बदले १ बहारखाँ, २ एमनखाँ, ३ दरियाखाँ है ।

३ नाहरखाँके पुत्र होबनखाँका नाम ओबनखाँ लिखा है ।

४ दौलतखाँके पुत्र फकीरखाँका नाम फखरखाँ लिखा है ।

५ ताहरखाँके पुत्र मीरखाँका नाम महरखाँ दिया है ।

६ सरदारखाँके बाद उसका भाई दीनदारखाँ दीवान हुआ, राज्यकाल (स० १७३७से ६०)।

क्यामखां रासा

अथवा

रासा श्री दीवान अलिफखांका

॥ दोहा ॥ सिरजनहार वखानिहौं, जिन सिरज्यौ संसार ।
ख भू गिर तर जल पवन, नर पस पछी अपार ॥१॥
येक येक ते जात वहु, कीनी है जग माहि ।
अनत गोत कवि जान कहि, गनती आवत नाहि ॥२॥
दोम महमद उच्चरो, जाकै हितकै काज ।
कहत जान करतार यहु, साज्यौ है सब साज ॥३॥
कहत जान अव वरनिही, अलिफखानकी जात ।
पिता जान वढिना कही, भाखौं साची वात ॥४॥
अलिफखानु दीवानकौं, वहुत वडौ है गोत ।
चाहुवानकी जोटकी, और न जगमें होत ॥५॥
अलिफखानकै वसमे, भये वडे राजान ।
कहत जान कछु येक ही, सवका करौं वखान ॥६॥
वात अलिफखाकी कहौं, सब पाछै कहि जान ।
किहि विधि जीये जगतमें, कैसे मरे निदान ॥७॥
वडे वडे साके कीये, अलिफखान जग माहि ।
पातसाहकै कामकौ, ज्यो पुनि रारयौ नाहि ॥८॥
नूर महमदको रच्यो, पहले सिरजनहार ।
ताहीते कवि जान कहि, भयो सकल संसार ॥९॥
तौ नभ रवि तारे ससि, सुरग नूर ते कीन ।
रचे फिरसते नूरके, करे नवी आधीन ॥१०॥

धर गिरवर सागर रचे, पाछे दानव देव ।
अत रचे मानस अलख, कहत न आवहि भेव ॥११॥
जबहि भयौ करतारको, मनुप रचनको चाइ ।
तव पहले [जिनकौ] कीयो, सुनहु कथा चित लाइ ॥१२॥
कहत जान कवि जानियो, ग्रथनिको मत गाव ।
माटीतै पैदा भयौ, ताते आदम नांव ॥१३॥
मानस भये जहांनमैं, ते सगरे कहि जांन ।
आदम पाछै आदमी, हेदू मुसलमान ॥१४॥
येक पिड इन दुहुंनकौ, ना अन्तर रत चाम ।
पै करनी नाहिन मिलै, ताते न्यारे नांम ॥१५॥
बाते वहु संतत भई, गनती आवत नाहि ।
आदम वरस सहस लौ, जीयो जगती मांहि ॥१६॥
आदम पैगवर भयो, प्यार कीयो करतार ।
पहले वैकुंठ राखकै, फिर पठयो सैसार ॥१७॥
जिते पुत्र आदम भये, सबमै टीकौ सीस ।
हूर बरी हूवो नबी, दया करी जगदीस ॥१८॥
नौसै वारह वरस लौ, सीस रह्यौ जग माहि ।
सेवा करताकी करी, चुख अरसायो नाहि ॥१९॥
भयो सीसकै जांन कहि, बडड़ो पुत्र उनूस ।
निस बासुर करतारकी, सेवा करी अदूस ॥२०॥
नौसै पैंसठ बरस लौ, भयो न जगतै दूर ।
याते उपज्यो जगतमै, तरवर तरल खजूर ॥२१॥
भयो जु पुत्र उनूसकै, नांव ताहिकी नान ।
नौसै वासठ बरस लौ, सुखरसु कीये जहांन ॥२२॥
नीके मंदिर कोट गढ़, उपजै जगती मांहि ।
सो याहीते जान कहि, पहले जानत नाहि ॥२३॥

ताकौ महलाइल सुत, रूपवत कहि जान ।
वाकौ देखन आइ है, मिलि मिलि सकल जहान ॥२४॥
यजद ताहि नदन भयो, दयो न करता ग्यान ।
अपने घरमहि छाडकै, पथ चलायो आन ॥२५॥
भयो यजदकै जान कहि, पैगावर इदरीस ।
डकरि कैफिरि यो करै, ये चरित्र जगदीस ॥२६॥
साठ पच अरु तीन सौ, वरस रह्यौ जग माहि ।
अजहू जीवै सुरगमै, मरै प्रलै लौ नाहि ॥२७॥
ताकौ सुत मसतूस लख, धर्म छाडि जिन दीन ।
लमक भयो ताको नदन, वहु पुनि सेवा हीन ॥२८॥
ताकै नूह नवी भयो, नौ सै वरस पचास ।
धरम पथ सव जगतमे, नीकै कर्यो प्रकास ॥२९॥
प्रगट वात है नूहकी, सव ग्रन्थनिकै माहि ।
मै ताते कवि जान कहि, यामै आनी नाहि ॥३०॥
तीन भये सुत नूहकै, सुनि लै तिनकौ नाम ।
लघु याफस मधि हाम है, वडडौ जानौ साम ॥३१॥
अरवी रूमी सामकै, पुनि ईराक खुरसान ।
अरवी ताई अस अरी, अजदी अरु मसरान ॥३२॥
अरा अरमन पारसी, भये जु नवी जहान ।
सकल सामकै वसमै, अरु चहुवान पठान ॥३३॥
और हामकै वसमै, येती जात वखानि ।
उजवक हिंदी वरवरी, हवसी कुवती जानि ॥३४॥
याफस ते सकलावके, परतासी यो मान ।
फिरग रूस चगता तुरक, चीमा चीन पिछान ॥३५॥
साम वडो सुत नूहको, धरम पथ गहि लीन ।
इमन भयो ताको नदन, कोइ वात न हीन ॥३६॥

उज भयो घर इरमकै, ताकैं भयौ समूद ।
वै पुनि ज्वाला कालकी, जरि निवरे ज्यो ऊद ॥३७॥
वाकै राजा आद हुव, ताके पुत्र अनाद ।
ताते भयो जुगाद जग, तिहं नंदन ब्रह्माद ॥३८॥
मेर भयो ब्रह्मादकै, अरु मंदिर घर तास ।
मदिरकै घर जांन कहि, उपज्यौ सुत कैलास ॥३९॥
वाकै भयौ समुद्र सुत, जाके उपज्यौ फेन ।
ताकै वसिग अतुलि वल, सम न करै वलि वेंन ॥४०॥
वसिगको सुत राह है, है साहंसीक मल सूर ।
दुर्जनकौ ऐसै गहत, राह गहत जिम सूर ॥४१॥
रावन है सुत राहकौ, धुंधमार सुत ताहि ।
भयो चक्रवै जगतमै, उपमा दीजै काहि ॥४२॥
परगट सकल जहानमै, करिहौ कहा वखान ।
उदै अस्त लौ जांन कहि, धुँधमारकी आन ॥४३॥
प्रगट्यो तिहि मारीच सुत, प्राची और प्रतीच ।
वदन किरन यों जगमगै, जैसे सूर मिरीच ॥४४॥
वाकै राजा जमदगिन, विधु सुमिर्‌यो करि चाइ ।
परसराम तिहं सुत भयो, चार चक्कको राइ ॥४५॥
परसरामके जुद्ध सव, वरने नाहिन जाहि ।
जो वरनौ तौ जांन कहि, लिखनंहार अर नांहि ॥४६॥
परसराम सुत सूर है, ताकै वछ वड़ जोत ।
चाहुवान है जगतमै, ते सव वछ सगोत ॥४७॥
चाइ भयो सुत वछकौ, विधु सुमिर्‌यो करि चाइ ।
चाहुवांन तिहि सुत भयो, करता आयो भाइ ॥४८॥
चाहुवांन यातें कह्यो, चहू कूटमें आंन ।
सगरै जंवू दीपमै, संम कौ गोत न आंन ॥४९॥

सभर लयो निकाम जिह, ताकी सम मर कौन ।
सब ही कोउ खातु हैं, चाहुवानको लौंन ॥५०॥
सभरकी लौंनी धरा, तित उपजे कहि जान ।
लौन हि लाज न मारि हैं, हैं जित ली चहुवान ॥५१॥

॥ सवैया ॥ देवनमे देवराज, गजनिमें गजराज,
पछी पछराज, ग्रहनिमें तपु भानकी ।
सरितामें ज्यो समद, बोहिथ नौका निर्भिद,
उडिनमे इद, पन्ननिमे भोग पानको ।
गिरिनमें सुमेर, दरगाहनिमें अजमेर,
खाननमें मान, जैसौ कचनकी खानकौ ।
फूलनि मधि गुलाल, चूनियनि जैसी लाल,
राइनमें तैसो गोत, चत्रनै चौहानकौ ॥५२॥

॥ दोहा ॥ कलप बिछ चहुवान है, जाके अनगन साख ।
जो हौं जानी जान कहि, सु तो सुनाउ भाख ॥५३॥

॥ सवैया ॥ क्यामखान देवरे, सीसोदीये भदोरिये,
चितोरीये बाघोर मल, खीची निरवान जू ।
चाहिल मोहिल माहो, दूगर बालेसे जोर,
सोनगरे गिल जोर, मादलेचे मान जू ।
गुहिलौत उमट, साचोरे गोधे गवसिये,
हाले झाले दाहिमे कहि [कवि] जान जू ।
गूदन बानोत हाडे खीचर घघेरे गैल जू
जेती सब सामनिकी मूल चहुवान जू, ॥५४॥

॥ दोहा ॥ बारोग्यि धुराने, चीबे गोयन बान ।
कुल तावर दल होय पुनि, चाहुवानरी डाल ॥५५॥
पट नृप आरोपक पुनि, पीपारे रहि जान ।
गोगम दानी धर मङ्गिन, सबन मूल चहुवान ॥५६॥
चाहुवानों वामे, भये छत्रपति गाढ ।
तिनहीं रथार ज कथी, ताव रासो ममराट ॥५७॥

राज कीयौ है दिल्लीमै, मानिकदे चहुवान ।
दोइ वरस षट मास लौं, सतरह दिन कहि जान ॥५८॥
पाछै दिल्लीमै भयो, देवराज चहुवान ।
तीन मास द्वै बरस लौं, सत्रह दिन कहि जान ॥५९॥
पाछैं दिल्लीमे भयौ, रावलदे चहुवांन ।
सात द्योस नौ वरस लौ, राज कीयौ कहि जान ॥६०॥
पाछै दिल्लीमैं भयौ, देवसीह चहुवांन ।
तीन मास षट वरस लौं, राज कीयौ कहि जांन ॥६१॥
येक मास बाईस दिन, दस वरसनि स्योदेव ।
राज कीयौ है दिल्लीमैं, सव मिलि कीनी सेव ॥६२॥
वा पाछै वलदेव है, राखन कुलकी लाज ।
पंच वरस दिन एक दस, करयौ दिलीमैं राज ॥६३॥
प्रिथीराज पाछै भयौ, दिल्लिपति चहुवांन ।
ग्यारह दिन दुने वरस, रही जगतमैं आंन ॥६४॥
दूब काबिली दिल्लीमैं, लई मगाइ मगाइ ।
घरी घरी आवत हरी, चरी तुरगनि खाइ ॥६५॥
प्रिथीराजकी वरनना, मोपै करी न जाइ ।
साके गनना हि न सकौ, कहा कहौ समझाइ ॥६६॥
और वंस चहुवांनकै, राजा भये अपार ।
बीसल आना जांन कहि, हठी हमीर मुछार ॥६७॥
जिती जात रजपूतकी, सगरे हिंदसतान ।
सबमे निहचै जानियो, बड़ौ गोत चहुवांन ॥६८॥
चाहुवांन सुत मुनि अरु, मुनि मानिक जैपाल ।
येक भयो जोगी अमर, तीन भये भोवाल ॥६९॥
मानिक कुल प्रिथीराज हुव, सोमेसुरको अंस ।
जिते राठ चहुवांन है, ते - अरिमुनिकै बस ॥७०॥

चाहुवान जब चलि गयो, मुनि वैठ्यो उहि ठौर ।
कूचौरैहूमै रह्यो, केतक दिन सिरमौर ॥७१॥
मुनि राइकैं जानियो, भयो राइ भोपाल ।
कहु कलग ताकैं भयौ, सूरा गोत गुवाल ॥७२॥
घघरान ताकैं भयौ, कीनौ घाघू गाव ।
अपनी भुज वर जातमैं, नीकौ कीनौ नाव ॥७३॥
चढ्यौ अहेरै येक दिन, घघ राइ कहि जान ।
म्रिग छौना टौना मनौ, देख्यौ चरत उद्यान ॥७४॥
चौप भई जिय राइकें, पकरौ दै गर चाप ।
सव दल ठाढौ छाडिकै, गयौ अकेलो आप ॥७५॥
म्रगसावक तव भजि चल्यौ, पाछैं धायो राइ ।
घघ [राइ] तुरग पुनि, चले चढे रथ बाइ ॥७६॥
वहुत वार जब ह्वै गई, राजा आयो नाहि ।
तव सेवक सव विकल ह्वै, सोधत है बन माहि ॥७७॥
बन बन सेवक फिरत है, तन मन भेंट न चाहि ।
चिंता अन अन भातकी, अनगन व्यापति ताहि ॥७८॥
सुनहु वात अव राइकी, चित अति वढयौ उमग ।
आगैं पाछैं जात है, निकट कुरग तुरग ॥७९॥
जात जात कवि जान कहि, लोह गिरकै पास ।
छलकै छौना छपि गयो, भयो नरेस उदास ॥८०॥
सोधि रह्यो नाहिन लह्यो, तकी व्रिछकी छाहि ।
नैन सजल उर धकधकी, चिंत वढी चित माहि ॥८१॥
सर्ले तर्ले तरकाज तित, तातर निर्मल कुड ।
तहा अपछर झुड है, हनैंछी ससितुड ॥८२॥
चार अपछरा चार छवि, करत कुड असनान ।
पानिकी पानिपु चढी, अगलगे कहि जान ॥८३॥

॥ सवैया ॥ करत सनांन, सर रूपकी निधांन,
वांम अति अभिगंम, ऐसी उपमां बखानी है ।
अंगकी झंमक दमकनि ऐसी लागति है,
असित घटामें दामनीसी चमकानी है ।
कै तौ ऐसी भांति तन कांतिकी है सोभा देत,
ससि प्रतिबिंब देखियत मधि पानी है ।
मानहु अगिन झाई, जलमाहि प्रगटाई,
कै तौ वड़वानल सलिल भभकानी है ॥८४॥

॥ दोहा ॥ वसतर छाडे पाल सर, न्हावन पैठी वाम ।
लीना वघ उचाइकै, पूजे मनसा काम ॥८५॥
बसन लेत राजा तक्यौ, परी परी मुरझाइ ।
सूर छपें ज्यौं नीरमैं, कंवल रहै कुमिलाइ ॥८६॥
द्रिग आंसू उर धकधकी, वकी लगी मुख रांम ।
वसतर विना न उडि सकै, रही उघारी वाम ॥८७॥

॥ सवैया ॥ अंवर देहु हमारे, जात उघारी हहा रे !
खरी हम लाज मरै, दुख पावै महा रै ।
जीभ थकी वकतै,तुमसौ सुनतै,चुख कांन तिहारे न हारे ।
आवै सनानकौ दीजिये जांनन यामै कहौ तुम पुन कहारे ।
ठाढी रही जल पोत कीये हम अवर देहु हमारे हहारे ॥८८॥

॥ दोहा ॥ तब हि घंघ उनिसौ कह्यौ, सुनि लै सांची बात ।
येक वरौ जौ चहुनिमैं, तौ ढापौ तुम गात ॥८९॥
कहै अपछरा राइसौ, ऐसी हुई न होइ ।
हम तुममैं कैसे वनै, जात गोत ही दोइ ॥९०॥
तूं मानस हम अपछरा, कैसै वनिहै बात ।
अवलौ काहू नां तके, येक संग दिन रात ॥९१॥
राइ कह्यौ सुनि अपछरा, यहु समझौ चित मांहि ।
जब हि पीति तन ऊपजै, जात गोत सुधि नांहि ॥९२॥

जौ लौं जीउ जगतमैं, हा तो ह्वै हो नाहि ।
जौ तुम जिय तौ अग हू, तुम घट तौ हौ छाहि ॥६३॥
कै तुम लेहु मिलाइ मुहि, उरत फिरौ तुम माहि ।
कै तुमको मानस करौ, वसतर दैहो नाहि ॥६४॥
काहेको विललातु हौ, मया न आवत मोहि ।
मन वदलै वसतर लयैं, सो कैसै द्यो तोहि ॥६५॥
मोच कर्यो चित अपछरा, वसतर नाहिन देत ।
जो लौं हममै देखि कै, येक हि ना चुनि लेत ॥६६॥
वसतर नाहिन देत है, कीनें जतन अनेक ।
सव जलमे कोलौं रहैं, दैहौ याको येक ॥६७॥
तव हि कह्यौ सुनि राइ जू, वसन हमारे देहु ।
जासौ उरझे नैन तुम, येक वीन सो लेहु ॥६८॥
मवमे नान्ही वैसकी, वीन लइ तव राइ ।
वनमै जल प्यासै लह्यौ, फूल्यौ अग न माइ ॥६९॥
वोल वचन   कर   राइनैं, वसतर दीनें आनि ।
चारौं आइ   घघपै, वनि वनि वानिक वानि ॥१००॥
येक दई तव राइकौ, रीति भाति करि व्याह ।
नवहि सग करि लै चल्यौ, पूजी चितकी चाहि ॥१०१॥
लही सुहारी फल लहत, वहुत जान परवीन ।
धावत पाछे हरनके, हरनछी   विध दीन ॥१०२॥
तीन जने सुत अपछरा, कन्ह, चन्द पुनि इद ।
येक येकते   भरम   है, तीनो भये नरिंद ॥१०३॥
चदवार   चदे   वरी,   इद   वरी   इदोर ।
वन्हर देव   मुजान रहि, रहे पिताकी ठौर ॥१०४॥
घघ गान पुनि अपछरा,   आनद कीये अपार ।
अन भये त्रम वालकें, यहै रीति संसार ॥१०५॥

अंत कलाही कन्हपैं, आइ छिड़ाई ठौर ।
तब राजा अमरा भयो, चाहुवान सिरमौर ॥१०६॥
अमरा अजरा सिवरा, पुनि बछरा ये चार ।
कन्हरदेके पुत्र हैं, प्रगट भये संसार ॥१०७॥
अजराते चाहिल भयो, सिवरा जौर जहान ।
बछराते मोहिल भये, अमरेतें चहुवांन ॥१०८॥
अमरा सुत जेवर भयो, राज कर्‌यो जग मांहि ।
अंत मर्‌यो या जगतमे अमर अजर को नाहि ॥१०९॥
ताकै गूगा वैरसी, सेस धरह ये चार ।
राज कर्‌यो केतक वरस, अत तज्यौ संसार ॥११०॥
गूगैकै नानिग भयौ, सेस सु गयौ अऊत ।
कहत जान भोथर भरह, भये धरहके पूत ॥१११॥
उदराज सुत वैरसी, ताको सुत जसराज ।
तिह सुत केसोराइ है, समरथ सगरै काज ॥११२॥
विजैराज हरराज जुग, केसोनंद वखांन ।
है सतत हरराजकी, पर्वतमै कहि जान ॥११३॥
विजैराजकै जांन कहि, भयो पदमसी पूत ।
प्रिथीराज ताकै भयो, राज कीयो अदभूत ॥११४॥
लालचंद ताकै भयौ, वाकै अजै जु चंद ।
याकै सुत गोपाल है, हरनहार दुख दंद ॥११५॥
तिह सुत उपज्यौ जैतसी, समसर करै न कोइ ।
घुंनपाल ताकै भयो, पुर्ननिहि सुत होइ ॥११६॥
नूलराज मल असरथ, दौका सांगा जानि ।
रातू पातू और महियल, सुत जैत वखानि ॥११७॥
पुंनपालकौ रूप है, रावन है सुत ताहि ।
तिहुंनपाल याकै भयौ, लाज गोतकी ताहि ॥११८॥

तिहुनपाल सुत ऊपज्यो, मोटेराइ सकाज ।
निस बासुर सुखसौं कीयौ, ददरेवैमैं राज ॥११९॥
ताकैं उपज्यौ करमचंद, प्रकट भयो सब ठाव ।
तुरक कर्‌यौ पतिसाहजू, धर्‌यौ क्यामखां नाव ॥१२०॥
मोटे राके चार सुत, क्यामखान भोपाल ।
और जैनदी सदरदी, हिन्दू रह्यौ जगमाल ॥१२१॥

श्री दीवान क्यामखान पुत्र—ताजखां १, महमदखां २, कुतुबखां ३, इखतियारखां ४, मोमनखां ५ ।

क्यामखानको बखान

॥ चौपाई ॥ करमचंदकी बरनौ बाता, कैसैं कीनौ तुरक बिधाता ।
कुवर करमचंद खेलत डोलत । अधिक सिरिस्ट बचनमुखबोलत॥१२२॥
येक द्यौं सबहु चढ्यो अहेरै । भाई बंधव है बहु नेरै ।
साबर हरन रोझ बहु पाये । गहिवेको सबहि ललचाये ॥१२३॥
आप आपको सब उठि धाये । भूलि परे बनमे भग्माये ।
सबै अहेरैंके मदमाते । आप आपको डोलैं हाते ॥१२४॥
करमचंद इक बिरछ निहार्‌यौ । बैठ्यौ जाइ हुतौ अति हार्‌यौ ।
घोरा बांधि डारि सकलात । पौढ्यौ कुवर दैन सुख गात ॥१२५॥
आई नींद गयो तब सोइ । ढरि गइ छांह दुपहरि होइ ।
फेरोसाह दिली सुलतान । चारो चकमैं जाकी आन ॥१२६॥
उतरै है हिसारमें आइ । इक दिन चढे अहेरै चाइ ।
आवत आवत उहि ठां आये । कुवर बिरछतर सोवत पाये॥१२७॥
सकल बिरछ छइया ढरि गई । वा तरवरकी ढूरि न भई ।
पातसाह अचरजकी बात । देखि देखि अति ही भरमात ॥१२८॥
नासिर सैंद बुलायौ पास । जो देखौ सो कर्‌यौ प्रकास ।
अचरज रहे सैंद पतिसाहि । महापुरुष कोउ यहु आई ॥१२९॥
कह्यौ जगाइ पाइ इह लागैं । सूते भाग हमारे जागैं ।
साहस करिकैं कुवर जगायौ । हिंदू देख बहुत भरमायौ ॥१३०॥

हिंदू माहि न होइ करामत । इन कैसै कै पाई न्यामत ।
सैद कह्यौ ऐसी जिय आवै । अत पंथ तुरकनि यहु पावै ॥१३१॥
पूछयौ तब हि कहा तुव जात । रहत कहा साची कहु वात ।
ददरेवौ रहिवेको ठॉव । मोटेराव पिताको नाव ॥१३२॥
वस हमारौ है चहुवांन । नाम करमचन्द कहत जहांन ।
पातसाहने निकट वुलायौ । बहुत प्यारसौं गरै लगायो ॥१३३॥
कह्यो संग मो चलि चहुवान । दैं हौं तांकौ आदर मान ॥१३४॥

॥ दोहा ॥ कर्मचदते फेरिके, धरचो क्यामखां नांम ।
पातसाह सगहि लये, आयो अपनी ठाम ॥१३५॥

॥ चौपाई ॥ तव हि सैद नासर यो कह्यौ । तुम मेरे भार्गान यहु लह्यो ।
मोकौ देहु जु याहि पढ़ाउ । तुम लाइक करि तुमपै लाऊं ॥१३६॥
पातसाह भाख्यो यहु भाख । पायौ रतन जतन सौं राख ।
क्यामखान सग चढ़े अहेरं । ते सव गये आपुनै डेरैं ॥१३७॥
करमचद घर आयो नाही । रोर परी ददरेवैं मांही ।
येक परेवा सैद पठायो । ये ते मांहि लैन वहु आयो ॥१३८॥
मोटाराजा गयो हिसार । पातसाह कीनौ वहु प्यार ।
कह्यो करमचद मोकौ देहु । जो भावै सो बदलौ लेहु ॥१३९॥
तुरक भयेकी करिहु न चित । याकौ राखो ज्यो सुत मित ।
याकौ करिहौ पच हजारी । सॉचु कहत हौ वाह हमारी ॥१४०॥
कर तसलीम कह्यो यो राइ । दिलीपति जो करे सु न्याइ ।
जो सेवा करिहं सो वांढ़हैं । सोई फूल महेसुर चढिहैं ॥१४१॥
पातसाह देकैं सरपाव । विदा करचो डेरैको राव ।
पातसाह दिल्लीको धायो । क्यामखानु तब सैद पढ़ायो ॥१४२॥
द्वादस हे मीराके नदन । तिनमे क्यामखॉनु जग वदन ।
येक ठौरपढ़न ये जाहि । भोरे लरिहै आपुन माहि ॥१४३॥
रोवत लरत येक दिन जात । वालक आपुन मांहि रिसात ।
कुतुव नूरदी नूरजहाँन । हासीते वैठे है आन ॥१४४॥

तक्यो क्यामखा जात उदास। तबहिं बुलाय बिठायो पास।
पीरसुंवचन तब ही उच्चरै। तै बावा काहे द्रिग भरे॥१४५॥
मारौ थाप चबाऊँ लौन। धनी बावनी मारै कौन।
नैवू और गदौरा आन। दये नूरदी नूरजहान॥१४६॥
लये क्यामखा तब मन आछें। नैवू आदि गदौरा पाछें।
कह्यौ रीत यहु ह्वै इन गोत। खाटे ह्वै फिर मीठे होत॥१४७॥
केतक दिन पढते ही गये। क्यामखानुं पढि पूरे भये।
सैद कह्यौ अव सुनत करावहु। करहु नमाज दीनमे आवहु॥१४८॥
तब क्यामखान विनती कीन। मेरौ हू मन चाहत दीन।
पैं यहु चित मोहि चित माहि। हमसो साक करे को नाही॥१४९॥
नासिर सैद करामत पूरन। जाको कह्यौ होत है दूरन।
यहु चिंता जिन चितको देहु। मेरे वचन मानिकै लेहु॥१५०॥
वडे वडे जगु ह्वै है गाइ। ते तनया देहै करि चाइ।
ह्वै है जोध मडोवर राइ। वहु डोला घर देइ पठाइ॥१५१॥
ह्वै वहलोल दिली सुलतान। दैहै तनया निहचै मान।
मीराकै मुख निकसै वेन। ते सब भये श्रैन ही मैन॥१५२॥
तबही दीनमे आयौ खान। निमल भो मन मुस्सलमान।
जब सब बातिन निमल पायो। तब मीरा दिल्ली ले धायो॥१५३॥
पातसाह देखत हरसाये। मनसब देकै खान वढाये।
पातसाह मीराको प्यार। दिन दिन खासो वढत अपार॥१५४॥
मीराजी जब रोगी भये। पातसाह पूछनको गये।
तब मीराजी ग्रैसे भाख्यो। क्यामखान् मैं सुत करि राख्यो॥१५५॥
जो कबहू मेरो ह्वै काल। याको दीजहु मनसब माल।
मेरै पूत सपूत न कोई। जिनते सेव तुम्हारी होई॥१५६॥
पातसाह भाख्यो जू नीकै। क्यामखानु है लाइक टीकै।
पातसाह उठि डेरै आये। तब मीरा सब पुत्र वुलाये॥१५७॥

कह्यो सुंनहुं तुम सगरे भाई। क्यामखानुंकौ दई बड़ाई।
यहु तुममैं कीनौ सिरमौर। याकौ समझौ मेरी ठौर ॥१५८॥
क्यामखानुंसौ ये सिख भाखी। इनकौ बहुत प्यारसौं राखी।
सिखदे मीरां कलमां कह्यौ। या कलमैंको अमर न रह्यौ॥१५९॥
मीरां भये जबहि बस काल। लह्यो क्यामखा मनसब माल ॥१६०॥

॥ दोहा ॥ पातसाह किरपालु ह्वै, दै हय गय सिरपाव।
दई बावनी क्यामखा, कर्‌यो बड़ौ उमराव ॥१६१॥
ठटा लैन जौ ऊपज्यौ, पातसाह अभिलाप।
क्यामखानुकौ मया करि, चले दिलीमैं राख ॥१६२॥
फौजदार करि क्यामखा, सौंपी दिल्ली ताहि।
आपुन दलबल साजिकै, चले ठटाकौ साहि ॥१६३॥
देस देस बतिया चली, पातसाह घर नाहि।
विना क्यामखा और को, रह्यो न दिल्ली माहि ॥१६४॥

क्यामखांन मुगलनिसौं युद्ध करत है

॥ दोहा ॥ मुगल बिलायत ते चले, हिंद लैनके चाइ।
छलके बलसौ जान कहि, दिल्ली घेरी आइ ॥१६५॥
सुनत बात यहु परजर्‌यो, क्यामखानु चहुवांन।
सौंह आये लरनकौ, दै सतसौ नीसान ॥१६६॥
सुभट सबद सुनि ऊससैं, कादूर तन थहरान।
धौ धौ धौ धौसा करै, धौकत पावहु जान ॥१६७॥

॥ सवैया ॥ बहु सैन बनाइ चढ्‌यो चहुवांन, निसान लये अरिमारनकौ।
अब जैसे गजिंद नरिंद चल्यो, विटपी खल मूर उखारनकौ।
अतिही बलवंत करे करता कर, दंतीके दंत उपारनकौ।
परिहै दलमैं इम क्यांमलखां, जिम चीतौ चलै म्रिग डारनकौ॥१६८॥

॥ दोहा ॥ दिली बिलाइत लरत है, परत महा घमसान।
येक वोर जुझै मुगल, येक वोर चहुवान ॥१६९॥

॥ भुजगी छद जुगम निधि ॥

चढे क्यामखान, लये कर दुधारी।
इतहि चाहुवान, उतहि मुगल भारी ॥१७०॥
बजे सुर नीसान, सु जुझै जुझारी।
गहै कर कमान, चलावै तलारी ॥१७१॥
लरे सुभट जोरै, सुत रनें किसोरे।
सहे झकझोरे, मुरे नहिं मोरे।
फिरे ना वहोरे, करै रज तोरे।
हने गैद घोरे, रहे आड थोरे ॥१७२॥
लरे वहु जुझारी, मरे जोध सूरा।
अरुन भौम सारी, भयो जुद्ध पूरा।
लगे हाथ भारी, गयो छूटि गरूरा।
मुगल सैन हारी, चले भाजि भूरा ॥१७३॥
लर्यो चाहुवाँन, सुजस जगत सवही।
पगनि गज केकान, गये मुग्ल दवही।
सुन्या मुलतान, जित्यो खान जवही।
दयो मनमान, वढ्यौ वहुत तवही ॥१७४॥

॥ दोहा ॥ मुगल लरे सो मरि परे, उवरे गये जु भाग।
खल दादूर हैं वापुरे, क्यामल कारो नाग ॥१७५॥
अैराकी तुरकी तुरग, लूट्यो दरव अनेक।
सव पठये पतिसाह ढिगु, आप न राख्यो एक ॥१७६॥
आनंदित ह्वै छत्रपति, दीनो आदुर मान।
क्यामखानको नाम तव, गख्यो खानु-जहान ॥१७७॥
मद गइद अरवी तुरक, अपतनको सिरपाव।
मनसव वहुत वढाइकै, कर्यो वडौ उमराव ॥१७८॥
जो लौ जीयो जगतमैं, फेरोसाह सुलतान।
तो लौ दिन दिन ही वढ्यो, क्यामखानको मान ॥१७९॥

जवहि भयौ वस कालकैं, फेरोसाह सुलतान ।
तव महमद महमूदनैं, फेरी जगुमैं आन ॥१८०॥
इनहू कीनौ प्यार वहु, पिता करत ज्यो नित्त ।
क्यामखानु अैसे रख्यौ, जैसे भाई मित्त ॥१८१॥
जव महमद महमूद हू, परे कालके जाल ।
तव नसीरखा पुत्र उहि, ठौर गही ततकाल ॥१८२॥
क्यामखानु चहुवान सो, इनहू कीनौ प्यार ।
जो कछु किये सु जांन कहि, इनसौ पूछि बिचार ॥१८३॥
रोगी भये निसीरखां, सव फिरि गये सुभाइ ।
बिन मल्लूखां दूसरौ, निकट न कोउ जाइ ॥१८४॥
मल्लूखा चेरौ हतौ, पाल्यो फेरौसाहि ।
बहुरि करचो परधान वहु, सब जगु मानत ताहि ॥१८५॥
पातसाह जब चलि गये, तबही चली यहु बात ।
दील्लीकैं हित मल्लू नैं, मारचौ है करि घात ॥१८६॥
गोत गैल वुधि होत है, अैसैं कुसल कहत ।
कुलहीनौ मुख लाइये, पूरी परै न अंत ॥१८७॥
कुलहीनौं सुधरै नही, कीजे जतन करोर ।
पाइक तौ फरजी भये, चलै सीसके जोर ॥१८८॥
पाछौ भारी नाहि जिहि, यो चलिहै पग छोर ।
जैसे गुडिया पौछ बिन, उलटि परत सिर जोर ॥१८९॥
जब मरि गयो नसीरखां, कोउ पुत्र न आहि ।
मल्लूखांको तब भई, पतिसाहीकी चाहि ॥१९०॥
कामदार सब मल्लूसौ, राखत है अति नेहु ।
कह्यो तखत पर बैठकै, तुम पतिसाही लेहु ॥१९१॥
क्यामखानुं यहु बात सुनि, सबसौं कह्यौ रिसाइ ।
पातसाह कैतखत पर, चेरौ क्यौं न आइ ॥१९२॥

साहव उत्तिम कीजिये, जो कुलवतो होइ ।
चेरैके चाकर भये, सोभ न पावै कोइ ॥१९३॥
लै तारी गढ कोटकी, उठि आयो परधान ।
काइमखा दीवानकै, आगै राखी आन ॥१९४॥
यहै कह्यौ तव सवनि मिलि, सुनि साहिव दीवान ।
तुम चलि वैठो तखतपर, फेरहु अपनी आन ॥१९५॥
पातसाह तुम दिल्लीके, हम सव सेवक आहि ।
गहर छाडि वैठहु तखत, जो पतिसाही चाहि ॥१९६॥
भये दिलीमें छत्रपति, वडे तिहारे सात ।
तुम तिनके पतिसाह हौ, नाहि नई कछु वात ॥१९७॥
क्यामखानु तव यु कह्यौ, सुनिहु वात परधान ।
मोहि न दिल्ली चाहीये, रचनहारकी आन ॥१९८॥
जिन जानउ मो जीउमें, दिल्ली लैनको हेत ।
द्वै दिनकै सुख कारनै, को सतत दुख लेत ॥१९९॥
जो पाछै पतिसाह ह्वै, कोव धरै मन माहि ।
सतत पहले छत्रपति, जीवत छाडत नाहि ॥२००॥
परधाननि तव यो कह्यौ, सुनि चकवै चहुवान ।
जो तुम दिल्ली लेत ना, देहै मल्लू खान ॥२०१॥
अनत भतारहि भख गई, नैकु न आई लाज ।
येक मरै दूजै रै, यहै दिल्लीको काज ॥२०२॥
जात गोत पूछत नहि, जोई पकरत पान ।
ताहीसो हिलमिलि चलै, पै भजि जाइ निदान ॥२०३॥
ये वतिया कहि उठि गये, मल्लू पास परधान ।
पकरि वाहि पतिसाहिकैं, तखत विठायो आन ॥२०४॥
वात सुनी यहु क्यामखा, तव ही दै नीसान ।
अपनै घरको उठि चल्यौ, चक्रवती चहुवान ॥२०५॥

जवहि क्यामखां चलि गये, मल्लू सुनी यहु वात ।
हय गय दल वलसाजिकै, मारन चल्यो रिसात ॥२०६॥
कोस वीसकै वीचसौ, आगै पाछै जांहि ।
मल्लू दवाइ न सकत है, वै जानत है नाहि ॥२०७॥
जवहि सुन्यौ यों क्यामखा, मल्लू चढ्यौ दलसाज ।
फिरि अहुटौ सन्मुख चल्यौ, ज्यो तीतर पर वाज ॥२०८॥
उत मल्लू इत क्यामखा, भये सनमुख आइ ।
करी घटा घटा छटा, दुदुभ गर्ज मुनाइ ॥२०९॥

क्यामखां मल्लूखांसुं युद्ध करत है

॥ छंद अर्ध भुजंगी ॥

चढ्यौ चाहुवानं, मच्यो घमसान ।
छूटै नाल गोली, वहै करा चोली ॥२१०॥
छुटै चपल वानं, चटकै कमान ।
वहै सेल सागं, सु निकसै द्रुवाग ॥२११॥
लगै सीस ससपर, परै धर मरै नर ।
वरै बरंमं भारी, सुजम धर कटारी ॥२१२॥
हुई मार भारं, सु जुझै जुझार ।
लरै सुभट मनसौ. मिट्यौ हेत तनसौ ॥२१३॥
सु जोधा विरच्चे, गये ह्वै किरच्चे ।
कहूं सिर कहूं धर, कहूं पग कहूं कर ॥२१४॥
लरे बहुत हस्ती, मरे सहित मस्ती ।
परे वहु तुरग, भयो अधिक जगं ॥२१५॥
परी धाम धूम, भई अरुन भूमं ।
सुभट घाव धूमं, मनौ गैंद घूम ॥२१६॥
मच्यो जुद्ध भारी, मलू सैन खारी ।
जित्यो क्यामखान, सु जानत जहान ॥२१७॥

मलूखा परायो, सबै कछु लुटायो।
दिली माहि आयो, लै आपहि छपायो ॥२१८॥

॥ दोहा ॥ फिरै भजोरा भाजतौ, ता पाछै ना जाउ।
सत छाडँ तिह नाह तौ, मोहि क्यामखा नाउ ॥२१६॥
हाथी घोरे दव वहु, लूट लयो चहुवान।
पैठ्यो आइ हिसारमैं, वजत जैत नीसान ॥२२०॥
क्यामखानु वहु वल गह्यो, करै जु इछ्या प्रान।
मल्लूकौ फिरि लरनकौ, नाहि रह्यौ अरमान ॥२२१॥
देस देसकी पेसकस, क्यामखानुकौ आइ।
भले पजाये भोमिया, सगरे सेवहि पाइ ॥२२२॥

॥ सवइया ॥ क्यामखानु चहुवानु खानु सुलतानु साधे,
राव रान आन सब भोमिया पजाया है।
कमधज कछवाहे वैरिया हुमइ भटी,
तूवर गोरी जाटू पाइ लाये है।
तावनीस रोवे नारू नोखर चदेल कालू,
झाव साहुसेन अकलीमसा भजाये है।
माह महमद ममरेजखा इदरीस,
मोजदी मूगल खेतते खिसाये है ॥२२३॥
वैठे ही हिसार नीके साधे चक चार है।
दूनपुर रिनी भटनेर भादरा गरानौ,
काठी वजवारौ और डरत पहार है।
कालपी येटावो और वीचिकै मेवासी सव,
चमकत रहत उजीन और धार है।
पूरव पछिम और उतर दछिन साधी,
दिल्लीमे मलूके नही खुलत किवाड है।
क्यामखा चहुवान मोटे रावसुत तप,
॥२२४॥

दोहा ॥ क्यामखाँनु घर आपनै, मल्लू दिल्ली मांहि ।
वहुत रोस मन दुहुंनकै, कवहू भेटत नांहि ॥२२५॥
काबिलमे तव रहत है, पातसाह तैमूर ।
सप्त दीपमे परगट्यौ, कहत जान ज्यो सूर ॥२२६॥
उत्तर दिछन पूरव पछिम, अगनेई ईसान ।
नैरित वाइव तिमरकी, अस्ट दिसामैं आन ॥२२७॥
चगता आये जगतमैं, कीनौ कर्म इलाह ।
तवके पतिसाही करे, है जाती पतिसाह ॥२२८॥
रूम साम अैराक ली, खुरासान इक धाप ।
भयो तिमर मन हिंदकौ, इत चलि आये आप ॥२२९॥
मलू सुन्यो आयो तिमर, चल्यो लरन दल साज ।
मुगलनिको देखत डर्‌यो, छाडी रज सत लाज ॥२३०॥
तिमर भयो दल धूरिकौ, आयो तिमर रिसाइ ।
मलू जहा डिढु करतु है, तिहा तिमर डिढु आइ ॥२३१॥
नांव तिमर तप तिमरहर, लरन सकत है कोइ ।
लरै सिकदर जुलिकरन, जो अव जगमै होइ ॥२३२॥
मलूवा वपरौ कौन है, जो सनमुख ठहराइ ।
जोति गई मिटि तिमर तै, भाज दुर्‌यो बन जाइ ॥२३३॥
अर्कतूल मलुआ भयो, तिमरल्यंग दल वाइ ।
पल न सक्यो ठहराइकै, डार्‌यो केहू उड़ाई ॥२३४॥
जैत भई तब तिमरकी, लूट्यो ढीली माल ।
आइ बिराज्यो तखतपर, चगता मरद मुछाल ॥२३५॥
मलुआ पाछे दल दये, आपुन ढीली माहि ।
ढिली मडलमैं नैकु हौ, रहन दयो वहु नांहि ॥२३६॥
तिमरलगकै जीवमै, उपजी काबुल चाहि ।
खिदरखानूंकौ सौपकै, दिली चले पतिसाहि ॥२३७॥

खिदरखा दिल्ली रहत, मरद मुछार पठान।
मानस सहस पचास ढिंगु, सवही येक समान ॥२३८॥
तिमरलग जव उठि गये, मलू सुनी यहु वात।
खिदरखानुकौं ना वदै, फूल्यौ अग न मात ॥२३९॥
तव दल वल वहु साजिकै, दिल्ली घेरी आइ।
खिदरखानु ठट्ठु कटक करि, लर्‌यो सनमुख जाइ ॥२४०॥
जूझि गये सूरा सुभट, भार पर्‌यो जव आइ।
मलू भाजि नाहिं न सक्यो, मरयो परयो भुँमि जाइ॥२४१॥
जीते हैं दल तिमरके, मार्‌यो मल्लूखान।
खिदरखानु फूल्यो फिरे, करिहै गर्व गुमान ॥२४२॥
जवहि मलूकी वोरते, भयो नचित पठान।
वस कीने सव भोमिया, वदत न काहू आन ॥२४३॥
सुलताननिको ना वदै, क्यामखानु चहुवान।
वात सुनी जहु खिदरखा, वाढी अधिक रिसान ॥२४४॥
खिदरखानु फुरमान दिय, मोजदीन अगवान।
मार वाधिकै काढिदै, क्यामखानु चहुवान ॥२४५॥

क्यामखा मोजदी जुध करत है

॥ दोहा ॥ रुहतक झज्झर जनम भुमि, मोजदीन अगवान।
फौजदार लाहोरको, है दल वल अनग्यान ॥२४६॥
उन कहि पठ्यो क्यामखा, छाडहु कोट हिसार।
जो तुम गहर लगाइ हो, हमहि न लागै वार ॥२४७॥
पातसाहकौ ना वदहि, सेवा करन न जाहिं।
विनही दीनी वावनी, कहियो किहि वल खाहि ॥२४८॥
तवहि क्यामखा यो लिख्यो, सुनि अगवान गिवार।
को काहूको देतु है, दैनहार करतार ॥२४९॥

दिली दई जिन खिदरखा, तिन मो दयो हिसार ।
ऐसौ कौन जु लइ सकै, जो दीनौ करतार ॥२५०॥
जो चढ़ि आवै खिदरखा, तौ ना तजौं हिसार ।
जौ हिसार अव छांड हौं, हासी हुवै संसार ॥२५१॥
कुतब हमारी मदत है निहचै जियमै जान ।
जो अपनौ चाहै भलौ, जिन आवहि अगवान ॥२५२॥
रोस भयो चिठी पढत, दयो तवही नीसान ।
महा प्रवल दल साजकै, चढि जु चल्यौ अगवांन ॥२५३॥
सुनत वात यहु क्यामखाँ, करयो लरनकौ साज ।
जुझ विना सूझत नही, जिह भाजनकी लाज ॥२५४॥
आवत आवत मोजदी, नेरैं उतरचौ आइ ।
चिठी लिखकै वहुरि इक, मानस दयो पठाइ ॥२५५॥
काहे लरिकै क्यामखाँ, मरिहै वेही काज ।
सुलताननिकै कटकसौं, भाजत कैसी लाज ॥२५६॥
मेरे कटक अनत है, मारि डारिहौं तोहि ।
याते फिरि फिरि कहतु हौं, दया आइ है मोहि ॥२५७॥
क्यामखानु तव यो लिख्यो, सुनि अगवान गिवार ।
तेरी डिठि है कटकपर, मेरि डिठि करतार ॥२५८॥
चिता नैकु न कीजिये, जौ रिप होंहि अनेक ।
मारन ज्यावंनहार है, सु तौ जांन कहि येक ॥२५९॥
ढीठ वसीठन फेर तू, अवहि मिलावहु डीठ ।
ह्वै हैं जाके ईठ विधु, ताकी रहै पटीठ ॥२६०॥
मोजदीन उतते चढ्यो, इतते काइमखांन ।
चाहुवान अगवान मिलि, भलौ कर्‌यौ घमसान ॥२६१॥
जैसी सावनकी घटा, मिली सैन द्वै आइ ।
अधकार ही ह्वै गयौ, धूरि रही जगु छाइ ॥२६२॥

॥ नाराइच छंद ॥

चढे मूछार सूरवा, वजत सार सार ही।
लरत जोध जोधसो, ररत मार मार ही।
भई सुरग भोम है, कटत हाथ पाव ही।
सुभट्ट सीस टूटिहैं, मिटै न चित्त चावही ॥२६३॥
कटे परै उठें लरैं, मरैं विना नही रहैं।
वदै न घाव चोटको, छतीस आवधै सहैं।
परै हथ्यार हाथतैं, भुजा जवैं कटत हैं।
तवै सुभट्ट सूरिवा, करैं हथ्यार देत हैं ॥२६४॥
परे करी तुखार हैं, लरे मरे जुझार है।
गनें गनें न जात हैं, अपार ते अपार है।
खरे महेस जुग्गनि, अनद चैनमैं हसैं।
गिरिज्झ आसमानतैं, सु देखि देखिकैं वसैं ॥२६५॥

॥ दोहा ॥ जवहि कटक दहु औरके, मरे परे घमसान।
तव दलमेंतैं निकसिकैं, चलि आयो अगवान ॥२६६॥
क्याम क्यामखा ही करत, अरु डारत केकान।
इतते निकस्यो क्यामखा, चक्रवती चहुवांन ॥२६७॥
वरछी वाही मौजदी, हन्यो क्यामखा वान।
ये राखे करतार नैं, पर्‌यो भोम अगवान ॥२६८॥
काइमखा चहुवाननै, लये मौजदी मारि।
दुलहु विन न जनेत ह्वै, भाज चले दल हारि ॥२६९॥
सव दल लूट्यो क्यामखा, जीते करी तुखार।
दले दमामे जैतके, उपज्यो चैन अपार ॥२७०॥
सुनी वात यहु खिदरखा, काटि काटि कर खाइ।
मेरे दल वल जिन हनें, तासौं लरिहौं जाइ ॥२७१॥
रैंन दिना चिंता करै, किंहि विधि लग्यैं जाइ।
क्यामखानुकी धावतें, चलत वहुत अरसाइ ॥२७२॥

जवहि सुन्यो यों क्यामखा, वहुत पठान रिसाइ ।
तव मन मांहि विचारिकै, कीनौ यहै उपाइ ॥२७३॥
हुतौ विलाइत खिजरखां, लकव वोज्भरीवाल ।
तासौ कछु पहिचांन ही, यहु टेरचो ततकाल ॥२७४॥
यो लिखि पठयो क्यामखा, तू उठि वेगौ आव ।
मैं तोकौ दीनी दिली, जो लेवैको चाव ॥२७५॥
खिजरखानुं पाती पढ़त, सिर ऊपर धरि लीन ।
उतते दल करि चढ़ि चल्यो, गहर कछू नां कीन ॥२७६॥
लिख पठयों यो खिजरखां, खां जू गहर निवार ।
चढ़ि आवौ ज्यो मिलि चलैं, दिली लैंनकैं प्यार ॥२७७॥
पाती वाचत क्यामखा, चढ्यो वजे नीसांन ।
खिजरखांन सेती मिले, आनंदनि मुलतान ॥२७८॥
खिजरखानुं पाइन पर्‌यो, अंक भर्‌यो चहुवांन ।
यहै कह्यो तव कौन दे, तुम विन दिल्ली आन ॥२७९॥
क्यामखानुं अैसे कह्यो, दिली दई करतार ।
हौ तेरौ संगी भयो, तू अव गहर निवार ॥२८०॥
तवही चढ़े मुलताँन ते, मतौ कर्‌यौ मन माहि ।
राठोरनिकौ साधिकै, तव दिल्लीपर जाहिं ॥२८१॥
सवही मेवासै मलत, आइ लगे नागौर ।
तामै चौंडा वसत हौ, राइनकौं सिरमोर ॥२८२॥
आइ दवायो कोटमैं, अैसी कीनी दौरि ।
चौंडा चढि नाहिन सक्यौ, मूवौ निकसिकै पौरि ॥२८३॥
चौंडा लीनौ मारिकै, भाज चल्यौ सव संग ।
वहुत खदेरे ना लरे, सके कटाइ न अंग ॥२८४॥
कमधज कर वरछी लये, भज्जै इहं उनिहार ।
सांग स्त्रिगसे देखिये, मनहु चले म्रिग डार ॥२८५॥

क्यामखा खिदरखां पठाणसूं जुध करत

॥ दोहा ॥ अप वसि करि नागोरको, चलो दिल्लीकी वोर।
खिजरखानु पुनि क्यामखा, दल वल साजे जोर ॥२८६॥
यहु कहनावत कहत हैं, तवते सकल जहानु।
दील्ली थोरे कागुरे, वहु दल लायो खानु ॥२८७॥
सुनी वात यहु खिदरखा, आयो काइमखानु।
खिजरखानुको सग लै, देत वहुत नीसान ॥२८८॥
चढ्यो खिदरखा दिल्लीते, दल वल साजि अपार।
इत उतके कवि जान कहि, जूज्झन लगे जुझार ॥२८९॥

॥ नाराइच छन्द ॥

चढे जुझार मारके, वदै न घाव सारके।
लरे कटै हटै नही, मरै परै जही तही ॥२९०॥
करी करी लरे मरे, तुरी तुरी किते परे।
सुभट्ट ठट्ट खेतमे, सु घूमि है अचेतमै ॥२९१॥
मुवो सव साथ ही, रह्यो न प्रान हाथ ही।
चल्यो पठान भज्जिकै, दयो न जीव लज्जिकै ॥२९२॥

॥ दोहा ॥ जीते काइमखानजू, भाज्यो खिदर पठान।
खिज रखानुकी वाहि गहि, तखत विठायो आन ॥२९३॥
सवही वात समत्थ है, क्यामखानु चहुवान।
जाकै सिरपर कर धरै, सो दिली सुलतान ॥२९४॥
खिजरखान पतिसाह हुव, करै दिलीमै राज।
चिंता कछु नाहिन रही, पूरै सव मन काज ॥२९५॥
खिजरखानुको रैन दिन, सुखही माहि विहात।
क्यामखानु अरु आप विच, तीमर नाहि समात ॥२९६॥
पाछै सूरिख खिजरखा, यहु समुझि जिय माहि।
क्यामखानु वलवतु हैं, पतियारो कछु नाहि ॥२९७॥
चाहै तासो छाडि है, रासै जानै जाहि।
महावली उमराव है, रहन न दैही याहि ॥२९८॥

राजा अरु परधांन पुनि, जवहि होहि सम दोइ।
पहलैं हनैं सु हनत है, पाछै कछु न होइ ॥२९९॥
यह मनमैं समझी नही, दिली दई करि प्यार ।
कोउ विरवा लाइकै, डारत नाहि उखार ॥३००॥
येक द्यौंस तौ क्यामखां, ठाढे हुते सुभाइ ।
खिजरखांनु दीनौ धका, परो नदीमे जाइ ॥३०१॥
निकसि गयो ज्यो परत ही, खरो रह्यो इक पांन ।
सतत कर रहि है खरौ, इक खांडै अरु दांन ॥३०२॥
मतौ कर्यौ हो खिजरखा, सो जानत हो खांन ।
पैं पतिसाहनिसौ लरे, होत धर्मकी हानि ॥३०३॥
जीयो वरस पचांनुवै, क्यामखानु चहुवान ।
वड़े २ साके करै, गनत न आवै ग्यान ॥३०४॥
साके क्यामलखानके, सागर अपरंपार ।
जो मोकौ आवत हुते, ते मैं करे विचार ॥३०५॥
क्यामखांनकी वातकौ, कर्यौ नही विस्तार ।
भाखै है मैं सुलप अति, अपनी मति अनुसार ॥३०६॥
हतौ हजीरौ दिल्लीमैं, कीनौ काइमखानु ।
लै उत राख्यो छत्रपति, देकै आदर मांनु ॥३०७॥

श्री दीवान ताजखांके पुत्र

१ फतिहखा, २ रुका, ३ फखरदी, ४ मोजन, ५ इकलीमखा, ६ पहाड़ा ।
फतिहखांन मोजन रुका, फखरद्दी इकलीम ।
और पहारा है छठौ, ताजन सुत बलभीम ॥३०८॥

ताजखांको बखांन

पांच पुत्र है क्यामखा, सुनि पिताकी बात ।
विषधर कैसे जान कहि, निस बासुर वल खात ॥३०९॥
ताजखानु महमद्दखा, कुतबखान इखतार ।
मौनुखानु पांचौ सुभट, अरिदल भजनहार ॥३१०॥

खिजरखानु पै ना गये, रह्यो बुलाइ बुलाइ ।
बैठे रहे हिसारमै, कर्यो जूहार न जाइ ॥३११॥
जवहि भयो वस कालके, खिजरखानु पतिसाह ।
तबहि मुबारक साहकौ, दीनौ राज इलाह ॥३१२॥
खिजरखाकै बसमै, नाहिन सुनिये कोइ ।
किर्तघनीकौ जानिये, कबहु भलौ न होइ ॥३१३॥
मुवो मुबारक तब भयो, जगमहमद फरीद ।
पतिसाही करि मरि गयो, जबही काल रसीद ॥३१४॥
ताकौ नद अलावदी, दीनौ राज इलाह ।
भयो अमानतखाँ बहुरि, पूत मुबारक शाह ॥३१५॥
ता पाछै बहलोल हुव, दिली महि सुलतान ।
लोदी अपनी भुजन बलु, साध्यौ हिंदस्तान ॥३१६॥
ढोसी ऊपर अखन है, दिली साहि बहलोल ।
वदै न नदन क्यामखा, परे दहुनमै बोल ॥३१७॥
पातिसाहि अैराकके, तुरग मगाये आहि ।
इत निकसे तब अग्नन नै, नौ चुनि लीने चाहि ॥३१८॥
बात सुनी बहलोलनै, कहि पठयो रिस माहि ।
मेरौ मारग देखीयौ, जौ अमु पठयो नाहि ॥३१९॥
अनन लिख्यो बहलोलसौ, मेरै घोरे लाख ।
पै मैं तेरे लये है मो, जुद्धकी अभिलाष ॥३२०॥
मोकौ इतही पाइये, जब जानहि तब आव ।
ढोसी चर्नै न हीं चलौ, गिरकौ गह्यो सुभाव ॥३२१॥
पातसाह अति पजर्यौ, सुनि अक्खनके बोल ।
पै कछु बल नाहिन चल्यो, बैठि रह्यो बहलोल ॥३२२॥
बावन बर अक्खन करी, पात पात मेवात ।
मेवाती भाजत फिरै, ज्यो रवि आगै रात ॥३२३॥

जौलौ जीयो जगतमैं, वध्यो नही पतिसाहि।
वहै करयो इखतारखां, जोई जियकी चाहि ॥३२४॥
जित गिरवर तितही करी, अखन कोटकी मांड।
रहत भोमिया निकट जे, सबे देत ते डांड ॥३२५॥
आवैरे वीते वरष, देत दुवादस लाख।
आठ अमरसरके भरत, कवितु देतु है साख ॥३२६॥
है चौथो सुत कुतुवखां, बस्यो वारुवैं जाइ।
कोऊ वरना कर सकै, परे भोमिया पाइ ॥३२७॥
वस्यो वगरमै मौनखां, गयो नगरसौ होइ।
आस पासके सब नये, वलु कर सकै न कोइ ॥३२८॥
मौनां क्यामलखांन सुत, कूरमरिप चहुवांन।
जाकै दलकी दहलते, कूतल पर्‌यो भगान ॥३२९॥
ताजखांनु सबमै तिलक, दूजो महमदखान।
दोउ अति नीके भये, सूरवीर चहुवांन ॥३३०॥
ताजखॉनुं महमद्‌खा, दोउ रहे हिसार।
ठौर पिता राखी भलै, हौ दहुवनमैं प्यार ॥३३१॥
ढिल्लीपतिसौ ना मिलै, रिस राखै सिरमौर।
ताक्यो खा पेरोजखां, तवहि गये नागौर ॥३३२॥
नागोरीखा उठि मिल्यो, वहुतै आदुर दीन।
हौ ना वदौ दिलेसकै, भये येकतै तीन ॥३३३॥
हांते कबहू होत नां, रहै रैंन दिन सग।
रानै ऊपर चढ़नकै, करि है मते उमग ॥३३४॥
दल वल करि खा चढि चल्यो, आगै मोकल रांन।
कटकनिके ठटु ठानिकै, आयो दे नीसांन ॥३३५॥
दल वल जोताई मिले, दहू वोरिके आइ।
उत्त मोकल पेरोज इत, जुरे जुद्धके चाइ ॥३३६॥

कमधज कूरम भोमिया, वहु पिरोजकै सग।
रानैहूके बहुत दल, लरत न राखै अग ॥३३७॥
नागोरी वाटी अनी, फूल्यो करत कलोल।
गोल हिरोल चदोल पुनि, जर गोल वर गोल ॥३३८॥
ताजखानु महमदखा, खरे तमाचै दोइ।
देखौ तुम केसी करौ, जैसी तुमते होइ ॥३३९॥

ताजखा महमदखां आगै राना भाग्यो

॥ दोहा ॥ चढे कटक दहु ओरते, मिले वजत निसान।
घमडत हैं मानो घटा, गर्जत हैं मरवान ॥३४०॥
पहलै तौ गोली चली, और छूटी हथनाल।
जिनकी लागी ते परे, ज्यो निकले ततकाल ॥३४१॥
बाँन चले दहुवोरके, वहुत रहे गडि देह।
घाइल अैसे लागि हैं, है मानौ येसेह ॥३४२॥
घोरे वाहे खानपर, रानै अधिक रिसाइ।
धका सहार न सक्यो, छूटि गये तव पाइ ॥३४३॥
भाजि चल्यो पेरोजखाँ, ताकी है नागौर।
पाछै आवै लूटतौं, मोकलसी सिरमौर ॥३४४॥
चार कोस लो गैल करि, लैने जो नीसाँन।
रान चल्यौ चीतोरकौ, चितुमै करत गुमाँन ॥३४५॥
ताजखानु महमद्खा, ठाढे वाही खोज।
रहे तमाचै ही खरे, भाजि गयो पेरोज ॥३४६॥
नागौरीकौ भाजतै, नैकु न लागी वार।
भाकत ही भइया रहे, कहा करै करतार ॥३४७॥
सोच रहे दोउ खरे, रानौ निक्स्यो आइ।
ज्यौं चीतौ अगकौ तकै, परे रोसमे धाइ ॥३४८॥
लरि विचर्यो सीसौदियो, जव हि पर्यो घमसान।
द अपने पेरोजके, नेजे पुनि नीसान ॥३४९॥

पाछै गये पहार लौ, वहुत वढ़ी कर लूट ।
जुगल वाजकै हाथते, गयो चिरीसौं छूट ॥३५०॥
उत ते ये दोऊ फिरै, जैत दमांमे देत ।
रानांकी रज लूट ली, गज हय दर्व समेत ॥३५१॥
अव आये नागौरमें, नेजो पुनि नीसांन ।
लुटवाये पेरोजखा, ते पठये चहुवांन ॥३५२॥
वहुत चप्यौ पेरोजखा, मुख ना सकै दिखाइ ।
वात चले जव जुद्धकी, सुनि सुनि अधिक लजाइ ॥३५३॥
और इतेपर जस जुरे, ताजन महमदखांन ।
काक भये पेरोजके, पढ़िहैं सकल जहांन ॥३५४॥
स्वांम भगे सेवक लरै, ते रजवंत विचार ।
जर उखरे तरु ठाहरै, तैसौ यहु अधकार ॥३५५॥
चोरी डिठ पेरोजखां, जव ये दोउ जाहि ।
अैयौ ग्वैयोही रहै, हसि वोलत है नाहि ॥३५६॥
जो आपुन कापुरस ह्वै, सुभट न भावै ताहि ।
जैसौ कोऊ आप ह्वै, करै सु तैसै चाहि ॥३५७॥
चोरी डिठ पेरोजखा, रोस भरे चहुवान ।
अनरसमै ही ऊठि चले, ताजन महमदखान ॥३५८॥
वबु दमामेकी सुनी, रिस उपजी चित खांन ।
अपनै दलसौ यो कह्यौ, इनको देहु न जांन ॥३५९॥
नागोरी पेरोजखां, दल वल साजि अपार ।
आइ दवाये लरनकौ, फिरे जुगल जूझार ॥३६०॥
जुद्ध मच्यौ नॉरद नच्यो, भाज वच्यो नहि सूर ।
चितसौ जूझे जोध तिन, हितसौ ले गई हूर ॥३६१॥
परे खेतमैं ताजखा, जवहि होइ घनघाइ ।
निकसे महमदखांनु तव, नाहि सके ठहराइ॥३६२॥

नागौरीखा जीतिकै, बहुरि गयो नागौर।
रहे खेतहीमै परे, ताजखानु सिरमौर ॥३६३॥
घाइल फिरहिं उठावते, उत आये राठौर।
परे हुते बेसुध भये, ताजखानु जा ठौर ॥३६४॥
देखत ही रनधीर तब, लैके गये उठाइ।
जबहि घाव नीके भये, दये हिसार पठाइ ॥३६५॥
बडो कर्‌यो करतारनै, ताजखानु चहुवान।
इक जूझे पुनि ऊबरे, प्रगट्यो सुजस जहान ॥३६६॥
महा सुभट ताजन भयो, लयो सुजस संसार।
भले पजाये भोमिया, करवर अरु करवार ॥३६७॥
ताजनकी तरवारकौ, डर उपज्यो नागौर।
भै मानै पेरोजखा, खुलत न कबहू पौर ॥३६८॥
हने खेतरी खरकरी, बौहानो करि बैर।
पाटन रेवासो मिले, बस कीनी आवेर ॥३६९॥
कछवाहे निरवान पुनि, तूवर और पवार।
इनपै लीनी पेसकस, जानत सब संसार ॥५७०॥
॥ सवैया ॥ क्यामखानुनदन अरिकदन ताजन डर डरपन नागौर।
हने खेतरी और खरकरी बौहानौ पाटन इक दौर।
रेवासौ दलमल्यो ते गवर गढ आवेर खुलत ना पौर।
तूवर पवार देवरे कूरम साचे चहुवान सिरमौर ॥३७१॥
॥ दोहा ॥ जबहि भये बस कालके, ताजखानु चहुवान।
राखे तबहि हिसारम, क्यामखान असथान ॥३७२॥
महमदखान जब मरि गये, राख्यो हासी माहि।
भाई और हिसारमे, कोऊ राख्यो नाहि ॥३७३॥
ताजखानु जब चलि गये, फतिहखानु सिरमौर।
बठो कोट हिसारमै, भले पिताकी ठौर ॥३७४॥

श्रीफतिहखांके पुत्र

१ जलालखां, २ हैवतसाह, ३ महमसाह, ४असदखां, ५दरियासाह, ६ साहमनसूर, ७ सेख सलह, ८ वलो, ९ सग्रामसूर, १० हेतम ।

खां जलाल हेतम बलो, सलह साह मनसूर ।
दरिया हैवत असद महमद, जुद्ध सूर संपूर ।।३७५।।

अथ फतिहखांको वखांन

फतन भयो अतही प्रवल, नम्यो न काहू सीस ।
काहूकौ मानत नही, येक विनां जगदीस ।।३७६।।
नीव दई षटकोटकी, येक द्योस कहि जांन ।
नगर फतिहपुर आपनौ, कर्यो फतन असथान ।।३७७।।
नयो वसायो फतिहपुर, हौ सरवर उद्यान ।
नांव आपनै फतेहखां, कर्यो वड़ो असथांन ।।३७८।।
पदरहसै जु अठौतरै, बस्यो फतहपुर बास ।
सुद पाचै तिथ ही तवहि, और चैतकौ मास ।।३७९।।
संन सत्तावन आठसै, जगमै कर्यो प्रकास ।
माह सफर दिन वीसवै, वस्यो फतहपुर बास ।।३८०।।
कोट चिन्यो नीकै नखित, सुथिर कर्यो करतार ।
आस पासके भोमियां, आवहि करन जुहार ।।३८१।।
पल्हू सहेवा भादरा, पुनि भारंग अस्थांन ।
और बाइलै कोट ये, कीये फतन चहुवांन ।।३८२।।
पातसाहकी चोखसौं, रहि ना सके हिसार ।
कर्यो फतिहपुर फतिहखां, इतहि आइ तिह बार ।।३८३।।
प्रथम रनाउमै रहे, जो लौ चिनियो कोट ।
पाछै आये फतिहपुर, लये साथ दल कोट ।।३८४।।
पातसाह वहलोल चित, उपजी रिनथंभ चाहि ।
मिल्यो न मोसौ आइकै, हेंदू कोधौ आहि ।।३८५।।

ढल बल सजि लोदी चल्यो, रिनथभौरको लैन ।
दूर बिना डिठ ना परै, येक भये दिन रैन ॥३८६॥
सुनी फतिहखा बात यहु, दल बल साजि अपार ।
मारगमैं बहलोलकौं, कीनो जाइ जुहार ॥३८७॥
लोदी देखत फतनकौ, बहुत बडाई दीन ।
क्यामखानके नावते, अक बारनि भर लीन ॥३८८॥
नाव सुनत ही यो कह्यो, तब लोदी पतिसाह ।
फतिहखानके मिलत ही, दीनी फतह अलाह ॥३८९॥
परधाननिसौ यो कह्यो, बार बार सुलतान ।
कचनको मानस तक्यौ, फतिहखानु चहुवान ॥३९०॥
रिनथभोरहू मैं सुन्यो, आवत है बहलोल ।
तब माडौकी छत्रपति, उनहू लीनौ बोल ॥३९१॥
ताकौ नाव हिसामदी, माडौको सुलतान ।
रिनथभोरकी भीरकौ, आयौ दै नीसान ॥३९२॥
जब इतते लोदी गयौ, दल बल लये अपार ।
गढई भयौ हिसामदी, नाहि सक्यौ करि रार ॥३९३॥

फतननैं हिसामदी माडौकौ पातसाह मार्‌यो

येक द्यौस बहलोलनै, फत्तन लयौ बुलाइ ।
प्यार कियौ आदर दियौ, बात कही बिरदाइ ॥३९४॥
दादे तेरे क्यामखा, कैसे कीने काम ।
फतिह करौ रिनथभकौ, फतिह तिहारै नाम ॥३९५॥
फतिहखानु ह्वैकै बिदा, चले लगे गढ जाइ ।
आगै साह हिसामदी, लर्‌यौ सनमुख आइ ॥३९६॥
खोनि पौरि हिसामदी, देख्यौ थोरौ संग ।
आपुन बहु दलबल लह्यो, आये लरन उमंग ॥३९७॥

॥ अर्धभुजंगी छंद ॥ इतहि चहुवानं, उतहि सुल्लतानं।
चले नाल वान, पर्‌यौ घमसान ॥३९८॥
वहै सांग भारी, गडै तन कटारी,
लगै चोट कारी, मरै वहु जुझारी ॥३९९॥
परे राव रान, पर्‌यौ सुल्लितान।
जित्यौ फतिहखानं, भयो जस जहानं ॥४००॥

॥ दोहा ॥ दुहूं वोर सूरा कटे, वहुत परचो घमसांन।
बादै हन्यौ हिसामदी, जैत भई दीवांन ॥४०१॥
काट्यो सीस हिसामदी,पठयो ढिग पतिसाह।
हर्षवंत छत्रपति भयो, देख्यौ नीकै चाहि ॥४०२॥
फतिह करचो रिनथंभ तन, पैठौ गढमै जाइ।
पातसाह बहलोलनै, पाछै देख्यौ आइ ॥४०३॥
गढ़ लै दिल्लीकौ चल्यौ, लोदी साह पठान।
फतिहखांनु चहुवानकौ, दीनौ मनसब मान ॥४०४
जैत पत्र लै फतिहखा, आयौ अपनै देस।
थर हर कपै भौमिया, जबते कर्‌यौ प्रवेस ॥४०५॥
नारनोलते अखनकी, आई यहै पुकार।
मेवाती सबही मिले, माड्यौ चाहै रार ॥४०६॥
कै तुम आवहु आपही, कै दल देहु पठाइ।
भय्यनकौ यहु काम है, संकट होहि सहाइ ॥४०७॥
नारनोलकौ फतिहखा, दलवल दये पठाइ।
अंखिन खिल्यो अति देखकै, फुल्यो अग न माइ ॥४०८॥
मेवाती उतते चले, लागे ढोसी आइ।
इतते चढ़ि इखतारखां, सनमुख लीने आइ ॥४०९॥
मार परी दहु वोरते, जूझि गये जूझार।
मेवाती दल निवल ह्वै, हारि चले तजि रार ॥४१०॥

वादा पहुच्यौ चिमनकौ, दुदुभ लयो छिडाइ ।
जैत भई सब जग सुनी, अखन न अग समाइ ॥४११
फतिहखानु दल फतिह कर, आये लै नीसान ।
सदा फतिहपुरमे बजै, रससौ सुजस जहान ॥४१२॥
फतिहखानुके दल प्रबल, भये येकतें येक ।
कौन कौनकौ जावल्यौ, मौहे सुभट अनेक ॥४१३॥
काधिल रिनमलराइकौ, दयो खेत विचराइ ।
सीस कटे वहु गुन लर्‍यो, वहु गुन दये दिखाइ ॥४१४॥
सारौ सागै रानकौ, अजा साखलौ नाव ।
फतिहखानकै कटकनै, मारि गिरायो ठाव ॥४१५॥
तिह समये चीतौरहौ, आपुन फतन मुछार ।
स्वामि विना सेवक लरे, सुजस भयो संसार ॥४१६॥
जेते है दल फतनके, राठोरनसौं रार ।
जो आपन ह्वै सापुरस, तिह सेवक जूझार ॥४१७॥
तैसी ही वुधि उपजत, वैठत तैसे पास ।
जान कहै यामै नही, अत आदिकी रास ॥४१८॥

फतननै मुसकीखा किररानी मार्‍यो

किररानी हौ जातकौ, मुसकीखा तिहि नाम ।
आयो फत्तनसो लरन, खोवन अपनी माम ॥४१९॥
इतने फतिहखा चढ्यौ, दलवल साजि अपार ।
सरसैमं मिलि दुहुननै, सरस मचाई रार ॥४२०॥
॥त्रिभगीछद॥ उतहि पठान, इत चहुवान, गज केकान जोधजुरे ।
गोली वहु छुटै, करपग टुट्टै, मस्तक फुटै नाहि मुरे ॥४२१॥
लगे तन वान, निकसै प्रान, जूझै ज्वान थकि न रहै ।
वरछी अनियारी, तेग दुधारी, काटै भारी सूर सहै ॥४२२॥

॥ दोहा ॥ वहुत भयो जुध ना मिटै, तव वादै असु डरि ।
नारि काटि करवारसौ मुसकी दीनौ डारि ॥४२३॥
जैतपत्र लै फतिहखा, आये अपनी ठौर ।
बहुरि करी आवेर पर, चाहुवांन दै दौर ॥४२४॥
लूटि लई आवेर सव, गये भोमिया भाजि ।
नीकी विधिसौ लरि मुये, हौ जिनके मुंह लाज ॥४२५॥
आयो फतन फतिह कर, फूल्यो अग न माइ ।
वहुरि भिवानी पर चल्यो, नीकी सैन वनाइ ॥४२६॥
जाइ भिवानी घेर ली, दल-वल अमित अपार ।
आगै जाटू जावले, भले लरे जूझार ॥४२७॥

फतननैं भिवानी मारी बंधकी करी

॥धवल छंद॥ उत जाटू चहुवान है, भयो जुद्ध पर्‌यो घमसांन है ।
उडि धूरि गई असमांन है, कहू दिष्ट न आवत भांन है ॥४२८॥
चलै गोली वान अपार ही, वहै जमधर अरु करवार ही ।
वरछी ह्वै जा हिंदु सार ही, परे जाटू होइ सु मार ही ॥४२९॥

॥ दोहा ॥ फतिह फतिहखा की भई, जाटू हारे अत ।
लूटि भिवानी बंधकी, आने पकर अनत ॥४३०॥
नीके मारे जोध दल, फतिहखानु चहुवांन ।
अैसौ कौन जु लरि सकै, कहौ भोमिया आन ॥४३१॥
जोधैकै जियमे परि, करौ फतनसौ सुक्ख ।
नातौ करिहौ ज्यौ मिटै, दुहू वोरकौ दुक्ख ॥४३२॥
जोधै पठियो नारियर, फतन लीनौ नाहि ।
काधिल वहु गुनहन्यौ हौ, रिस राखत मन माहि ॥४३३॥
महमदखां सुत समंसखां, तवहि जूझनू नाहि ।
उतहि नारियल लै गये, उनहू कीनी माहि ॥४३४॥

बहुरि समसखा जो कह्यो, उत व्याहनको जाइ ।
जौ न रहौ करवार सग, डोला देहु पठाइ ॥४३५॥
यहै बात वै करि गये, डोला दयो पठाइ ।
मीराजी जो कह्यौ हो, मिल्यौ समै वहु आइ ॥४३६॥
पातसाह वहलोलनै, फत्तन लयो बुलाइ ।
निस दिन राखे निकट ही, छिन छिन प्यार जनाइ ॥४३७॥
येक द्योस बहलोलनै, अैसें कह्यौ विचार ।
हम तुम नातो चाहिए, बढै प्यारम प्यार ॥४३८॥
अदल वदनको साक ह्वै, इछ्या पूजै प्रान ।
हम लोदी है जातके, जो तुम हो चहुवान ॥४३९॥
तबही कह्यो जो फतनने, बदले साक न होइ ।
मेरे तो नाही सुता, अब अनव्याही कोइ ॥४४०॥
पातसाह मान्यौ बुरौ, फतन चढ्यौ रिसाइ ।
बहुरौं दिल्ली ना गयौ, बैठ्यौ अपने आइ ॥४४१॥
सममखानु चहुवानसौ, कहि पठयो पतिसाह ।
अदल बदल नातौ करै, जूहै जीवमें चाहि ॥४४२॥
सुनी बात यहु समसखा, बहुत बधाई कीन ।
उहि तनया अपसुत बरी, बहन आपनी दीन ॥४४३॥
फत्तन जीयो जबहि लौ, नाहिन बद्यो पठान ।
सीस न नायो दिल्लीकौ, जानत सकल जहान ॥४४४॥

॥ सवैया ॥

ताजन अस विध्वस धरा सबहि भुमिया भुज पानि पजाय ।
मारि लयो सुलतान हिसामदी, जाटू भिवानीके धूरि मिलाये ।
चिमनको हन लीनौ नीसान, भजाये है काधिल जादौ रिमाये ।
लूटि आबेर लयो रिनथभ, जहानमे फत्तनको जम छायो ॥ ४४५॥

श्री दीवान जलालखाँके पुत्र

१ दौलतखा, २ अहमद खा, ३ नूरखा, ४ फरीदखा, ५ निजामखा,

६ पहाड़खां, ७ लाडखां, ८ दाऊदखा, ९ अवन, १० महमदमाह ।
दौलतखा, अहमद अवन, लाड फरीद निजाम ।
महमद नूर पहारखां, खां दाऊद समांम ॥४४६॥

जलालखांको वखान

जवहिं भये वस कालके, फतिहखानु सिरमौर ।
तव जसवत जलालखां, भये पिताकी ठौर ॥४४७॥
कोट करयो ही फतिहखां, तापर कीनी और ।
कीनी खांन जलालनै, वडड़ी वाँकी पौर ॥४४८॥
दिल्लीकै पतिसाहकी, वदैनखांनु जलाल ।
नागौरीको दुख दये, लूटि लूटि लै माल ॥४४९॥
नागौरीखां रिस भर्‍यो, दल कीने अनग्यांन ।
वीरी फेर्‍यो सभामैं, लयो मुगल चौपांन ॥४५०॥
कटरा थल जागीर ही, इत दल साजे आइ
सुनियत वात जलालखां, वैठ्यौ सेन वनाइ ॥। ४५१॥

जलालखां चौपानखां मुगल आगै जीत्यौ

उतते आयो रोसमैं, लरन चौप चौपान ।
इतते दौर्‍यौ अतुलि वल, खां जलाल चहुवांन ॥४५२॥
येक वार छाडे भले, ताते मुगलनि वांन ।
किते येक घाइल भये, मानस अरु केकान ॥४५३॥
जवहि जलौ सव संगसौं, लई येक वर वाग ।
सके न वान चलाइकैं, गये मुगलवा भाग ॥४५४॥
जान तक्यौ चौपानखा, पुंहच्यौ खानु जलाल ।
मनहु वाज चिरिया गही, पकर लयो ततकाल ॥४५५॥
छाडि दयौ चौपानखा, दयो नितंवनु दाग ।
हाथी घोड़े दर्व रजु, लाज गयो सव त्याग ॥४५६॥

तव घर आयो जीतिकैं, देत जैत नीसान ।
खा जलालकी सर करै, को है ऐसो आन ॥४५७॥

जलालखानें छापौरी आंवेर फतिह की

॥ दोहा ॥ छापौरी ऊपर चढ्यो, फिर चकवै चौहान ।
उतके अनगन भोमिया, मारि कर्‌यो घमसान ॥४५८॥
वहुरि गये आवेर पर, मारि मिलाई धूर ।
पै भुमिया नीके लरे, मरे लाज सपूर ॥४५९॥
हाथीखान जलाल को, भुमियनि घेर्‌यो आन ।
दलमैं काहू ना लग्यो, तवयो आप दीवान ॥४६०॥
लोग लगे हैं लूटको, काहूको सुधि नाहि ।
अपनी भुज वर खा जलो, आइ पर्‌यो उन माहि ॥४६१॥
करी लये वै जात हे, पुहचे जल्लोखान ।
छाडि गये ज्यो लै भजे, ऐसे लाये वान ॥४६२॥
तव घर आये जीतिकैं, खा जलाल चहुवान ।
सूरत्तनको जगतमैं, सव को करत वखान ॥४६३॥
समसखानु जव मरि गयो, फतिहखानु तिह ठौर ।
व्याह्यौ हो वहलोलकैं, वदत न काहू और ॥४६४॥
भाई और विमात है, तिनही न वाटो देत ।
जो कछु उपजै जूंभनू, मवै आपही लेत ॥४६५॥
तव जोधापै चलि गयो, नाव मुवारकसाह ।
नाना जू उपर करहु, ज्यों हम होइ निवाह ॥४६६॥
तव जोधैंने यो कह्यो, मोते कछू न होइ ।
मामू तेरे निकट है, वीका वीदा दोइ ॥४६७॥
तवहि मुवारकसाह उठि, आयो मामू पास ।
वैंहू भीर न कर सकैं, तव उठि चल्यो निरास ॥४६८॥

उतते आयो फतिहपुर, ताक्यो खानु जलाल।
बहुत प्यारसेती मिल्यौ, भर लीनो अंकमाल ॥४६९॥
कह्यो मुबारक साहनै, हौ आयो तुम ताक।
जोधं बीकै हौ फिर्यौ, गनै न कोऊ साक ॥४७०॥
सबै डरै बहलोलते, ऊपर करै न कोइ।
काम हमारो जल्लोजू, तुमते ह्वै तो होइ ॥४७१॥
जलो कह्यौ बहलोलते, डर्यो न मेरो बाप।
अब जो हौ बाते डरौ, खोर लगाऊं आप ॥४७२॥
खां जलाल तब कटक करि, गये जूझनू माहि।
फतिहखांनुके दल भगे, जूझ सक्यो को नाहि ॥४७३॥
तबहि मुबारकसाहकौ, दयो जूझनू राज।
फतिहखांनु उत मरि गयो, पूजे सब मन काज ॥४७४॥
फतिहखांनु जब मरि गयो, सुत समस सिरमौर।
महमदखां टीकौ कर्यौ, गई मुबारक ठौर ॥४७५॥
रह्यौ लुहागर जाइकै, खांनु जलाल जुधार।
नागौरीकौ देत दुख, पकरे बोट पहार ॥४७६॥
सूनो फतिहपुर सुन्यौ, चित बीदा ललचाइ।
जानत काहू भांतिकै, गढ़मै पैठौ जाइ ॥४७७॥
बीदा दल बल जोरिकै, नरहर उतर्यो जाइ।
खानुं दिलावरसौ मिल्यौ, बात कही समझाइ ॥४७८॥
नांहि फतिहपुरमै कोउ, तुम चलि मोकौं देहु।
देउं रुपया दस सहस, अरु इक तनया लेहु ॥४७९॥
सुनियहु बात पठांन कें, भाई है मन मांहि।
देइ दमामो उठि चल्यो, गहर लगाई नांहि ॥४८०॥
आवत आवत गोवरै, उतरे दोउ आइ।
भलो महूरत ना लहै, पैंठे गढ़मैं जाइ ॥४८१॥

मानस दोर्यो नगरकौ, गयो लुहागर माहि।
यहँ कहँ दीवानजू, फिर गढ पावो नाहि ॥४८२॥
वीदा आया कटक करि, खानु दिलावर सग।
अैसौ कौन जु करि सकै, तुम विन उनसौं जग ॥४८३॥
जल्लीको वेटो वडौ, दौलतखा तिह नाम।
वात सुनत ही चढि चल्यो, अचवन नीर हराम ॥४८४॥
आइ रही थोरी निसा, तव गढ पैठ्यो आन।
दौलतखा जल्लो नदन, देत जैत नीसान ॥४८५॥
तव वीदा विडुरन लगे, लाग्यो डरुन पठान।
दहदह हल खलभल भई, आये दौलतखान ॥४८६॥
आप आपकौ भजि गयै, कमधज और पठान।
त्रास परे ज्यो वाघकी, भग्गे गऊ उद्यान ॥४८७॥
पाछैते आयौ उतहि, खा जलाल चहुवान।
जैत भई है पुत्रकी, वहु सुख उपज्यो प्रान ॥४८८॥

॥ सवैया ॥

खा जलाल, मरद मुछाल, चौपानकौ घान मैदानमें कीनौ।
छार करी है, छपोलिय जरिकै, मरिहिकै जु लुहागर लीनौ।
गज अंवेर, भये सव वरिय, टाक समसखा ह्वै रह्यौ हीनौ।
जूझनू आनि, विठायो भुजा गहि, टीको मुवारकसाहको दीनौ ॥४८९॥

श्री दीवान दौलतखाके पुत्र

१ नाहरखा, २ होवनखा, ३ वाजीदखा।

॥ दोहा ॥ नाहरखा वाजीदखा, होवनखा जुझार।
दौलतखा नदन नरिंद, तीनौ मरद मुछार ॥४९०॥

दौलतखाको वखान

जवहि भये वस कालकै, खा जलाल सिरमौर।
तव दौलतखा जान कहि, वैठे उनकी ठौर ॥४९१॥

दौलतखासौ खेत चढि, लरै सु अैसी कौन ।
भै माने भरमै फिरै, दुर्जन छाडै भौन ॥४६२॥
बैरी आये नाक सव, घर भाकनकी आन ।
आक ढाक छपते फिरै, हाक धाक चहुवांन ॥४६३॥
बिरद वहत इन वातके, दौलतखां दीवांन ।
ना भाजौ जो आइ हैं, लरन सात सुलतान ॥४६४॥
और करी ही आन यहु, नाहिन लेउ अकोर ।
जैसी कौड़ीकौ गनौ, तैसी लाख करोर ॥४६५॥
और कहत हे वात यहु, जौ विन पावै कोइ ।
कौड़ी हाथ न लाइ हौ, अरव खरव जो होइ ॥४६६॥
आवै जिती अगुस्ट तर, सीव न दावंन देउ ।
और पराई भूमिकै, रचक दावन लेउ ॥४६७॥
दौलतखांमै ही कछू, रचनहारकी जोत ।
बचन जु मुखते उच्चरत, सोई निहचै होत ॥४६८॥
बीका ढोसी गयो हौ, उतते आयो भाजि ।
· ··रन चित चोख धरि, चल्यो उतहि दल साजि ॥४६९॥
पाटोधै डेरा भयो, तव पठये परधान ।
लूनकरन चिट्ठी लिखी, करिकै वहुत गुमांन ॥५००॥
दौला चीठी देखितै, वैगौ मोपै आइ ।
जौ अपनौ चाहै भलौ, तौ कछु भुगत पठाइ ॥५०१॥
वाचत ही अति पर्जर्‌यो, खा जलालकौ पूत ।
कह्यौ काम लै भाड़कौ, या चीठीमै मूत ॥५०२॥
परधांननिकै देखते, मूत्यौ चीठी माहि ।
जरि वरिकै क्वैला भये, वोल सके कछु नांहि ॥५०३॥
वाधी अचर वसीठके, वारू रेत मगाई ।
लूनैकै सिर रेत है, जो नां लरिहै आई ॥५०४॥

लूनंसेती यौं कह्यौ, जो तू चढ्यौ तुपार।
आई जो आयो नही, तौ रासिन्भ असवार ॥५०५॥
परधाननिको ऱके दै, काढे वाही ऱार।
कह्यो वसीठ न मारिये, नातर डारत मार ॥५०६॥
जवहि गये परवान उठि, सोच भयो पुर माहि।
तव दौलतखा यो कह्यौ, वाकं घर सिर नाहि ॥५०७॥
लूनकरनके ढिग गये, फीके मुख परधान।
मकल वचन परगट करे, कहे जु दौलतखान ॥५०८॥
लूनकरन सुनि रिस भर्‍यो, तव यहु कर्‍यो विचार।
आवत याकौ मारिहैं, पहलं ढोसी मार ॥५०९॥
उतते चढि ढोसी गयो, दलवल लये अपार।
आगै रहत पठान हे, नीके लरे जुझार ॥५१०॥
तुरक मान कीनी मदत, जाँनत सकल जहान।
हेंदू मारे खेत घर, भली पर्‍यो घमसान ॥५११॥
लूनकरन मार्‍यो उतहि, लूटि लयो सव साथ।
तुरक मान कवि जान कहि, भले नगाये हाथ ॥५१२॥
पहले हीते जो कह्यो, दौलतखा दीवान।
सोई निवर्‍यो होइकै, अचल वचन चहुवान ॥५१३॥
दौलतखा वाको वली, ना कौ गजै ताहि।
डाको वाजै जैतको, साको मारहि साहि ॥५१४॥
वाकै वाकै ही वने, देखहु जियहि विचार।
जो वाकी करवार है, तौ वाको परवार ॥५१५॥
वाकैसी सूघी मिलै, तौ नाहिन ठहराइ।
ज्यो कमान कवि जान कहि, वानहि देत चलाइ ॥५१६॥

सुलतान वावरसु दौलतखा मिल्यौ

वावर काविलते चल्यौ, ढीली देखन चाहि।
भेख कलन्दरको कर्‍यो, येक वाप सग ताहि ॥५१७॥

आवत आवत फतिहपुर, इक दिन निकस्यौ आइ।
मिलि दीवानसौं यो कह्यौ, येक मंगावहु गाइ ॥५१८॥
भूखौ है दिन तीनकौ, वाघ हमारौ आज।
दीजै गाइ मगाइकै, ज्यौं पूरै मन काज ॥५१९॥
दौलतखां दीवाननें, दीनी गाइ मंगाइ।
देखौ मेरे देखतै, वछुवा कैसे खाई ॥५२०॥
मारनको वछुआ उठ्यौ, निकट तकी जव गाइ।
हाक दई दीवाननै, सिघ सक्यौ नहि जाइ ॥५२१॥
वाघ चलै उठि गाइकै, फिर हटकै दीवांन।
उहि ठौर ठाढ़ौ रहै, गऊ न पावै खांन ॥५२२॥
तव वावरनै यौ कह्यौ, खा देखह जु गाइ।
जौ तुम यासौ यों करी, तौ......रि जाइ ॥५२३॥
डिस्ट करेरी सापुरस, सिघ न सकै सहार।
मद कुजरको सूकि है, सुनिकै सुभट हकार ॥५२४॥
वावर जव इततै गयो, देख्यो अलवर जाइ।
हसनखांनकै कटककै, देखि रह्यो भरमाइ ॥५२५॥
उतते ढीलीको गयौ, तक्यों सिकदर साह।
पाछै काविलकौ गयो, सकल हिद अवगाह ॥५२६॥
पूछन आये लोग सव, ढिली मंडलकी वात।
तव वावरनै यो कह्यौ, तकी तीनही जात ॥५२७॥
तीन पुरष अैसे तके, सगरे हिदसतान।
तिनकी सम कौ जगतमै, डिस्ट न आवै आन ॥५२८॥
येक सिकंदर आपही, ढीलीको पतिसाह।
पुनि मेवाती हसनखां, जाकै कटक अथाह ॥५२९॥
तीजौ दौलतखां तक्यौ, नगर फतिहपुर आइ।
जाके डरते वाघहूं, मार सक्यो नां गाइ ॥५३०॥

दौलतखा चहुवानकैं, कीजै कहा बखान ।
दीनदार दातार है, पुनि जूझार दीवान ॥५३१॥

दौलतखानैं गौर निरवान मारे

लूट चले नागौरके, गाव गौरि निरवान ।
दौलतखा यहु बात सुनि, चढ्यौ बजे निसान ॥५३२॥
मारगमे घेरे सकल, गौर और निरवान ।
मच्यौ जुद्ध नारद नच्यौ, पर्‌यौ बहुत घमसान ॥५३३॥
जीते अत दीवानजू, दुर्जन मारे कूट ।
दौलतखा चहुवाननें, लूट लइ सब लूट ॥५३४॥
चढ्यौ अहेरै येक दिन, दौलतखा दीवान ।
बाज कुही बहरी जुरे, बासे सग अनग्यान ॥५३५॥
बहरी छाडी कूजको, गई निकट आकास ।
डिष्ट कहू आवै नही, उठि आये तजि आस ॥५३६॥
जात जात बहरी गई, उतरी जाइ हिसार ।
उतहि बुलावत बाजकू ठाढे मीर सिकार ॥५३७॥
सौपी लै सिकदारको, राखी करिकै प्यार ।
दौलतखा यहु बात सुनि, लई हिसार कतार ॥५३८॥

दौलतखां आगे मुहवतखा साराखानी भाग्यो

हो सिकदार हिसारकौ, नाव मुहबतखान ।
साराखानी सैन सजि, आयौ लरन पठान ॥५३९॥
दौलतखा यहु बात सुनि, नासौ उतरे जाइ ।
उतते वहु उतते चढे, मिली सैन द्वै आइ ॥५४०॥
महवतखानैं दूरतें, देख्यौ दौलतखान ।
मुख फीकौ उर धाधकी, बिचलन लागे प्रान ॥५४१॥

सूधी कही पठांननै, अपनै दलसी वात ।
दौलतखा चहुवानसौ, मौपे लर्‌यौ न जात ॥५४२॥
यौ कहि मिटि कै उठ चल्यौ, छूट गयौ है धीर ।
निकसि गयौ ज्यौ वाटमै, तन उपजी भै पीर ॥५४३॥
देत दमामे जेतके, आयौ दौलतखांन ।
कोट सुभट संमडिष्टही, मारत है चहुवांन ॥५४४॥
खा सहावसौ खेत चढ़ि, नीकौ कर्‌यौ बचाव ।
जो को नातौ पालिहै, सो ना ताकत दाव ॥५४५॥
आपहि मारत आपही, सु कर्मांहिसो जात ।
गोत घाव जो कीजीये, मनहु करी अपघात ॥५४६॥
डारी येक डुराइये, डोरि हिडारि अनेक ।
जे उपजे रज येकते, है तिनकी रज येक ॥५४७॥
जो रज खोवै गोतकी, लजत नांहि ज्यो मांहि ।
कै वाहूमें रज नही, कै उहि रजकौ नाहि ॥५४८॥
दुख पावत दुख गोतकै, है सु तिलक कुल अैन ।
फलिका पाइ पिरातु है, नींद न आवत नैन ॥५४९॥
दौलतखाके सुभ वचन, सुनहु सबै दै चित्त ।
तीन बात दीवांनजू, कहत रहत यो नित्त ॥५५०॥
करता जानहु येक करि, जिन मन आनहु दोइ ।
सब रचना आपै रची, संगी लयो न कोइ ॥५५१॥
धीरज देहु न छाड़िकै, डरहु न विन करतार ।
कहा भयो दुर्जन भये, जौपै लाख हजार ॥५५२॥
कहा भयो कवि जांन कहि, बैरी बकी कुबात ।
कबके गिर गिर कहत हैं, पै गिरना गिरजात ॥५५३॥
और कहत दीवांन जू, समझहु वात विवेक ।
न्याइ समै दुर्जन सजन, दोऊ जानहु येक ॥५५४॥

भयो सिकदर छत्रपति, मर्‌यो जबहिं बहलोल ।
दौलतखा नाहिन वदै, भुजवर करै किलोल ॥५५५॥

॥ सवैया ॥

दौलतखा चहुवान अपनै भुजनि पानि
होइ मतिवारौ हाथी अरि चीर मारी है ।
देखै गज सैन तब रचक वदै न कछु
सूकै मद गज वाघ होइकै विदारी है ॥
सिघकौ तकेते पल कल सारदूल होइ
सारदूल देखकै भुजनि वर मारि है ।
नदन जलालखाकौ वाज होइ ततकाल
धावै खल दल जब तीतुर निहारि है ॥५५६॥
दौलतखा चहुवान मलिकै नागोरी मान
तिमरके दलवग भीलि भात भजे है ।
महवतखान साराखानी हू भजाइ दीनौ
गौर निरवान मारे गढ कोट गजे है ।
अरिन नारि वन वन
पानीयो न पावै अग मजनन मजे है ।
तनमै न भूषन न वसन भूखी डोलत
मुख न तवोर द्रिग अजन न अजे है ॥५५७॥

॥ दोहा ॥ भयो मुवारक साहकै, वडडो खान कमाल ।
ताकौ दीनी झूझनू, और सबै वित माल ॥५५८॥
दूजौ पुत्र सहावखा, ताकौ नौहा दीन ।
जीयौ तौलौ उत रह्यौ, भईयाको आधीन ॥५५९॥
दोउ भइया जत्र मुये, गोनें छाडि जहान ।
पूत रहे इन दुहुनके, तिनको करौ वखान ॥५६०॥
वेटा खान कमालको, भीखनखा तिह नाव ।
गज झूझनमें करै, वाकै वस पुर गाव ॥५६१॥

वेटा खांन सहावकौ, महवतखा तिह नांम।
भीखनखांसू चोख चित, पै नित करत सलाम ॥५६२॥
भीखनखाहूनैं लख्यौ, कपट महोवतखांन।
तवते डिस्ट न जोरिहै, मनमे वढी रिसांन ॥५६३॥
तव नौहांकौ, छाडिकैं, चल्यौ महोवतखान।
आइ फतिहपुरमैं रह्यो, राख्यौ दौलतखान ॥५६४॥
महवतखां वेटी दई, फदनखांनकौ चाहि।
ज्यों लै दैहै झूझनू, दैन जोड़ाये आहि ॥५६५॥
केतक दिन सेवा करी, वहुरि वीनती कीन।
मोकौ भीखनखांननैं, देस निकारौ दीन ॥५६६
दौलतखां तव यों कह्यो, नौहा तेरी आहि।
देखै कौन निकारिहै, तूं उत वेगौ जाहि ॥५६७॥
जो भीखनखां ना रहै, मानस देहि पठाइ।
वाको नीकी भांतसो, राखौगौ समझाइ ॥ ५६८॥
नौहां बैठ्यौ जाइकै, जवहि महवतखांन।
भीखनखां यहु वात सुनि, दल साजे अनग्यान ॥५६९॥
महबतखां तब सुनत ही, मानस दयो पठाइ।
नाहरखां इतते चढ्यौ, पुंहच्यौ, वेगो जाइ ॥५७०॥
इतते महबतखां चढ्यौ, उतते भीखमखांन।
आभूसरकै ताल पर, भलौ पर्‌यौ घमसांन ॥५७१॥
नाहरखांकौ देखिकै, भीखनखां थहराइ।
जैसैं नाहरकै तकें, बिझुकै भज्जै गाइ ॥५७२॥
भीखनखां तब भजि गयो, जीत्यो नाहरखांन।
महवतखांकौ झूझनू, लै बैठाओ आन ॥५७३॥
नाहरखां जुध जीतिकै, आये बजत नीसांन।
गरै लगायो प्यारसौ, दौलतखां दीवांन ॥५७४॥

जीलौ दौलतखा जिये, साके किये अपार।
अत न कोउ थिर रहै, या झूठे संसार ॥५७५॥

दीवान नाहरखाके पुत्र

१ फदनखा, २ वहादरखा, ३ दिलावरखा।

हा ॥ वडो फदनखा जानियो, और वहादरखान।
पुनहि दिलावरखान है, जानि लेहु कहि जान॥५७६॥

नाहरखाकौ वखान

हा ॥ जवहि भये वस कालकै, दौलतखा सिरमौर।
तव नाहरखा जान कहि, भयौ पिताकी ठौर ॥५७७॥
करता दीनी लच्छिमी, निसदिन करत कलोल।
पातुर चातुर रूप वर, वहुत लई है मोल ॥५७८॥
नचैं अखारी रैन दिन, छिन छिन कौतिग होइ।
राज मान दीवान ये, रागलीन है दोइ ॥५७९॥
मरद मुछार जुझार है, उठ्यो लहे वहु वक।
भौ मानत है भोमिया, करै सिवारी सक ॥५८०॥
वीकावतनै सोचि कै, दूरि करि चित चोख।
लूनकरन वेटी दई, उपज्यो अति सतोख ॥५८१॥
पहलै वोल कियो हुतौ, जीवत लूनकरन।
दई वजीरनि व्याहि कै, आये चरन सरन ॥५८२॥
जवहि सिकदर मरि गयो, भयो विराहिम साह।
वाकौ हनि दिल्ली लई, वावर दई इलाह ॥५८३॥
भयो हमाउ पातसाह, वावर पाछै जान।
सेरसाह पाछै भयौ, समये नाहरखान ॥५८४॥
सेरसाह आदुर दयौ, नाहरखानु निहार।
मामू कहि वातै कहत, और करत वहु प्यार ॥५८५॥
सेरसाह अैस कह्यो, नगर आपुनै जाहु।
कर्‌यो फतिहपुर पेसवस, घर वैठे तुम साहु ॥५८६॥

चोवा नाहरखानकै, निकसत उत्तिम आहि ।
बास मगंन ह्वै रीझिकै, मांग लयो पतिसाहि ॥५८७॥

महलको रचना

॥ दोहा ॥ अपने मनकी उकत सौ, महल चिनायो येक ।
वैसौ जगमै और नां, घन दीवॉन बिवेक ॥५८८॥
पंद्रह सै जु तिरानुवै, महल रच्यो दीवांन ।
भादौ सुदि आठैं हुती, सोमवार कहि जांन ॥५८९॥

नाहरखांनै जगमाल पंवार भजायो

॥ दोहा ॥ नागौरी खा पर चढ्यो, राना दल बल साज ।
इनहू सुनि मांडे चरन, ही आगैकी लाज ॥५९०॥
कूरम कमधज सकल ही, मांनत खांकी आन ।
दिल्लीकौ जानत नही, बदत न मुगल पठांन ॥५९१॥
आये गागा जैतसी, सूजा पिर्थी राज ।
और भोमिया निकटके, सब आये करि साज ॥५९२॥
नागोरी चिठ्ठी लिखी, टेरे नाहरखांन ।
रानैको आंवन सुन्यौ, चढ्यो तंत दीवांन ॥५९३॥
नीकी सैन बनाइ कै, चक्रवती चहुवांन ।
निकट गये नागौरकै, देत जैत नीसांन ॥५९४॥
उतहि जाइ ऐसै सुन्यौ, नागोरी गढ़ मांहि ।
रानौ बाहर कोस पर, निकसि लरत है नांहि ॥५९५॥
रिस उपजी चहुवान चित, नां पैठ्यौ नागौर ।
तीन कोस आगै गयो, सुभटनिकौ सिरमौर ॥५९६॥
खा सुनि पाई बात यहु, मानस दयो पठाइ ।
चले अकेले तुम कहां, हमपै उतरौ आइ ॥५९७॥
नाहरखा तब यो कह्यौ, रानौ उतर्यौ पास ।
वोट गही तुम कोटकी, नाहिन लेत निकास ॥५९८॥

हौ पाछै आवत नही, आगै उतर्यौ जाइ ।
जो मिलवेकी हौस है, इतहि मिलहु तुम आइ ॥५९९॥
नागौरी खा सुनत ही, चढ्यौ बजे नीसान ।
आयो नाहरखानपै, मिलि सुख उपज्यो प्रान ॥६००॥
तव रानो यहु बात सुनि, निसही गयो पराइ ।
हाक धाक सुनि सुभटकी, काइर क्यो ठहराइ ॥६०१॥
खाँ उठि दौर्यौ खोजही, जित जित निकस्यो रान ।
आगै पाछै जात है, जैसै रैन विहान ॥६०२॥
राना वर्यौ पहाडमै, फिरी सैन नागौर ।
गाव लये सब लूटि कै, वची न कोऊ ठौर ॥६०३॥
आवत है ये उमगसौं, लूट चले चित चाइ ।
तव जगमाल पवारनै, मानस दयो पठाइ ॥६०४॥
करत जाहु रजपूत मुहि, जो तुम मै रज होइ ।
पहुँचौ जौ ठाढे रहो, पहर येक कै दोइ ॥६०५॥
रानैनै अजमेर मुहि, सौपी ही कर प्यार ।
देस लूटि कै तुम चले, करत जाहु इक रार ॥६०६॥
किनही मुख लायो नही, तव उठि चल्यो वसीठ ।
काहूको नाही वदै, गार देत मुख ढीठ ॥६०७॥
नाहरखा यहु वात सुनि, नाहिन सक्यो सहार ।
मानस तवही पवार कौ, अपतन लयो हकार ॥६०८॥
हरये हरये आइयहु, भापहु जाइ पँवार ।
हौं नाहरखा वागरी, जाउ न विना जुहार ॥६०९॥
नाहरखा ठाढे रहे, और गये सब छाडि ।
ना राखी पहिचान कछु, ना रजवटकी आडि ॥६१०॥
नागोरी नगरी तकी, वीकै वीकानेर ।
सूजै ताक्यौ अमरसर, आवैरै आवेर ॥६११॥

नाहरखां निहचल रह्यौ, धरि अपनै मनि धीर ।
क्यों न होइ जिह वंसमैं, पिरथी रा हमीर ॥६१२॥
मारग तकै पवारकौ, मकरानैकै ताल ।
ताही मै बहु दल लये, आयो डिठ जगमाल ॥६१३॥
फौजदार अजमेरकौ, हौ जगमाल पँवार ।
रानैंकै दल बल लये, हय नर अमित अपार ॥६१४॥
दहूं वोर बांटी अनी, बनी सैन जूझार ।
छूटत है गोली घनी, बरिषा बान अपार ॥६१५॥
॥ गैनन्दछन्द ॥ उमडे कटक दहुं वोरके, घमंडे मनौ घनस्यांम ।
हथियार चमकत देखीये, ज्यों बीजुरी अभिरांम ॥६१६॥
इंद जैसै गज्जिहै, त्यो वज्जिहै नीसान ।
बुंद नाई बरसिहै, बरिखा लग्गी बहु बांन ॥६१७॥
छेद करिहै अंगमैं, चलिहै छछोहे बान ।
कटिहै कटि मुंड कर, जित लागि है किरपांन ॥६१८॥
चहुवांन पंवार मिलिकै, कर्‌यौ है घमसांन ।
सुभट सुभटनि लरि मरै है, पर्‌यौ कीचक धान ॥६१९॥
खेल जुद्धकै खेले भले, जोध रची धमाल ।
लरत नांहिन मिटे रंचक, कटे मरद मुछाल ॥६२०॥
चले नारे खार रत भयो, लाल सगरो ताल ।
अंत जीत्यो खान नाहर, भाजियो जगमाल ॥६२१॥
॥ दोहा ॥ नाहरखांनै खेत चढ़ि, पूठ कहूं ना दीन ।
दौलतखांकै नदनै, आगै ही धस लीन ॥६२२॥
॥ सवैया ॥ दौलतखां नंदन जग बदन नाहरखां नाहर है मानौ ।
चढ़ै तुरग कुरंग होहि अरि गउवनकी ज्यों परत भगॉनौ ।
मकरानै जगमाल भजायौ हाक धाक भै मानत रानौ ।
जाकी भुजा प्यारकर पकरी महबतखा ज्यो पार लगानौ ॥६२३॥

श्री दीवान फदनखांके पुत्र

१ ताजखां, २ पेरोजखां, ३ दरियाखां।

॥ दोहा ॥ ताजखानु पेरोजखा, तीजो दरियाखांन।
फदनखानुके नंद हैं, परगट सकल जहान ॥६२४॥

अथ फदनखांको बखान

॥ दोहा ॥ जबहि भये बस कालके, नाहरखा सिरमौर।
तबहि फदन खां जान कहि, बैठे उनकी ठौर ॥६२५॥
फदन खान दीवानकं, ग्यान दयौ करतार।
सम लुकमांन हकीमको, देत सकल संसार ॥६२६॥
दिल्ली माह सलेम साह, भयो जबहि पतिसाहि।
कीनी बहुत पठाननें, फदन खानकी चाहि ॥६२७॥
महबतखा सुत खिदरखा, फदन खानके पास।
ठाढो हो पतिसाहन, श्रैसे कर्‌यो प्रकास ॥६२८॥
फदन खान तू आव इत, बहुत तिहारी ठौर।
बहा भयो भइया भये, तू सबमें सिरमौर ॥६२९॥
बहुर हुमायो आइ कै, भयो दिल्ली सुलतान।
फदन खानुको टेरि कै, दीनो आदुर मान ॥६३०॥
जब अकबर दिल्ली भयो, साहिनको मनसाह।
फदन खान दीवानको, कीनो हेत निबाह ॥६३१॥
अमित प्यार निसदिन करत, अकबर साह सुजान।
फदन खानु चहुवानको, जामैं गाढ़्यो मान ॥६३२॥
रही चौरासी चौखबर, दरि छत्रपति प्यार।
इतो मया तुम करत हो, या पर कौन बिचार ॥६३३॥
पातसाह तब यों कह्यौ, सुनि बर बीर बिचार।
श्रौर बडे मेरे किये, ये दीने करतार ॥६३४॥
ताह तीन पुर्षी महा, रुजपूतानो जान।
गोहि गह्यो मगुसाह मैं, सुनि मैं तिनकी बान ॥६३५॥

मलिक ताजकौ लूटि कै, ताजखानु चहुवांन ।
थानौ रैबारी हन्यौ, जानत सकल जहांन ।।६५७।।

॥सवैया॥ अलवर ते दलबल कर धायो तरवार ताजखानु चहुंवांन ।
मारी सारां और खरकरी लूटि लयो गढ येदलखांनु ।
मलिक ताजकौ भजि गजिकै राइमलहि हरखे दीवांनु ।
बिचरायौ रैवारी थांनौ प्रगट्यौ है जसु सकल जहानु।।६५८।।

॥ दोहा ॥ ताजखांन कौ बड़ौ सुत, महमदखांनु चहुवान ।
ग्यानवंत दाता सुभट, सम को नांही आन ।।६५९।।
अरथ दुर्‌यो ततछिन लहत, चातुर ग्यान अपार।
इंछ्या पूरत सकल की, महमदखा दातार ।।६६०।।

श्री दीवांन महमदखांके पुत्र

१ अलिफखां, २ इबराहिमखा, ३ सरमसतखा ।

॥ दोहा ॥ अलिफखांनु कुल तिलक है, पुनि इबराहिमखांन ।
तीजौ खां सरमसत है, जानि लेहु कहि जांन ।।६६१।।

महमदखांकी फतिह

॥दोहा॥ महमदखां साधे भलै, क्यारौ पुनि बैराठ ।
करवर कैबर जांन कहि, जेर करी है राठ ।।६६२।।
कुभकरन मांडन नंदन, कूपावत राठौर ।
दीनौ खेत खिसाइ कै, महमदखां सिरमौर ।।६६३।।

॥ सवैया ॥ ताजखांनु सुत तिलक सुभट मै महमदखांनु मरद मुछार ।
क्यारौ अरु बैराठ तेग बर साधे अरि लागे पग हार ।
कुंभकरन मांडनको नंदन खैत खिसाय दयो जूझार ।
दीनदार सरदार छबीलो भोज करन सम बुद्धि दातार ।।६६४।।

॥दोहा॥ भर तरुनापै मरि गये, महमद खा चहुवांन ।
पूत पितापहलै मरै, यातै कठिन न आँन ।।६६५।।

अति दुखि पायो ताज खा, पै कछु नाहि वसाइ।
रुदन करै असुवा विना, कछू हाथ नहिं आइ ॥६६६॥
पाछे रह्यो सपूत अति, अलिफ खाँनु चहुवान।
प तैके सिर कर धर्यो, ताजखानु दीवान ॥६६७॥
पातसाह पै ले गये, पोतेको दीवान।
मेरे घरमै यहु वडो, याको दीजै मान ॥६६८॥
कीनो प्यार जलालदी, सुनी ताजखा वात।
होनहार विरवा तक्यो, चिकनें चिकने पात ॥६६९॥
जोलो जीयें ताजखा, रखे अलिफखा सग।
पल न्यारे नाहिन करै, है मानो अरधग ॥६७०॥

श्री नवाब अलिफखाके पुत्र

१ दौलतखा, २ न्यामत खा, ३ सरीफखा, ४ जरीफखा, ५ फकीरखा।

॥ दोहा ॥ वडडौ दौलत खाँनु है, दूजौ न्यामत खान।
ग्यान सरीफ जरीफ खा, पुनि फकीर खा जान ॥६७१॥

नवाब अलिफखांन वखान

॥ दोहा ॥ जवहि भये वस कालके, ताजखांनु सिरमौर।
अलिफखानु दीवान तव, वैठे उनकी ठौर ॥६७२॥
टीकै दयो जलाल दी, गज घोडा सरपाव।
नगर फतिहपुर पुनि दयो, छत्रपति आयो भाव ॥६७३॥
पातसाह कीनी मया, वाढ्यो मनसव मान।
दयो फतिहपुर छत्रपति, लिखि अपनो फुरमान ॥६७४॥
अलिफ खानु दीवानकै, आनद वढ्यो प्रान।
पठय दयो फुरमान घर, अलिफखानु ततकाल।
स्यौमदास माने नही, कूरम सुत गोपाल ॥६७५॥
हुतो फतिहपुरमै तवही, सेरखानु सिकदार।
कूरम दये निकारि कै, जीत्यौ राइ मुछार ॥६७६॥

नंद बहादुर खांनकौ, समसखानु सिरमौर ।
पिता मुवौ तब झूंझनू, बैठ्यौ उनकी ठौर ॥६७७॥
भइया और बदै नही, निस बासुर दुख देत ।
अलिफ खांन दरगह गये, संग आपुनै लेत ॥६७८॥
समसखानकी बांहि गहि, अलिफखान दीवांन ।
लै मिलयौ पतिसाहकौ, द्यायो मनसब मान ॥६७९॥
अबलौ यो आई चली, ग्रैसौ करम इलाहि ।
वहै झूझनू ह्वै बड़ौ, करै फतिहपुर जाहि ॥६८०॥
अकबर झुक्यौ पहारसौ, बहुत भयो चितभग ।
जगतसिंघ पठयो उतहि, अलिफखानु दै सग ॥६८१॥
पैठे जाइ पहारमैं, जगतसिंघकै साथ ।
द्रुवननिकौ दीवान जू, नीके लाये हाथ ॥६८२॥
मारी जाइ धमेहरी, और तिहारा गांव ।
बासो बिचरयो खेत चढ़ि, भलौ भयो जगु नांव ॥६८३॥
राजा आप तिलोकचंद, डरत मिल्यौ है आइ ।
संग लाइ कै ले गये, पातसाहकै पाइ ॥६८४॥
रानै ऊपर जब चढ़े, रिस धर साह सलेम ।
अलिफखानु पतिसाहि पै, मागि लये करि पेम ॥६८५॥
बाटे थाने जाइ उत, साहि सलेम विचार ।
थानौ दीनो सादरी, अलिफखांन सरदार ॥६८६॥

दीवाननै रानैंकौ थानौ मारयो

॥दोहा॥ रानैकौ थानौ तक्यौ, अलिफखानु सिरमौर ।
चक्रवती चहुवाननै, उत कौ कीनी दौर ॥६८७॥
परी लराई अति भली, चली बात सैसार ।
रानैकै दल अलिफखां, मारे अमित अपार ॥६८८॥
तबहि चिनायो चौतरा, अरि सिर काटि अपार ।
लूट बहुत ही कर चढी, सुजस भयो सैसार ॥६८९॥

तब रानी यह बात सुनि, काटि काटि कर खाइ ।
पै अमरा दीवानकै, थानै सक्यौ न आइ ॥६६०॥
ऊटीलै हौ समसखा, उत आयौ कर साथ ।
रानैको चहुवाननै, भले लगाये हाथ ॥६६१॥
सहजादै यह बात सुनि, कीनौ प्यार अपार ।
कह्यौ अलिफखा समसखा, जुगल बडे जूझार ॥६६२॥
जबहि भये बस कालके, अकबर साह जलाल ।
बैठ्यौ तबही तखत पर, साह सलेम मूछाल ॥६६३॥
जबते बैठे तखत पर, जहागीर हुव नाम ।
निस दिन आठौ जाममै, देवै ही सू काम ॥६६४॥
अलिफखान दीवानसौं, बहुतै किरपा कीन ।
नगर फतिहपुर प्यार कर, लाल मुहर करि दीन ॥६६५॥
राइ मनोहर अलिफखा, पठय दये मेवात ।
मेव सेव लागे करन, भेट देहिं दिन रात ॥६६६॥

दलपत ऊपर विदा भये

॥दोहा॥ दलपत बीकानेरीये, कटक करे अनग्यान ।
बदत नही पतिसाहकौ, लूंटत फिरत जहान ॥६६७॥
दलै भजायो ज्याव दी, कर दल मरसै जाइ ।
वित लूट्यौ पतिसाहकौ, फूल्यौ अग न माइ ॥६६८॥
बात सुनत पतिसाहकै, रिस न समाई अग ।
पठये सेख कबीर पुनि, अलिफखानु जुग सग ॥ ६६९॥
बीस और उमराव सग, चले लरनकै चाइ ।
दलपति रहि नाही सक्यौ, सरसे उतरे आइ ॥७००॥

सरसै माहि लराई भई उमरावनिसौं

॥दोहा॥ पानी ऊपर आपमै, मच्यौ येक दिन जुद्ध ।
अपने अपने कटक लै, आयै सबै विरुद्ध ॥७०१॥

येक भये उमराव सव, आपुनमैं करि आन ।
येक वोर इकईस है, येक वोर दीवांन ॥७०२॥
छूटे गोली नाल वहु, फूटैं हय गय मुंड ।
कूटै कर करवार लै, टूटैं सुभटनि झुंड ॥७०३॥
गज सेती गज लरत है, वजत सारसौ सार ।
सुभट सुभट लट पट भये, करत मार ही मार ॥७०४॥
इत उत कै मूये सुभट, साहस सत सधीर ।
वीच परे तव आइ कै, आपुन सैख कवीर ॥७०५॥
कीनी सैख कवीरनै, मनोहार दीवान ।
पहलैं हाथ लगाइ अति, पाइ लगाये आन ॥७०६॥
येक लरयो इकईस सौ, करता रखी पटीठ ।
सबकौ भंजत अलिफखा, सैख न होत वसीठ ॥७०७॥
अलिफखांन उमराव सव, करे तेग वरजेर ।
मालामैं मनके वहुत, पै पूजत ना मेर ॥७०८॥
वहुरौं येक मतौ कियो, सबननि मिलि दीवान ।
दलपति पर दल कर चढ़े, बजत जैत नीसांन ॥७०९॥
भाठूमैं दलपति हुतौ, संग वहुत सरदार ।
उमडे दल पतिसाहके, ज्यों घन घटा अपार ॥७१०॥
गोल चदोल भये जब कोउ, जरंगोल बरंगोल ।
अलिफखांनु दीवान तब, अपुन भयो हिरोल ॥७११॥
जबहि आइ सनमुख भये, अलिफखांनु सिरमौर ।
सही न हौल हिरौलकी, भाजि चल्यौ राठौर ॥७१२॥
दलनि दबायो जाइ कै, तब दलपत बिललाइ ।
खांन जलाल मुछालसौं, पठयो यहै कहाइ ॥७१३॥
तुम मेरे भइया बड़े, और कहूं हौ काहि ।
अलिफ खांन जू सौ कहौ, थांभै दल पतिसाहि ॥७१४॥

लूनकरन परतापसी, राजा जोधा माल।
उनकौ नातौ देखि कै, होहु अवहि प्रतिपाल ॥७१५॥
इन पाचो दीनी सुता, सु तौ इंहि दिन काज।
तुम विन ऐसौ कौन है, जिंहि भुमियाकी लाज ॥७१६॥
तव दल थाभे अलिफखा, दलपति भयो उवार।
फिर पठयो पतिसाह पै, कीनौ प्यार अपार ॥७१७॥
टेरचो सेख कवीर जव, दिल्लीके सुलतान।
आयो वाकी ठौर तव, इतहि मुवाराखान ॥७१८॥

भिवांनी फतह की

॥दोहा॥ तव दीवान पठान मिलि, चले भिवानी कोप।
आगै जाटू जावले, रहे भलै पग रोप ॥७१९॥
लागे गढई जाइ कै, गोली चली अपार।
को आगै पग ना धरै, डरपैक असवार ॥७२०॥
तव उमडे दीवान दल, डागी गढई तोरि।
जो जाटू सनमुख भयो, मारचो मीड मरोरि ॥७२१॥
दत तिनीलेकै भजे, जाटू तजिकै ठाव।
सुजसु भयो दीवानको, लूटि लयो सव गाव ॥७२२॥

मेवातकी फौजदारी पाई

वोलि लयो पतिसाहनै, अलिफखानु सिरमौर।
कह्यौ अवहि मेवात पर, करहु येक तुम दौर ॥७२३॥
दै हय गज सरपाव अरु, मन सव वहुत वढाइ।
विदा किये मेवातको, चाहुवान चित चाइ ॥७२४॥
आवत हीसारा प्रथम, मारि मिलाई छार।
जे भाजे तेई वचे, मरे करी जिन रार ॥७२५॥
कारहडे डेरे कीये, फिरू सारा को मार।
मेव मिले उत आइ कै, ऐसी मानी हार ॥७२६॥

पेस करी घोरी तुपक, वसे तलहटी आइ।
इनहि साधि तवघन हटौ, नीकै मारचौ जाइ ॥७२७॥
उतहू मेव भले लरे, मरे परे ह्वै टूक।
उपजी रौर पहारमैं, वार धारमे कूक ॥७२८॥
सगरै जवू दीपमै, पुहंची हे यह वात।
अलिफखांन नीकी करी, पात पात मेवात ॥७२९॥

दच्छिनकौं विदा भये

विदा कीये पतिसाहनैं, दच्छिनकौ दीवांन।
सहिजादै परवेज सग, दलकौ आइ न ग्यांन ॥७३०॥
पुँहचे जव वुरहानपुर, थाने वाटे सर्व।
तव मलिकापुर अलिफखा, लीनों रजवट गर्व ॥७३१॥
सहिज़ादे चढि आपहू, गये येदलावाद।
आगेकौ पठये कटक, चले लये मंनवाद ॥७३२॥
खाननि खां आपुन चढ़े, लोदी खान जहांन।
अवदुल्लह जखमी चढे, और चढ़े वहु खान ॥७३३॥
मानसिघ कूरम चढे, राइसिघ राठौर।
काकौ काकौ नाव ल्यौ, चढे वहुत सिरमौर ॥७३४॥
अवर आयौ साजि दल, गनती आवै नांहि।
जैसे वादर देखिये, अनगन अंवर माहि ॥७३५॥
येकल राईकी भली, अवदुल्लह सिरमौर।
अत चरन पै छुटि गये, ठाहर सके न ठौर ॥७३६॥
अवदुल्लहके विचरतै, विचर भई दल मांहि।
आये सव वुरहानपुर, कहू रह्यो को नाँहि ॥७३७॥
थाने सवही उठि गये, रह्यौ नही को ठोर।
मलिकापुर वैठे रहे, अलिफखांनु सिरमौर ॥७३८॥
सव मीतनि चिठी लिखी, तुम रहिहो किहि काज।
पच करै सो कीजिये, यामै कैसी लाज ॥७३९॥

उतर लिख्यो दीवान जू, तुम पीरत मो पीर।
पै हौ कैसे आइ हौं, लागै लाज हमीर ॥७४०॥
दच्छिनके दल अति प्रवल, चलि आये चहुवोर।
दिस दिस वुखासे घसे, दुदभ घनकी घोर ॥७४१॥
मलिकापुर घेरौ कीयौ, दच्छिनके दल आन।
दहू वोर छूटन लगे, गोली गोला वान ॥७४२॥
दहू दलतैं गोली चलैं, जान मु यहै सुभाइ।
मरन सदेसैं देत हैं, जुगल वोरतैं आइ ॥७४३॥
मलिकापुर लैं ना सके, करि वहुत ही रार।
दछनी दल दीवानके, आगे भाजे हार ॥७४४॥
वात मुनी परवेजनें, रहे न थानें आन।
मलिकापुर लरिकैं रख्यौ, अलिफखानु चहुवान ॥७४५॥
सहजादै तव यो कह्यो, अलिफखानु चहुवान।
अटलखान है साचलौ, अैसौ मुभट न आन ॥७४६॥

दीवान नैं थाने साधे

॥ दोहा ॥ भीलनकौ थानौं कठन, लेत न को उमराइ।
मलिकापुरते अलिफना, तव उत दयो पठाइ ॥७४७॥
ढील नैंकु लाई नही, भील हने तव जाइ।
परी पपीलक वापरी, तरै पीलकै पाइ ॥७४८॥
वहुर जालवापुर गये, साधे सव मैंवास।
सगरै जगमैं पगटी, सुजस फूलकी वास ॥७४९॥
उततै कीनी जाइ कै, फतिह फतिहपुर गाव।
अलफखान दीवानकौ, भयौ जगतमैं नाव ॥७५०॥
ना छाडै मेवासकौ, यहै अलिफखा टेव।
आइ मिलै स्यो गावके, लाग करनै सेव ॥७५१॥
अलिफखानु चहुवान पर, आयो छत्रपति भाव।
मनसव वहुत वढाइ कैं, करयौ वडो उमराव ॥७५२॥

दच्छिनमै दीवान जू, घरही दौलत खान।
सीवारी सब दल मले, अपनै ही भुज पांन ॥७५३॥
बीदाव्रत चोरी करे, वरज्यौ मानत नाहि।
दौलतखा दल कर चढ्यौ, रोस धरयो मन माहि ॥७५४॥
बीदावत लरि ना सके, भाजे वदन दुराइ।
गाव फूक बहुरे मियां, जैत नीसान बजाइ ॥७५५॥
पाटौधै जु रसूलपुर, कूरम बसत अपार।
मग मारत चोरी करत, दरगह भई पुकार ॥७५६॥
कह्यौ महोवत खांनसू, तब अैसे पतिसाहि।
कूरम धूर मिलाइ है, अैसौ कोऊ आहि ॥७५७॥
कह्यौ महोवत खान तब, अैसो दौलत खांन।
सुनत छत्रपति मया करि, टेरे लिख फुरमांन ॥७५८॥
मिले जाइ अजमेरमै, दूलह दौलत खांन।
जहांगीर बहु प्यार करि, दीनौ आदुर मांन ॥७५९॥
पातसाह अैसे कह्यौ, मूजावत हैं चोर।
छीन लई है सगर पै, पटी आपनै जोर ॥७६०॥
पटी लेहु जागीरमै, उनको देहु निकार।
जो तुम ते यो होत ना, उतर देहु बिचार ॥७६१॥
दौलतखां तसलीम करि, अैसै कियौ बिचार।
लरहि तौ काटौ सीस उन, ना तर देऊं निकार ॥७६२॥
दयो तुरी सरपाव तब, जहांगीर परवीन।
जुगल पटी दीवांनकै, मनसबमै लिख दीन ॥७६३॥
बिदा होइ पतिसाहते, आये दौलत खान।
अपनी रज भुज बल मगन, गनत न काहू आन ॥७६४॥
कछवाहनिसौ यो कह्यौ, दौलतखां चहुवांन।
पटी हमारी छाड़ि कै, जाहू कहूं तुम आंन ॥७६५॥

लरिवेकौ सामो करहु, जो तुम छाडि न जात।
द्वै वातिनमैं सोच कै, करि निबरौ इक बात ॥७६६॥
कछवाहनि तब यो कह्यौ, ऐसौ कोन मुछार।
जो इन पटिइन माहि तैं, हमकौ दैत निकार ॥७६७॥
राइसिंघ रानौ सगर, सके न हमकौ काढ।
छाडि दई जागीर हीं, तुम नही उनतै बाढ ॥७६८॥
ग्वुसरो वीतरवौत खा, और अविया सेख।
साधि हमैं नाही सके, तुम भूले का देख ॥७६९॥
दौलतखा य बात सुनि, दल करि चढ्यौ रिसाइ।
भाजि गये कूरम सकल, सके नाहि ठहराइ ॥७७०॥
दुदभ सुनि कूरम गये, आप आपकौ नासि।
गऊवनमैं मानौ परी, पचाननकी बास ॥७७१॥
माधो नरहर कुटब लै, भाजे ज्यौ म्रिगडार।
नाहरखा ऐसे गयो, जैसे जात सियार ॥७७२॥
गोकल गिरधरके नदन, कीनौं आइ जुहार।
दौलतखा की दिष्ट को, द्रुवन न सके सहार ॥७७३॥
पटिइनमैं ते कोप करि, काढयौ नरहर दास।
कुटब सहित तब जाइकै, कीयो लुहारु बास ॥७७४॥
भादौवासीमैं रह्यौ, माधौ करि मतुहार।
निस बासुर चोरी करै, सगरै हुई पुकार ॥७७५॥
दौलतखा चहुवान तब, मानस दयो पठाइ।
भादौंवासी छाडि दै, कै हौ मारो आइ ॥७७६॥
तब माधोनें यो कह्यौ, हौं मारयौ ना जात।
पातसाहको ना वदौं, नाहि सुनी तुम बात ॥७७७॥
दौलतखा यह बात सुनि, साजे कटक अपार।
तबल निसान बजाइकै, चढ्यौ न लाई बार ॥७७८॥

आगै माधौ दल कीयौ, लै सेखावत सर्व ।
अनगंन कटक निहार कै, वहुत वढ्यौ मन गर्व ॥७७६॥
दौलतखा चहुवान जव, नेरै लाग्यो आइ ।
तव माधो लर नां सक्यौ, डरकै गयौ पराइ ॥७८०॥
वित वसई सव तजि गयो, जव दल पहुंचे आइ ।
लूटी नाहि दयाल ह्वै, दी चहुवान पठाइ ॥७८१॥
जुद्ध करै ताकौ हनै, दूलहु दौलतखान ।
भाजेकौ मारे नही, यहै वांनि चहुवांन ॥७८२॥
नरहर पाई अलिफखां, दीनी आप दिलेस ।
तवहि चढ्यौ दल साजि कै, दौलतखानु नरेस ॥७८३॥
नरहर नाहर दल सजे, लरि नां सके निदांन ।
नाहरखांकौ दी सुता, गहे चरन चहुवांन ॥७८४॥
अलिफ खांन दीवांनकी, वहुत वढ़ी परतीति ।
दयो उदैपुर वारुवो, पातसाह करि पीति ॥७८५॥
गिरधर अलखासु लिख्यो, उनको दखल न देह ।
जो वै आवै लरनकौ, तौ सनमुख ह्वै लेह ॥७८६॥
दौलतखां अैसे लिख्यौ, अलखां जाहि पराइ ।
आपुनते निकसै नही, तौ हौ काढ़ौ आइ ॥७८७॥
अलखां तव अैसैं लिख्यौ, मेरे पाइ पतार ।
अैसौ जोधा कौन है, सकै जु मोहि निकार ॥७८८॥
दौलतखां यहु वात सुनि, कर दल चढ्यौ रिसाइ ।
सनमुख ह्वै नाहिन सक्यौ, अलखां गयो पराइ ॥७८९॥
अलखा भाजत फिरत है, वचन गये सव भूल ।
पवन लगे ज्यो जांन कहि, उड़त अर्ककौ तूल ॥७९०॥
रहि न सक्यौ खीरोरमै, दुर्‌यौ खोह मै जाइ ।
दौलतखां दुंदभ वजत, वरे उदैपर आइ ॥७९१॥

परी खटेलै खल भली, रैवासैमें रोर ।
दौलत खां चहुवान की, हाक धाक सब ठौर ॥७६२॥

तीजी बार मेवातकी फौजदारी पाई

॥ दोहा ॥ दछिनते दीवान जू, टेर लये पतिसाहु ।
कह्यौ अबहि मेवातकू, बहुरी माधन जाहु ॥७६३॥
फौजदार मेवात के, तीजे भये दीवान ।
भले पजाये भोमिया, संग हौ दौलतखान ॥७६४॥
बाकी खेरी चोरटी, अति गाढा मैवास ।
तिनको दौलतखाननैं, करचौ कौपकै नास ॥७६५॥
लरे बहुत ही भोमिया, मरे होइ घन घाइ ।
बंध कर आनी तिन सुता, डारे चूर मिलाइ ॥७६६॥
फिर पठये दीवान जू, दच्छिन की छत्रपत्ति ।
दछिन दछिना मागि है, भये हीन बल अत्ति ॥७६७॥

कागरैकों बिदा कीनें

॥ दोहा ॥ सार पर्यो जब कागरै, फिर टेरे दीवान ।
राजा बिक्रमजीतकै, संग दये दै मान ॥७६८॥
सूरज मल हो नूरपुर, आये दल पतिसाह ।
अनी जोरि ताकी बनी, बनी न मनकी चाह ॥७६९॥
सूरजमल लरि ना सक्यौ, भाजि बचायौ प्रान ।
आइ बिराजे नूरपुर, राजा पुनि दीवान ॥८००॥
सूरज मल दल साहकै, घरतें दयौ भजाइ ।
खोद मुवौ बिल चौखरा, लीनो नाग छिडाइ ॥८०१॥

॥ सवैया ॥

भाजि गयौ तजि मंदिर कौ गिरिकंदर अंदर आपु दुरायो ।
छाडि कै बाग बगीचा बनैं बहु खोहनकै बिरनैं मनु आयौ ॥

सूरजमल फिरै वनमैं मनकौ विधु ठांव कै ठाव पुरायो ।
खोद मुवौ विल चोखर ज्यौ छत्रपत्ति भवगम कोप छिड़ायो ॥८०२॥

अनगंन दल आयो साहि जहांगीर जू के
वाटे हू न आवै गढ कागुरै के कागुरे ।
डर भयो घर घर थर हरो गिरवर
भाजि न सकै पहारी कीने भव पांगुरे ।
चबै कीनं छूटै वोट ढाहे वैसे कोट कोट
उडि है तू नाल चोट पावहि न गागुरे ।
कहै कवि जांन सुनि सूरजमल अजांन
बेग आइ पाइ गह दान जिय मांगुरे ॥८०३॥

॥ दोहा ॥ सूरजमलकौ खेद कै, वहुरै दल पतिसाहि ।
जीति फिरे जीतन चले, नगर कोटकी चाहि ॥८०४॥
अलिफखान दीवानकू, दयो नूरपुर थान ।
सूरजमल कौ वहुत डर, रहि न सकै को आन ॥८०५॥
नगर कोट राजा गयो, सूरजमल सुनि बात ।
आयो दल बल साजि कै, पै कछु बनी न घात ॥८०६॥
साहसीक मल अलिफखा, जाके निहचल पाइ ।
लरि न सक्यौ दीवानसू, सूरज सनमुख आइ ॥८०७॥
सूरज नाव कहाइ हैं, उलटौ सबै सुभाइ ।
छप्यौ रहत है द्योंसकू, निसकौ निकसत आइ ॥८०८॥
जाइ कांगरै बिक्रमां, करी अरिनसौ बात ।
करि आयो भुस लीपनो, नाही बनी कछु घात ॥८०९॥
आइ नूरपुर बिक्रमा, यहै कह्यौ दीवांन ।
काहलूर ऊपर चढ़ौ, हौ रहिहौ इह थांन ॥८१०॥
उततैं चढ़े दीवान जू, जस नीसांन बजाइ ।
तबहि तुड करि ग्वारियर, डेरे दीनै आइ ॥८११॥

वात सुनी कहलूरिये, आवतु है दीवान।
आइ मिल्यौ दै पेसकस, दमका गज केकान ॥८१२॥
पठय दयो कहलूरिया, राजा ढिगु दीवान।
देख विकरमाजीत तव, लाग्यो करन वखान ॥८१३॥
जहागीर मानी नही, विक्रम करी जु वात।
यहै लिख्यो तुम कागुरो, लीजहु जिह तिह घात ॥८१४॥
नगरकोट घेरो पर्‍यो, वहुरि लगे दल साहि।
टूट्यो गढ छत्रपत्तिकै, पूजी मनकी चाहि ॥८१५॥
राजा विक्रमजीतनै, हेंदू तुरक बुलाइ।
सगरे दलसौं जान कहि, वात कही समझाइ ॥८१६॥
कर आयो है कागरौ, राखहु करि कै गाढ।
जोया गढ ऊपर चढै, वढै मान ह्वै वाढ ॥८१७॥
तव हिंदुवन मिलि यो कह्यौ, बिदाम कैकौ देहु।
कै तुम गढ मै रहनको, नाव न हमसौं लेहु ॥८१८॥
राजा विक्रमजीतनै, तक्यो वोर दीवान।
हौ रहिहौं कै तुम रहौ, रहि न सकत को आन ॥८१९॥
डिष्ट करी करतार पर, रहे उतहिं दीवान।
पातसाह हरखे सुनत, वढयो मन सव मान ॥८२०॥
छत्रपतिकै चित्तमै भई, गढ देखन की चाहि।
हित सौं आये कागरै, जहागीर पतिसाहि ॥८२१॥
जहागीर दीवानकौं, पठयो यहै लिखाइ।
तुम जिनसौं है आइही, हम देखेंगे आइ ॥८२२॥
पातसाह गढ पर चढे, लगे पाइ दीवान।
दिलीपतिनै दिल महित, दीनो आदुर मान ॥८२३॥
नोछावर पतिसाह पर, कीनी वहुत दीवान।
जहागीर अति प्यार कर, दीनो गज केकान ॥८२४॥

पातसाह उतते उतरि, चले वोर कसमीर।
अलिफखांन राखें उतहि, साहस सत्त सवीर ॥८२५॥
सोर भये फिर ठटामें, तव टेर्‌यो दीवांन।
उतहि पठायो छत्रपति, दै वहु आदुर . मांन ॥८२६॥
ठटा जाइ साध्यो भलै, अलिफखान दीवान।
हरख वृत सुन कै भयो, जहांगीर सुल्तांन ॥८२७॥
सोर पर्‌यो फिर कांगरै, सुन्यो दिली सुलतांन।
तव दल वल वहु सग दै, पठयो सादक खांन ॥८२८॥
भये पहारी येक सव, भले लगाये हाथ।
आगै पांव न धर सकै, सादक खांकौ साथ ॥८२९॥
वात सुनत पतसाहनै, पठय दयो फुरमांन।
तवहि ठटातै कांगरै, फिर आये दीवांन ॥८३०॥
आये जवहि दीवांन जू, कंपे हार पहार।
मिलके सकल पहारिये, आये करन जुहार ॥८३१॥
सादिक खां देखन रह्यौ, आवत ही दीवांन।
मिले पहारी आइ कै, धन रजवट चहुवांन ॥८३२॥
काविलके भुमिया फिरे, परी वहुत ही रौर।
तव आपुन पतिसाह चलि, आये है लाहौर ॥८३३॥
टेर लये हैं अलिफखां, काविल पठवन काज।
चक्रवती चहुवांन तव, आयो दल वल साज ॥८३४॥
लक्खी जंगलकी तवहि, आई वहुत पुकार।
भटी ढुढ़ी डोगर वटू, कीनौं मुलक उजार ॥८३५॥
वादसाह सोचत यहै, को पठऊं उह ठौर।
लक्खी जंगलके भोमिया, गहि आनै लाहौर ॥८३६॥
आसिफखां तव यों कह्यौ, अैसो और न कोइ।
अलिफखांन चहुवांनतें, यहु मुहिम सर होइ ॥८३७॥
विदा कीये तव अलिफखां, दे घोरा सरपाव।
चाहुवांन दल साजकै, चले जैतकै चाव ॥८३८॥

लखी जंगलकौ विदा भयो

अलिफखानु चहुवान जब, उतरे आइ कसूर।
डरत भाजि पतिसाह पै, गयो भटी मनसूर ॥८३९॥
गढी तकी अरि बरनकी, चढि आये दीवान।
वैहू आगै ते लरे, भलौ पर्‌यौ घमसान ॥८४०॥
करवर वर अरवर हनै, कटे तीन सै मुड।
कोऊ निकसन ना लह्यो, वध परि अरि झुड ॥८४१॥
अरवर छार मिलाइ कै, डोगर तके दीवान।
आप आपको भजि गये, आवत सुनि चहुवान ॥८४२॥
उतते फिर ताके वटू, मके सहारि न हाक।
ऐसौ कौन जु सहि सकै, अलिफ खानकी धाक ॥८४३॥
उतते चढि दीवान जू, खाई डेरौ कीन।
आइ मिले भुमिया सकल, होइ दीन आधीन ॥८४४॥
फिर चिहुनी देपालपुर, आये है दीवान।
पाक पटन ज्यारत करी, पूजी इछया प्रान ॥८४५॥
आइ मिल्यौ आधीन ह्वै, टुढी बहादर खान।
भेट दई दीवानको, पायो आदुर मान ॥८४६॥
जगल साध्यो अलफखा, मिले भोमिया आन।
लाग्यौ करन बखान सुनि, जहागीर सुलतान ॥८४७॥
मिले भोमिया भेट दै, सौलै कै दीवान।
पठय दई पतिसाहकौं, सुजस भयो चहुवान ॥८४८॥
चिहुनी अरु देपालपुर, महमदोट सु नाम।
ओर तिहारी बिठडो, पट्टन भरिहै दाम ॥८४९॥
आलमपुर पेरोजपुर, भेट दई भटनेर।
मिले जलालाबादके, दल दीवानके हेर ॥८५०॥
धिग बबूला रहमता, बाद रहीमाबाद।
लग्गी जगल दन मल्यो, मिले छाड कै बाद ॥८५१॥

भटी समेजे जाइये, टुढी बटू नैपाल ।
बैरियाह डोगर खरल, अरवर सब बेहाल ॥८५२॥
धोला खेरा भेजि दल, मारि मिलायै धूरि ।
डारी भलै उखारि कै, सब दुर्जनकी मूरि ॥८५३॥
हौ पहार सरदार खां, जबहि भयो बस काल ।
तबहि पहारी फिर गये, उपज्यो बहुरि जजार ॥८५४॥

श्री दीवांनजी कांगरै आये चौथी बार

॥ दोहा ॥ जहांगीर पतिसाहनै, लये अलफखा टेर ।
हुकम कर्यौ तुम जाइ कै, करहु पहारहि जेर ॥८५५॥
अलफखान तसलीम करि, चल्यौ राइ जूझार ।
गहर न लाई पंथमै, पैठ्यौ आइ पहार ॥८५६॥
भाजे फिरै पहारीये, सनमुख आवत नांहि ।
छपते डोलहि वोट लै, ज्यो सूरज ते छाहि ॥८५७॥
काहलूर लै कै लये, मडई और सुखेत ।
लीनौ बहुरि सिकदरौ, अलफखान जस हेत ॥८५८॥
उतहि तुरक को ना गयो, बिना सिकदर साह ।
कै उत पहुचे अलफखाँ, साहस सत्त अगाह ॥८५९॥
भाजे फिरहि पहारिये, छुटि गये घर बार ।
सार धार ना सहि सकै, डोलै धार पहार ॥८६०॥
तबहि पहारी येक ह्वै, कीनौ यहै विचार ।
लरहि जाइ दीवानसौ, सब मिल एकै बार ॥८६१॥
जगत सिघ पैठाँनिया, अरु विसभर चब्याल ।
चद्रभान गढ भौनकौ, पुनि फतू जसवाल ॥८६२॥
भोपत और अमूल पुनि, बूला सूरजचद ।
ठकर कल्याना स्यामचद, सबै जुद्ध केकद ॥८६३॥
जगतमाल अलिया चढे, आयो राइ कपूर ।
कौन कौन कौ नांव ल्यौं, सब ही भये हजूर ॥८६४॥

नगरोटै डेरे कीये, जगतै दल वल साज।
तलवारे कै गोरवै, है चहुवान सकाज ।।८६५।।

पहली लराई

।। दोहा ।। अलिफ खान इतते चढे, उतते कटक पहार।
लूमि झूमि आई मनौ, भादौं घटा अपार ।।८६६।।

भुजगी छद

इतही क्यामखानी, उतही सव पहारी।
वनी सैन गज की, घटा मेहकारी।
परै वूंद गोली, भयौ जुद्ध भारी।
मनौ कौध कौधा, वरच्छी दुधारी ।।८६७।।
लरै जोध जोधा, भई मार मार।
लगै वान वान, वजै सार सार।
थकै नाहि मारत, हनै वार वार।
मिटे तव पहारी, भजे हार हार ।।८६८।।
परे टूक टूक, मरे सूर वीर।
गज ह्वै किरच्चे, विरचे सधीर।
पहारी सुभट ना, भजे ह्वै अधीर।
सु तौ रच रचक, करे चीर चीर ।।८६९।।

।। सवईया ।।

सतके रजके गज सैन वदै न झुकै न रुके रहै आडनके।
खा अलिफ विरचि किरची कीये पै पहारी नही पग छाडनके।
भये रचक टूट गये उडि पौन रहे नजरावन गाडनके।
लह्यो ईस न सीस न मास सियारहु ये न हडाहल हाडनके ।।८७०।

।। दोहा ।। जगतसिंघ सव सग सो, भाजि गयो तजि लाज।
जैत भई दीवानकी, पूजे मनसा काज ।।८७१।।
दूजै दिन दल माजि कै, लगे पहारी आड।
जवहि पर्‌यो घमसान घन, वहुरौ गयो पराइ ।।८७२।।

तीजै दिन आये वहुरि, दल वल साज अपार ।
जैत भई दीवांनकी, गये पहारी हार ॥८७३॥
वहुरौ आये भोमियां, चौथे दिन दल साज ।
मार परी तव मरि परे, उवरे गये जु भाजि ॥८७४॥
फिर आये दिन पाचवे, जूझ करनकै चाइ ।
मिटे पहारी खेत ते, अत होइ घन घाइ ॥८७५॥
वहुर छठै दिन आइ कै, नीकी वाही रार ।
हाथ लगाये अलफ खा, अंत चले वै हार ॥८७६॥
सादक खा पैठांन हौ, चीठी दई पठाइ ।
कै दल मोपै पठइयो, कै तुम मिलियो आइ ॥८७७॥
रोस होइ दीवांननै, तव दल दयो पठाइ ।
दुर्जन उतर्‌यो सांम है, हौ क्यौ छाडौ पाइ ॥८७८॥
चिंत नही रंन मरन की, सुजस रहै संसार ।
जो जिय गयौ तौ जान दे, रज राखे करतार ॥८७९॥
सुनी बात यहु जगतसिघ, दल थोरे दीवान ।
ठटु कटकनिके साजकै, चढ्यौ देत नीसांन ॥८८०॥
खरे भये दीवान चढि, तलवारैके खेत ।
संपूरन रज लाज के, साहस सत्त समेत ॥८८१॥
अनी तीन कीनी तबहि, अलिफखांन भोपाल ।
येक वोरकौ रूपचंद, इक बासो डढवाल ॥८८२॥
बीच भये दीवांन जू, चित लरिवेको चाइ ।
रज अपनी ना जान दे, जौ जिय जाइत जाइ ॥८८३॥
घैरो कर्‌यौ पहारीयो, कटत अपार अनत ।
आडौ आये घूमते, मद बहते मैमत ॥८८४॥
जुध भयो अतिहि प्रबल, पर्‌यो महा घमसांन ।
कौरौ पांडौसे लरे, कै कीचककौ घान ॥८८५॥

रूपचद वासो भगे, जर्वाह परयो वहु भार।
सत साहससौं अलिफखा, खरे रहे जूझार ॥८८६॥
जुद्ध सरकी धार पर, दई लिखे द्वै आक।
जो जूझै तिहि सिर कटै, जो भाजै तिहि नाक ॥८८७॥
अक वि दीसे जुद्ध समै, जानहु सेवक स्वाम।
जे आगे ते दस गुने, पाछे के नहि काम ॥८८८॥
पानिपु अपनी राखि है, सूरा यहै सुभाइ।
जिय तन हान न गनत है, जो रज नाही जाइ ॥८८९॥
सूरवीर अरु मीन जल, इनको येक सुभाइ।
तरफि तरफि दोऊ मरै, जौ पानी घटि जाइ ॥८९०॥
रहै न केहू हीन जल, सहे न दोऊ गार।
सूरवीर पुनि मीनकौ, पानी ही सौं प्यार ॥८९१॥
येक वात कवि जान कहि, वढ्यौ मीन तें सूर।
मीन मरै पानी घटे, सूर मरै जल पूर ॥८९२॥
रूप रूपचदको गयौ, भाज्यो ह्वै वेहाल।
सत नास्यो वासो नस्यो, डाढी विन डढवाल ॥८९३॥
भार परयो दीवान पर, जूझत अचल जूझार।
येक वोर चहुवान है, इक दिस सकल पहार ॥८९४॥

॥ सवईया ॥

उतहि पहारी इत सभरी नरेस धायौ
ऊधम मचायौ जुध सुमिर इलाह जू।
परी वहु मार करवार भई आर
रतनारे रतनारे चले गहर अथाह जू।
वाल तरु नाई व्रिध तीनो पनपाइ सिध
आद अत नीको करयो करता निवाह जू॥
कहा चली ढाढी भाट चारन कलावत की
साहस अलिफखा सराह्यो पतिसाह जू ॥८९५॥

॥ दोहा ॥ हय गय नर कटि कटि परं, टूटत है हथियार ।
फिर फूटै गुरजे लगं, छूटत है रतिधार ॥८९६॥

॥ सवईया ॥

लरत अलिफखांनु परत है घमसान
दे दै बहु दांन सिव कीनौ है निहाल जू ।
भसम हसम धूरि रत सत सिध मूरि
आवधि त्रिसूल लहे खपर है ढाल जू ॥
बोलत है घाव सू सुभाव डमरू कौ अैन
पायो सरभाव भयौ चाव गज खाल जू ।
निरत करत हरखत हर हेर हार
सुडनके व्याल और मुडनिकी माल ज्यू ॥८९७॥

साह जू के काज कुल लाजकौ अलिफखांन
गाढ़े पाइ कीने है पहारसे पहारमैं ।
वाने बहु वाने लगे सूरिवां सुहाने अैसै
जैसै फुलवारी फूल रही है वहारमैं ।
कीचकको घान घमसान पर्यौ दहू वोर
घाइल धुकत मतवारेसे अहारमैं ।
धाई गज सैन आई अैन ही नवाव पर
मार बिचराई भाजो सिधकी दहार मैं ॥८९८॥

मांतौ गजराज आयो कितौं परवत धायौ
झरना बहायौ मद सैन घहरानी है।
रूख ज्यौ उखारत तुण नर डारत
निहार रूपचंद वासो भाजवेकी ठानी है ॥
भये सनमुख आनि नवाव अलिफखांन
कुजर भजानो माथै वरछी लगानी है।
गैवर घटा सो बग पंत सो लगत दत
तामैं सार धार मानौ बीज चमकानी है ॥८९९॥

॥ पेडी ॥ आवै हाथी घूमते, घूमै मतवारे ।
जैसी सावनकी घटा, वै तैसे कारे ।
कै परवतसे देखिये, वै भारे भारे ।
ज्यो घन गरजै भादुवै, त्यो गरज चिंघारै ॥६००॥
हाथी ठाडे ही रहे, वे थर थर करि है ।
जैते पाव उचाइ है, आगै ना परि है ।
घाव लगे वहु अगमे, तिनते रत ढरि है ।
गिरवर ते कवि जान कहि, झरनासे झरि है ॥६०१॥

॥ दोहा ॥ करी कहा पशु वापुरे, सहै जु डिष्ट करूर ।
सूर देखि गज यो चले, ज्यो निस देखे सूर ॥६०२॥

॥ सवइया ॥ जुध मच्यौ विरच्यो चहुवान
सजोव गयौ उडि सार्गानि लागै ।
राते भये रत सौ सत सौं अैसो
कौन लरचौ है कसूभल वागै ।
खा महमदको नद अलिफखा
मेर करे पग केहू न भागै ।
जोआ भये हैं जितने वसुधा पर
कान गह्यौ है दीवानके आगै ॥६०३॥
सेन अनत झुकत पहारी लरत कहत न अैसो वियो है ।
मारत डारत पारथ जो अलिफखा को घन हाथ हियो है ।
स्रोनि समुद्र न घुटनि टुटत जुगिन जुथ अघाइ पियो है ।
मुडनि भार गई झुकि नार मनोहर हार जुहार कियो है ॥६०४॥

॥ दोहा ॥ मुड माल हर पहरि है, जानत कौंन सुभाइ ।
सुभटनिके सिर देखि कै, गरै लेत है लाइ ॥६०५॥
मुड विना तन धर परे, तरफत है इह भाइ ।
मानो पगिया गिर गई, करिहैं सैंख समाइ ॥६०६॥

खुले देख द्रिग सुभटके, डरपैं गिर्भ सियार।
विकट लगै ह्वै निकट, जौं मरि गये मुछार ॥९०७॥
रुहिर जुगिनी भछि गई, स्यार मास अरु चांम।
हाड न कोऊ लेत है, असत कहावत नाम ॥९०८॥
घाव जु बोले सुभटके, कहत मार ही मार।
जीभ थकी तव अगही, लाग्यौ करन पुकार ॥९०९॥
साहिमखानी को लर्यौ, अलिफखांनकैं संग।
धार मुरी हथियारकी, पै नहि मोर्यौ अंग ॥९१०॥

॥ सवईया ॥

हैदल गैदल पैदल जोर के,आये अनत अपार पहारी।
नाचत है हरखे हरि जुगिन छूटत नाल वदूक सुतारी।
भीरपरी विचले तव भीरक साहिमखा समसेर संभारी।
काहू को मुड कटी कटि काहू की ही
मिसरी पै लगी आईखारी ॥९११॥

॥ दोहा ॥ सूर सुभट दीवानके, वहुते आये कांम।
केते येक गनाइ है, लै लै उनको नाम ॥९१२॥
येदल अरिके दल हनत, पुनि भाईया कमाल।
द्वै काइम नीके लरे, नाथा और जमाल॥९१३॥
करे मुजाहद मेर पग, भीखन पुन वहलोल।
लाडू अरु पेरोज खां, राख्यौ अपनौ तोल ॥९१४॥
द्वै खानू दौला अवू, इसकदर रज रास।
अरु मारू उसरीफ पुनि, कीनौ नांव प्रगास ॥९१५॥
ऊदा परता चतुरभुज, जगा मनोहरदास।
पुनि कौ जू हरदास ये, परे येक ही पास ॥९१६॥
द्रोंद राज मोहन जुगल, मुये येक ही ठौर।
कौन २ को नांव ल्यौ, कटे वंहुत ही और ॥९१७॥

जे जूझे दीवान सग, अमर भये संसार।
जो जिहाजमें पैठ कै, सागर कीजत पार ॥६१८॥
मार मार ही उचरै, अलिफखान चहुवान।
जोर पर्‌यो करवार कर, अरि मारे दीवान ॥६१९॥
हाथी येक दीवानको, नाव चतुर गज ताहि।
खलनि उखारत ब्रिच्छ ज्यो, ऐरापति सम आहि ॥६२०॥
कछु हाथी हाथी हने, कछु हने दीवान।
जोधा पाइन तर मथे, भलौ भयौ घमसान ॥६२१॥

॥ सवईया ॥

धायौ है मातो गयद अधीर ह्वै काहू नही तव धीर धरी है।
खानु अलिफ खरे इतही गज आइ दवाये नहि ढील करी है।
वाही भले करवार चरन कौं सावन तावर की ज्यो निकरी है।
टूटके पाव करी यो गिर्‌यो मनौ फूटिके खभ चौखडी परी है ॥६२२॥

॥ दोहा ॥ जवहि जुद्ध भारी भय, बिरचे कटक पहार।
तव दिवान पाछे परे, वहुत गिराये मार ॥६२३॥
तेरहसै मानस हने, पर्‌यो वहुत घमसान।
इनहूके वहुतै मरे, गनत न आवै ग्यान ॥६२४॥
देख्यो जवही पहारी यो, भाजे छाडत नाहि।
येक मतौ करिकै फिरे, आइ मिले तव माहि ॥६२५॥
वहुर लडाइ फिर परी, जूझे जोध अपार।
भये सही दीवान जू, सुजस रह्यो संसार ॥६२६॥
खेत माहि जो मरि पडे, है ताहीको खेत।
जाके पाइ न छूटि है, जैत दई तिह देत ॥६२७॥
जिय जान्यो जान्यो मरन, अलिफखान चहुवान।
ऐसी विध ना मर सकै, कोऊ राजा रान ॥६२८॥

॥ सवईया ॥

प्रवल सवल सत लाज सौं अलिफखा
जूझत झुकत अकुलात नही दलतै।

जुद्ध कौ समुद्र है सहादत कै नग भर्यौ
बूडकलै पावे जो न डरै काल जलतें।
महमद खान अग जीते नित जोरि जग
आरन अभग वडो साको कीयो चलतें।
वडे वड़े राजा राव रानां उमराव भूप
अैसी भाति मरिबेको मुये हाथ मलतें ॥९२९॥

वासोहद कीनी वस चवे दीनी पेसकस
जस भयो जीत्यौ है नगरकोट भीनकों।
काहलूर जैतवा मडई सुखेत मां
विकट पहार पैठे मारग न पौनको।
भाजे भाजे फिरत पहारी हार येक भये
कोरनिसौ लरै अैसौ साहस है कौनको।
गए अमरापुर अलिफखां अमर भये
सभरी नरेशने चढायो लौन लौनकौ ॥९३०॥

॥ दोहा ॥ जो लौ जीये जगत मैं, अलिफ खान सिरमौर।
गढ़ मनसव लेते रहे, आज और कल और ॥९३१॥

॥ सवईया ॥

दोइ बार दछिन मे वाती तीन वार मली
कछवाहै तीन बार खेत ते खिसाये है।
साधी है मेवार दोइ वार औ ठटा हूं साध्यो
मार २ कै भिवानी भोम भोमिया मिलाये है।
चार बार कांगरौ पजायो करवर वर
जंगल लखी के मारि डड भखाये है।
खरे ईसरस भये सरसै अलिफखान
गजे उमराव दलपति हूं भजाये है ॥९३२॥

॥ दोहा ॥ सोरहसै जु तियासिया, सन सहस पैंतीस।
अलिफ खानु बैकुठ गये, रोजै अठ्ठाईस ॥९३३॥

करामात परगट भई, ज्यारत करत जहान।
देखत ही दरगाहकौ, पूजत इछ्या प्रान ॥६३४॥
करामात दीवानकी, है हाजिरा हजूर।
गिरवर पर वादुर रहै, ज्यौ रोजै पर नूर ॥६३५॥

॥ सवईया ॥

होत दुख दूर देखै नूर दरगाहकौ
निरधन पावै वितु निरसुत पावै सुत
अैसी अद्भुत बात करम इलाहकौ।
निरबुधि पावै बुधि बेसुधको होत सुधि
मारग लहत जु भूलानौ आवै राहकौ।
अलिफखां चहुवान लोभ नही कीनौ प्रान
पायो फल राख्यौ स्वामधम पतिसाहकौ।
न्यामत सपूर है जहूर हाजिरा हजूर
होत दुख दूर देखे नूर दरगाहकौ ॥६३६॥

ह्वै सुख लीजिये नाम सकारे।
व्याध असाध ते होत समाध
मिटै अपराध अगाध जे न्यारे।
चित कछू चितम न रहै
उमहै कलप ब्रिछ की डारै।
खान अलिफ करामात पूरन
चूरन है है सब रोस विकारै।
देखिये ना सुपहू दुख को मुख
ह्वै सुख लीजिये नाम सकारे ॥६३७॥

प्रानकी इछ दीवान पुजावै।
न्यामत और करामत पूरन
होहि सुखी जे दुखी तकि आवै।
पीर महा परगट्यो पुहमी।

परपीर पिराये की पीर पिरावै ।
खान अलिफ समुद्र अथाह है
जो मनसा सोई धावत पावै ।
कान गहै तेई मान लहै जगु
प्रान की इच्छा दिवान पुजावै ॥६३८॥

॥ दोहा ॥ सोरह सै इक्यानुवै, ग्रन्थ कर्यौ इहु जान ।
कवित पुरातन मै सुन्यौ, तिह विध कर्यौ वखान ॥६३९॥
दौलतखा दीवांनकौ, अव हौ करौ वखान ।
तेग त्याग निकलंक है, जानत सकल जहांन ॥६४०॥

श्री दीवांन दौलतखांके पुत्र

१ ताहरखा, २ मीरखां, ३ आसफखां ।
ताहरखां कुल को तिलक, रचि कीनौ करतार ।
मीर खांन पुनि असद खांन, भइया ताहि विचार ॥६४१॥

दौलतखांकौ वखांन

॥ दोहा ॥ जबहि भये वस काल के, अलिफखान दीवान ।
बैठे उनकी ठौर तव, दूलह दौलत खान ॥६४२॥
जहागीर पतिसाह जू, दे कै मनसव मान ।
सौप्यौ है गढ़ कागरौ, दौलत खा चहुवान ॥६४३॥
पातसाह अैसौ कह्यौ, तुम विन अैसौ कौन ।
जाते निहचल रहत है, नगर कोट अरु भौन ॥६४४॥
आइ बिराजे कांगरै, दौलतखा चहुवान ।
भुमियनको भै उपज्यो, सके राजा रान ॥६४५॥
वासी सकल पहारके, जेर करे चहुवान ।
डड भरै सेवा करै, थहरै ज्यौ तर पान ॥६४६॥
जहागीर कीनौ गवन, तव उपजी जग रौर ।
सव थानै उठि उठि गये, रह्यौ न कोऊ ठौर ॥६४७॥

दौलतखा दीवान तब, कीने गाढे पाइ ।
दुर्जन दलते ना डुरे, रहे अचल ठहराइ ॥६४८॥
सबै पहारी येक ह्वै, घेरो कीनौ आइ ।
भेद चरन दीवानके, डुरहि न लागे बाइ ॥६४९॥
अपनै दलसौ यो कह्यौ, दौलतखा दीवान ।
निकसि लरहु मारहु मरहु, करहु महा घमसान ॥६५०॥
तउ दल सबल दीवानके, निकसे लरन रिसाइ ।
नीको जुध मचाइ कै, घेरी दयौ छिडाइ ॥६५१॥
मरे पहारी जे लरे, उबरि गये जो भाजि ।
बहुरे दल दीवानके, लै उनकी रज लाज ॥६५२॥
साहिजहा बैठे तबहि, तखत दिलीके आइ ।
बात सुनी दीवानकी, भले रह्यो ठहराइ ॥६५३॥
और न कोऊ ठाहर्यो, तजि तजि आये थान ।
नगर कोट राख्यो भलै, दौलतखा चहुवान ॥६५४॥
मनसब बढयो छत्रपति, दै कै आदुर मान ।
जग सगरे नामी भये, दौलतखा चहुवान ॥६५५॥
रहे चतुरदस बरस उत, साध्यो भलै पहार ।
पाछै काबलको चले, चाहुवान मुछार ॥६५६॥
काबिल और पिसौरमै, रहे भली ही भाति ।
सीवाली सब मिल चले, सहि न सके मुखकाति ॥६५७॥
बेटा दौलत खानको, ताहरखान सपूत ।
जुध सग दामिन दमक, दानझरी पुरहूत ॥६५८॥
साहिजहासो मिलनको, गये अकबराबाद ।
प्यार कियो मनसब दीये, अति बाढ्यो अह्लाद ॥६५९॥
अमरसिघ गजसिहको, हन्यो सलावत खान ।
छत्रपतिकै दरबारमे, उपजि पर्यो घमसान ॥६६०॥

साहिजहा फुरमान दिय, मारि लेहु राठौर।
ग्रैसी वेअदवी वहुर, ज्यो न करै को ग्रौर ॥६६१॥
तवहि गुरजवरदार सव, चहुंधा लगे ग्रपार।
गुरजनि सौ ढाह्यो वुरज, गिरत लगी वहुवार ॥६६२॥
जे सेवक ग्रमरेसके, हुते ग्रागरै मांहि।
ते सुनिकै सव लरि मुये, कोऊ भाज्यो नाहि ॥६६३॥
राव कुटब नागोर हौ, जोधावत वहु पास।
को नां लै नागौरकौ, ग्रैसी उनकी त्रास ॥६६४॥
नटे वहुत उमराव तव, ताहरखा सिरमौर।
ग्रागै ह्वै ग्रैसै कह्यो, मै पाऊ नागौर ॥६६५॥
का मजाल जोधानकी, उतहि सकै ठहराइ।
हुकम रावरौ है वली, पलमे देऊं उडाइ ॥६६६॥
सुनि ग्रानद्यो छत्रपति, लिख दीनौ नागौर।
ताहरखा पतिसाहके, जियमै राखी ठौर ॥६६७॥
पातसाह फुरमान लिख, टेरै दौलत खांन।
मनसव हूं डेढौ कर्यो, ग्रौर बढ्यो वहु मांन ॥६६८॥
कावलमे दीवान हे, चल्यौ जात फुरमान।
ताही मै यौ छत्रपति, पूछे ताहर खान ॥६६९॥
पिता तिहारौ ग्राइ है, तव जैहै नागौर।
कै तू पहले जाइ कै, काढहिगौ राठौर ॥६७०॥
इन्हन कह्यौ फुरमांन हौ, वाधौ ग्रपने सीस।
ग्रवहि जाइ जोधानिकौ, काढौ विसवा वीस ॥६७१॥
हर्षवंत हौ छत्रपति, दयौ ग्रानि सिरपाव।
ग्रादुर दै नागौर दै, कियौ वड़ौ उमराव ॥६७२॥
इनको सुत सरदारखां, सग हुतौ दुतिरास।
मनसब दैकै छत्रपति, राख्यौ ग्रपने पास ॥६७३॥

उतते ताहरखा चले, वतन आपने आइ ।
कूच कियौ नागौरको, अनगन कटक वनाइ ॥६७४॥
जात जात नागौरकै, निकट लगे जब जाइ ।
जोधावत गढ छाड कै, निकसे तवहि पराइ ॥६७५॥

॥ सवईया ॥

मिटे उमराव राव साहिजहा जू कै आगे
तहा लायौ वीरान करी है वात थोरी सी ।
हाथौ दयौ पोरकै पै माथौ दै सके न जोवा
गरद दवाये भाज गये खेल होरी सी ।
चहुरग चमू वानि नागवर लीनौ आनि
भये है खिसाने जे कहन वात भोरी सी ।
ताहरखा कीरति अकीरति विपछनकी
जगमै रहैगी गग जमुनाकी जोरी सी ॥६७६॥
पाखर सजोव गज जूहमे वुकार धौसा
सघन घटामै मानौ घन घहरतु है ।
प्रवल सवल दल साजि चढे ताहरखा
खुरनि तुखारनि सौ जगु थहरतु है ।
धूरि उडि नभ छायौ सूरज न डिठ आयौ
तिमर जनायौ अरि हीयौ हहरतु है।
पवन घन जानि कौ डुरावत समूह सैन
सागर समान है सु जानौ लहरतु है ॥६७७॥
मूछनि ताव सुभावहि देत वरा वरा जानि कै प्रान डरै जू ।
जौ करवार निकार निहारत तौ द्रिगवाल सवै थहरे जू ।
होत पलान तुरग कुरग ह्वै भाजे विपछ न धीर धरै जू ।
ताहरखाकी धाक दसौ दिस सेल चढे जु अै लरै जू ॥६७८॥
हिम्मतके वर मोह्यौ छत्रपति साहिजहा मुख तेरी ये वातै ।
जोध न कोऊ विरोध सकै तुहि जानत तू सव जुध की घातै ।

ताहरखा तुव तेगकी त्यागकी फैली कीरति दीपनि सातै।
दानके वीज धरा रसना कविनीके वये जसके विखातै ॥६७६॥
दुरजनसाल मरद मुछाल है ताहरखाँ तग्वारको रावत।
कूरम धूरमे डारे मिलाइ कै मिघ हुते तेऊ गाड कहावत।
वक रह्यौ नही वीकनिमै अरु पाइ लगे तजि वाद विदावत।
दौलतखानको नद नरिद, अनद भयौ अति देसमे आवत ॥६८०॥

॥ दोहा ॥ जैगढमे डेरौ कीयौ, अमरसिघके धाम।
हिमतकै वर जगतमे, कीनौ अपनौ नाम ॥६८१॥
मुखमे मास चतुर गये, आये दौलतखान।
पूत पिता दोऊ मिले, अति सुख उपज्यो प्रान ॥६८२॥
जुगल रहत नागौरमें, वाढ्यौ हर्ष हुलास।
मुछारनकी मानि है, सीवारी सव त्रास ॥६८३॥
सात आठ ही मास लौ, रहे उतहि दीवांन।
पुनि आयो पतिसाहकी, अैसी विध फुरमान ॥६८४॥
वांचत ही फुरमांनकै, ना रहियौं नागौर।
अव तुम गहर निवार कै, वेगे जाहु पिसौर ॥६८५॥
उतते सहिजादौ चलै, वलख लैनके चाइ।
तव तुम उनके सग ह्वै, फतिह कीजियहु जाइ ॥६८६॥
तव दीवान उतकौ चले, मियां रहे नागौर।
आठ मास वैठे रहे, सुखसौ वाही ठौर ॥६८७॥
फौज चलाई वलखकू, सुनी मिया नागौर।
छत्रपतिकौ पठई अरज, जै पुहची लाहौर ॥६८८॥
तामै अैसैं लिख्यौ हौ, सुनिये सहनसाह।
मोहूकौं जो हुकम ह्वै, तौ आऊ दरगाह ॥६८६॥
येउ तवहि वुलाइ कै, दीने वलख पठाइ।
लघु साहिजादै कटक लै, फतिह करी है जाइ ॥६६०॥

पठये सहजादे जुगल, रुसतमखा दीवान।
पुहचे है सतरज लये, इद खोहके थान ॥६६१॥
नीकी विध थाने रहै, मलि उजवकको मान।
इक रुसतमखा दखिनी, दौलतखा दीवान ॥६६२॥
ताहरखा है बलखमें, सहिजादे के पास।
मीच निगोडी पापनी, आइ गई अनयास ॥६६३॥
कैसे कहिये जीभ सौ, कैसे सुनिये कान।
तरवर ताहरखान जू, जगते कीयो पयान ॥६६४॥
ताहरखाको मर्न सुनि, आयौ तन जु प्रसेद।
रोम रोम रोवन लगे, जियको उपज्यौ खेद ॥६६५॥
ताहरखा कीनौ गवन, स्रवन सुने ये बैन।
बस्त भगौहे ह्वै गये, रत रोये जुग नैन ॥६६६॥
तरुनापै ही उठि गयो, दै तरवर बैराग।
व्रिधपनकौं पहुच्यौ नही, वाव लोगके भाग ॥६६७॥
पूनौको पहुच्यौ नही, भाग कमोदनि मद।
यह बपरीत लागै बुरी, गह्यो सप्तमी चद ॥६६८॥
थारी के मुक्ता भय, ढरे ढरे ही जाहि।
सुरतर ताहरखान विनु, केहू न द्रिग ठहराइ ॥६६६॥
हियो कमल नाहि न खुलत, मुझित पल पल माहि।
छवि रवि ताहरखान जू, डिष्ट परत है नाहि ॥१०००॥
कहु कैसे के ऊपजे, नैन चकोर अनद।
कहु वा डिष्ट परै नही, ताहरखा मुख चद ॥१००१॥
मरि करि ताहरखान जू, हितुवन यह दत दीन।
नैन बहन हिरदै दहन, मनहि गहन तन छीन ॥१००२॥
प्यारे ताहर खान विन, क्यो करि है मन गाढ।
उन डाइन बैरन बलख, लयो करेजा काढ ॥१००३॥

धर्मराज कैसे कहू, कौन धर्म यहु आहि ।
काटत अैसौ कलपतर, कृपा न उपजी काहि ।।१००४।।
मन भावन विन तप्ततन, बढ़ी सु मेटै कोइ ।
असुवनि छाती छिरकिये, पै नां सीरी होइ ।।१००५।।
ताहरखां बिनु चित्तकौ, चिता भई असख ।
चन्द्रकाति मन भाति नित, चुयो करत है अध ।।१००६।।
सज्जन द्रुजन येक सम, करे सु भली न कीन ।
जीवत हित बनि सुख दयौ, मरि अनहित वन दीन ।।१००७।।
सज्जन द्रिग अरहट घरी, भरि २ ढरिरे जाहि ।
दुर्जन विहसत फिरत है, दसन अधर रस माहि ।।१००८।।
ताहरखा या देसमैं, येक वार फिर आव ।
सज्जन द्रुजन को अबहि, है परखंनकौ दाव ।।१००९।।
मरि कर आयो देसमैं, घर २ उपज्यौ सोग ।
अैसी बिधकै मिलनमैं, क्यों सुख पावै लोग ।।१०१०।।
दुर्जन सौ नाहिन झुके, कीया न सज्जन प्यार ।
काहू तन चित यो नही, रंचक नैन उधार ।।१०११।।
देखत ही ताबूतकौ, रोर परी पुर मांहि ।
कौन नीद सूते मिया, तौऊ जागे नाहि ।।१०१२।।
येक बार जियकी कथा, सुनी न प्यारे आइ ।
मनकी मनही मै रही, बिधु सौ कछु न बसाइ ।।१०१३।।
सीत पवन लू घाम घन, सहै रहै दुख मांहि ।
जांनहि जिन सिरते गई, कल्प ब्रिछकी छाहि ।।१०१४।।

॥ सवैया ॥

काल कौ तौ नाम कालकूटते कटुक लागै
ताहरखा सौ कलपतर जिन दाह्यौ है ।
रतननिकौ समुद्र पल मै सुखाय डार्‌यौ
मिटत न काहू भांति करता जु चाह्यौ है ।

भर तरुनापै ही कुवँरतें कुवेर लूट्यौ
सोने का सुमेर काहू करि कोप ढाह्यौ है।
रोम रोम दीनो दुख दया न करी है चुख
डाइन वलखतौ करेजा हाथ वाह्यौ है ॥१०१५॥

॥ दोहा ॥ मरन पूतको सुन पिता, कैसे धीर धरत।
रोवनहार हि रोईये, यहु दुख आहि अनत ॥१०१६॥
वात सुनी दीवान जू, अति दुख उपज्यो गात।
करता करहि सु सीस पर, कछु वर नाहि वसात ॥१०१७॥
पातसाह यह वात सुनि, काहू अग्या दीन।
खा सरदार वुलाइकै, वहुत दिलासा कीन ॥१०१८॥
फिरी मुहिम वलाखकी, कावुल आई सैन।
वहुर पठाई फौज तव, गढ खधारकौ लैन ॥१०१९॥
जैगढको घेरौ कीयौ, पै वर नाहि वसाइ।
और फौज गढकी कुमक, दीनी साही पठाइ ॥१०२०॥
इत दल साहिजहानके, उत दल साहि अवास।
आपुनमैं लागे लरन, पुहची धूरि अकास ॥१०२१॥
तवहि फौज लागी डिगन, तव रुस्तम दीवान।
जै सनमुख लरन, वैरनि पर्यौ भगान ॥१०२२॥

॥ सवईया ॥

साहिजहा करि क्रौध खधारके लीबेको आपुनी फौज पठाई।
जुद्ध मच्यौ है नच्यो तहा नारद आगै तै फौज अवासकी आई।
दछिनी दछिन वोर भयो है दीवान अनी तव लीनी है वाई।
दौलतखा दलनाइक साहिकी सैन भलै लरिकै विचराई ॥१०२३॥

॥ दोहा ॥ भाजी फौज अवासकी, जीते दल पतसाह।
लरे सु मरे परे उहा, भाजि वचे गुमराह ॥१०२४॥
जव तुसार मौसिम भये, सके न दल ठहराइ।
घेरो तजि खधारको, कावुल वैठे आइ ॥१०२५॥

जबहि गयौ मिटि जगततें, जांमैकौ हंगाम ।
तवहि पठये बहुर दल, जाइ करहु संग्राम ॥१०२६॥
वहुर जाइ घेरौ कीयौ, पै ना आयौ हाथ ।
तजि खधार कावल तवहि, आयौ सिगरौ साथ ॥१०२७॥
तीजै वहुर हुकम भयौ, तव फिर लागे जाइ ।
ना कछु छत्रपतिसौ चले, गढसौ कछु न वसाइ ॥१०२८॥
जुझा होत है रैन दिन, छूटत गोली नाल ।
जाकै लागत जात है, तिहं जिय गोली नाल ॥१०२९॥
दौलतखां दीवान जू, चढि चढ़ि दोरै आप ।
बिचकर कछुकी कछु भई, चढ़ी कालकी ताप ॥१०३०॥
केतक दिनमे मरि गये, यहै जगतकौ भाव ।
कालते काहू न वचे, रानो होइ कि राव ॥१०३१॥

॥ सवईया ॥

जा दिनते चाहुवांन कलजुग प्रगटान्यों
ता दिनते येते भूप ज्याइ कीने नये हैं ।
दत्तिकौ करन मति भौज सति हरचंद
परदुख काटिवेकौ विक्रम ही भये है ।
हठकौ हमीर देव छाड़ी नहीं हठ टेव
प्रथीराज बलकौ सुजस जगु छये है ।
दौलतखा जीवत हे राजा षट इनकै मरत
इनकैं मरत आज वैउ मरि गये है ॥१०३२॥

॥ कवित्त ॥ प्रथम गजि राठौर वहुरि भंजे कछवाहे ।
जहागीरसौ वचन कहे ते भले निबाहे ।
वहुरि कागरौ साध वलख खधार सिधारे ।
कटक साहि अबास खेत चढ़ि वहुत संघारे ।
श्रीदौलतखां दीवान तौ सप्तदीप नामी हुवौ ।
अैसैं मरद मुछारको, कैसैं कै कहिये मुवौ ॥१०३३॥

दौलतखाँ दीवान जवहि वैकुंठ सिधायौ।
सुख दाइक विन वहुत लोगन दुख पायौ।
अवहि कहौ वह वरस छाडि दीनौ जगु जामे।
चार भेद समुझियो गुप्त प्रगट है जामे ॥१०३४॥
सन सहस पचास पुनि तेरह लैहु प्रमान जी।
११ १७५ ६६ ५२ ६११ ४५=१०६३०
संवत सत्रह सै जु दस गवन कर्‌यो दीवान जी
०० ६६ ५ २३७ ८४ ००=१७१

यहु करवित तुरकी लिखहु, वहुरहि दसके काढ।
सन संवत तू देख लै, आवै घाट न वाढ ॥१०३५॥
जव यहु खवर दीवानकी, पुहची जाइ नरेस।
तवहि खान सरदारकौ, दीनौ इनकौ देस ॥१०३६॥
देस दयो सरपाव दै, वहुत दलासा कीन।
पुनि दयाल ह्वै छत्रपति, विदा वतनकू दीन ॥१०३७॥
तव घर आये वतन लै, खा सरदार मुछार।
हितुवन मन आनद भयो, द्रुजन भये विकार ॥१०३८॥
सीवारी सव थरहरे, अैसी उपजी त्रास।
घर घरनी सव छाडिकै, जाइ गह्यौ वनवास ॥१०३९॥
दल सुनि खा सरदारके, द्रुवननि परी दहल।
घटा देख फोरचो घटा, तुम्यो टोडरमल ॥१०४०॥
तरवर ताहरखान तन, साहस सत सपूत।
सरदारा सरदार है, रजपूता रजपूत ॥१०४१॥

॥ सवईया ॥

दान खग निकलक राख्यो न दरिद्र रक
सुभट असक जसु प्रगट मुछारको।
गुनीजन दै आसीस सत्रनि काटै मीम
वच्यौ जिन भाजि मग लीनो दधपारको।

कुलको तिलक सव मुलककौ सुख देत
अजर अमर रहौ थंभ परवारकौ ।
करतकरम करि कीनो है अनूप भूप
जग पर जागै कर खान सरदारकौ ॥१०४२॥
रूप उजागर वागरकौ पति
लागत है दिन ही दिन नीकौ ।
जो लौ हैं ससि सूरज धू नभ
हैं जगमै जल गंग नदीकौ ।
तोलौ करि करतार कृपाल ह्वै,
काइम क्यामल खानकौ टीकौ ।
नैनको तारो है प्रांनको प्यारौ
है खां सरदार अधार है जीकौ ॥१०४३॥
चाहत है मीन जल मिले ही परत कल
चाहत चकोर चंद चकई विहानकौ ।
चाहत मयूर घन चाहत वसेत वन
चाहै मनोरथ मन कंवल ज्यों भानकौ ।
अंध चाहै नैन चाहै पग गैन
गुम चाहै बोलौ वैन घट चाहै प्रानकौ ।
जैसै येती बातनकौ येती वात चाहत है
तैसे मेरे नैन चाहे सरदार खांनको ॥१०४४॥
पूत पिताकौ देखिकै, बाढ़त है अनुराव ।
फदनखां सरदारखां, कोट वरषकी आव ॥१०४५॥

॥ इति रासा सम्पूर्णम् ॥

परिशिष्ट

श्री अलिफखाकी पैडी लिखते

पहले अल्लहु सुमिरिये। जिन्ह सुभट उपाया।
बोल जिलावण कारणे। रक्खे नही काया॥
माणसदे सारे नही। सोकर सुभाया।
सोई जित्तै जान कहि। जिस बोड खुदाया॥१॥
नाव महमद लीजिये। सुभटा सिरदार।
पथ दिखाल्या दीनदा। सगले संसार॥
जिन्हा कलमा अक्खिया। ते लगो पार।
दिल विच जिन रखी दगा। ते सटे मार॥२॥
जहागीर अकबर हदा। दिली सुलिताणा।
चार चक नव खड विच। फिरवाई आणा॥
सत्तां दीपां ऊपरे। तपिया ज्यौ भाणा।
तिन थिर थप्या अलिफखा। टिका चौहाणा॥३॥
दादे नेडे क्यामखा। केही गल किती।
केती धरती मार कर। तेगा बल लिती॥
मलूखांसू खेत चढि। जुध बाजी जिती।
खिदरखानकी बाहि गहि। दिली ले दिती॥४॥
[टि]क्का क्यामलखानदा। खाना सिरताज।
वड्डा होई जु गोत विच। तिस वडी लाज॥
भुमिया फिरे पहाडदे। सज्जहु दल साज।
मारण मरण भिडनदा। रजपुत्ता काज॥५॥
चामो पहली होत तै। कर जुध्ध भगाया।
पछे सूरजमल्ल भी। तै खेत खिसाया॥
इब जगतै ऊपर चढो। उन सीस उठाया।
तुम्द विण येहा कौण है। जिस लोभ न काया॥६॥

साके तैंडे बड बड़े। नां जाहि गिणाये।
बिदा कीया तूँ जंहानो। ते भै पजाये॥
राणैं जेहे भूपति। तै खेत खिसाये।
चारौ चकदे भूमिया। गहि आण मिलाये॥७॥
नगरकोटदे भूमिया। है नितदे आकी।
लुट्टे सगले परगने। छड्डी नही बाकी।
फौजदार सिकदारदी। कुह रही न नाकी।
तहां पठाया अलिफखां। दे गज औराकी॥८॥
पातसाह बड मोलदा। सरपाव पिन्हाया।
बीडा दिता प्यार कर। खा पैर लगाया॥
बिछा होइ तसलीम कर। डेरैनौ आया।
तद ही डेरैथैं चढचा। चुख ना ठहराया॥९॥
हिक धापही अलिफखां। परबत पर धाया।
गहर न किता पंथ विच। वहला चलि आया॥
तद थररराये भूमिया। यदि यों सुंणि पाया।
जगतैसू चगता खिझ्झया। चहुवाण पठाया॥१०॥
खा चड़िया नगारची। नीसांण बजावै।
जेही भादौंदी घटा। घणहर घररावै॥
झूझ करणनौ अलिफखा। आनंदसू धावै।
जाणौ नौसहु चौपनाल। व्याहंणनौ आवै॥११॥
पैठा आइ पहाड़मै। दमांमे बज्जे।
सोर होवा सैंसार विच। परबत मिलि गज्जे॥
नाहर देखे गउ ज्यौ। राजे हंभ भज्जे।
जीव वॅचाया रज तजी। अपजस नॉ लज्जे॥१२॥
अग्गे अग्गे भूमियॉ। पछै दीवाण।
मिरग डार ज्यौ भज्जदे। हढै उदयाणं।
निद्द भूख त्रिसनां मिटी। छुट्टी सुखबाणं।
गिरवर गिरवर पंछ ज्यौ। वै लेह उडाँणं॥१३॥

नर नारी मिल सेज पर। ना करहि किलोल ।
अखी कजल ना रह्या। मुह नाँहि तवोल ॥
पत्राह्दे कपड कीये। फटि वसन अमोल।
कदही दरपण हथ्थ लै। ना तर्कहि कपोल ॥१४॥
भगे फिरै पहाडिये। भारी दुख पावै।
पैर थके परवत चढत। सगती विललावै ॥
अन्न पकावणनो नही। तरु छाल पकावै।
दल देखे दीवानदे। छडि आप भगावै ॥१५॥
मौपै ठाण धमेहडी। मारी असराल।
जबूदा जबू हुवा। चूहा चव्याल ॥
नगरकोट अपबस कीया। असु चढि ततकाल।
मडई और सुखेत लै। कड्ढी रिप खाल ॥१६॥
कीता नगर सिकदरा। वहु साह सिकदर।
तहा अलिफखा जाइ। करि ढाह अ ।
भगे फिरै पहाडियै। ज्यो गिर गिरकदर।
रुखा उपर कुददे। हढै ज्यौं वदर ॥१७॥
हभ पहाडी हिक होइ। यह गल विचारी।
खा जीवत छड्डै नही। हम निजर निहारी ॥
उडि न सकै फट्टै नही। धर काठी भारी।
करै लडाई बागले। हभ येकै बारी ॥१८॥
जगता चढया पठाणिया। विसभर चव्याल।
सीवैदा अभू चढ्या। फतू जसवाल ॥
चडया सुखेतड स्यामदा। चद सूरज मडाल।
भोपत विलूदा चडया। ठक्कर चिडियाल ॥१९॥
अनरुध चडिया राजपुर। और टलू कपूर।
चड्या कल्याण कूलूदा। चदा कहलूर ॥
अरु बूला कुटलहरिया। आइ हुवा हजूर।
चद्रभाण तत्ता चढ्या। ज्यौं उगै सूर ॥२०॥

''''डच दल सज्जिकै। चडिया पठियाड़ ।
खणिहाड चभी छड़िकैं। आया खडिहाड़ ॥
मन महेस भूटतदे । ढूढदे''''राड़ ।
किसदा किसदा नांव ल्यो। हभ जुड़्या पहाड़ ॥२१॥
मिलकर सकल पहाड़िये। दल सजे अपार ।
गिणत न लेखा आंवदा। उमडा संसार ॥
चड़ कर आये खांन पर। नां लग्गी वार ।
आगै हाथी घूमदे । करदे हाकार ॥२२॥
तव यह गल दीवांणजी। येही सुणि पाई ।
अगणित फौज पहाड़दी। मुझ उप्पर आई ॥
अलिफखांन नीसान दे। तद सैण वणाई ।
जस लालचदे लालची । मिलि करै लड़ाई ॥२३॥
अलिफखां फुरमाईया । ल्यावहु केकांण ।
तद उठि दौड़्या साहणी। दौला सहनांण ॥
अणौ निल्ला नचदा । देख्या विच ठाण ।
चौर फुलाया पुछदा । पाये अहन ''' ॥२४॥
कीया खरहरा साहणी। असु अग दिपाया ।
आण्या नीर विवाहदा। केकांण न्हवाया ।
पांणी सट्टया पुछ कर। रूमाल फिराया ।
आद लंगाम बणाइकै। सिरजोट पिन्हाया ॥२५॥
वाध गलतणी मखमली। खौगीर धराया ।
जीन कीया साखत सजी। ले तग तणाया ॥
जेवध अगवद कसि । पाखर पखराया ।
दुमची और रकेव कढि। हभ साज बणाया ॥
सिरी धरी सिर बाग रखि। बधण खुलवाया ।
सिध ऊपर पाखर पड़ी । ताजी पीड़ाया ।
इद उचीस्रव छड्डिकै । देखणनों आया ॥२६॥

नीला आया नच्चदा। ज्यो मोर कलाइर।
ऊप्पर पखर फरसरैं। लहरी रैणाइर॥
चावक लगे उच्छलें। विण छेड्या माइर।
गज्जा हदी सैण विच। ना होवै काइर॥२७॥
वैठा अलिफखा। जिन सभ जग जित्ता।
चगा नीर समोइ कर। खा गुस्सल कित्ता॥
अच्छै कपडे पेन्ह कर। रज प्याला पित्ता।
राग जिरह तन सज्जिकै। खोन सिर पर दित्ता।
सगले आवध वधिकै। हथ वर्छा लित्ता॥
वैरी डिठा दीदाई। ज्यो मिरगा चित्ता॥२८॥
दिता पाव रकेब विच। सुमिर्‍या चिन माई।
चडिया खा केकाण पर। हभ सैण जणाई॥
अणिया रखी वटिकै। दिस दखिण जाई।
अगै घुमै चतुर गज। ऐरापति नाई॥२९॥
कोतल अगै खांनदे। चलै उठनदे।
धुर ऐराक अरब्बदे। चगे दीसदे॥
लगै भारी मोहणे। आवै हीसदे।
जेही मूरत कामदी। मनणो मोहदे॥३०॥
सुनै जेही बरन है। वै जर्दे पीले।
रुपैदे मढि जिहे। वै निकुरे नीले॥
मखन चादणी रैणमे। अवलक छबीलै।
पग नगै चावर लगै। विण छेटे ढीले॥३१॥
पोने बयामनगानदे। हभही मरदानें।
दूनों पर्गो निरमलै। दादक अर नानें॥
विरद वहै रजवट्टदा। गरदे वानें।
दिलीदैं पतिमाहदे। दिल अदर मानें॥३२॥
पिरथीराज हमीरमे। है जिनदे पच्छै।
जुद्ध ममें फुले फिरै। मिटदे मन अच्छै॥

पेन्ह सजोवा खोल धर। जोगी गत कच्छै।
खाती हो रिप ब्रिछनों। तच्छै ही तच्छै ॥३३॥
ताजनदे पोते तिलक। सुभटा सिरताज।
स्वांम धरमनौ पालदे। इनदा इह काज॥
खेत छड्डिकै लूणनौ। लावै नां लाज।
वैरी दिट्ठा दौड़दे। ज्यो तित्तर वाज ॥३४॥
कूरम कमधज देवड़े। आये चौहाण।
चाहिल मोहिल साखुले। अरु मुगल पठाण॥
कुली छतीसौ वणि रही। कुद्दै केकाण।
गज अगै करि भिडननौ। चडिया दीवाण ॥३५॥
रजपूतांसू........कहै। आपै दीवांण।
जग विच जोइ जनमिया। सो मरै निदाण॥
मरण वड़ा सोई वडा। सिख रखौ काणं।
सत साहससू जो मरै। जीतव तिह जाणं ॥३६॥
निल्ले पीले उज्जले। वैवोर कुमैत।
अबरस मुसकी मगसी। खिग हरियल अैत॥
हुये सजोईल सूरिवा। घोड़े पखरैत।
खुरी करांवै चौपनाल। रावत विरदैत ॥३७॥
करनांयो घर रावदी। बजै सहनाइ।
मारू सीधू सुभट सुणि। ना अग समाइ॥
सत प्यालै मते हुये। रज छाक छकाइ।
दोड़े परदल विच पड़ै। सुधि गई हिराइ ॥३८॥
जुद्ध रागदी सुरति सुणि। होवा चित चाइ।
भुजा फरकै भिडणनो। यह सूर सुभाइ॥
फुल्ले सुभट सजोव विच। तन नाहि समाइ।
कदली दल ज्यों कापुरुस। डरि डरि थरराइ ॥३९॥
चड़े कटक दहुं वोडथै। रिस धरि मन धाये।
हुवा अंधेरा धूल उड़ि। नभ सूर छपाये॥

विण बोलें को ना लखैं। आपणे पराये।
जेही दरियादी लहर। दूनौं दल आये ॥४०॥
चरण धसम्मी खुद खुर। गिरवर थरराये।
कमठ कलमल्या कसमस्या। धौलैं सुख पाये।
सेस सास रूंध्या हीया। अग अग मैं छाये।
करन अहेडा जिददा। दूनो दल धाये ॥४१॥
जाण मजोइ लहं घटा। गरजत नीसाण।
गोली वोलेसे पडें। अरु बूदें वाण।
चद्रवाण निस विच वणे। विजली चमकार।
अधी ल्याई मेहनी। दल बूलन जाण ॥४२॥
असु हीसैं मैमत गज। मद वहे हकारैं।
मार मार ही सूरिवा। मुह वैण उचारैं॥
दुद मच्या विग्चै कटक। मारैंही मारैं।
दिनकू दिन को ना कहैं। हुभ रैण विचारैं ॥४३॥
चटकैं तीर चलावदे। कर सुभट कमाण।
अटकैं विचही आवदे। वाणैंसू वाण॥
सटकैं मिसरी म्यानथैं। वाहैं करपाण।
लटकैं सिर वै नस लगैं। नालक दूजाण ॥४४॥
दुह दल अग्गे गज वणे। उमेंडे घण काले।
गुज गरज वगपतमे। हैं दत उजाले॥
मद वरमणि भकस असणि। घूमणि मतवाले।
मदिर जेहे गज वण। अरु सुड पनाले ॥४५॥
हाथीमू हाथी लडें। मद वहत अपार।
मिली जाण काली घटा। वरसदी जल धार॥
वाघ चली है जोरदी। कवि कीया विचार।
तर तमालदे ज्यौं मिले। तेही उणिहार ॥४६॥
हाथी देखे आवदे। मुख सुभट अपार।
घटा देख ज्यों होइ सुख। सजोगिण नार॥

छुट्टे जग-दल विच फिरनि । तिन्ह येहा हाल ।
भैंही पसर उछेर कर । जाएू सूते ग्वाल ॥६१॥
गोली निकली अग गज । चलणी उणिहारे ।
दीसै घाव दुसार यो । ज्यो नभ विच तारे ॥
पड़े रुख धर पवनथैं । कवि वेद विचारे ।
कै जाएूं मन्दिर ढह गये । वरपादे मारे ॥६२॥
हसती मारणि कोह कर । जे सुभट सुजात ।
हाथी धरती पर पये । तिन्हंदी सुणि वात ॥
येहे लग्गे जांन कहि । काले गज गात ।
पड़छाही सी देखिये । कै सुती रात ॥६३॥
तीन पाव कुजर कटे । तरवारी घाव ।
डिग हथ्थी भू पर पया । मगरादं दाव ॥
हिक्क पाव उप्पर खड़ा । सुणि येहा भाव ।
तल तर जड़ उप्पर हुई । उखल्या लगि वाव ॥६४॥
मद वहंदे रहदे नही । दौडै मैमती ।
दती दती आप विच । होवै चौ दती ॥
धोलै धोलै दत मुह । जेही बगपती ।
घटा घण विच बीजली । जाणूं चमकती ॥६५॥
हाथी आया खान पर । चीर दंसार ।
खांजी आग्गै तमक कर । बाही तरवार ॥
सुड पई कटि देखिये । येही उणिहार ।
पइया नाग पहाडथै । कवि किया विचार ॥६६॥
और गज आया खान पर । गति परबत जेही ।
झरणैदी उणिहार ही । मद वहदा देही ॥
बरछी मारी खानजी । सुड पैठी केही ।
वबई विच नागण बडी । वह लगै येही ॥६७॥
आगै परै न धर सकै । दती मैमत ।
बाव हलावै रूखनौ । त्यो गज थररत ॥

वरछी सुड झकोल कर । काढी इह भत ।
सर्प सर्पनो देखिये । निगलत उगलत ॥६८॥
खादे चक्कर सूरिये । वहुले गज मारे ।
हार गई भुज मारदे । चित नाही हारे ॥
वरछी पोये पीलवान । कवि भेद विचारे ।
जाणू कापा लाइके । तर पछ उतारे ॥६६॥
लोहूदे नाले चले । नदिया सीआणी ।
गोला लग हाथी पये । धरती कपाणी ॥
उछली वुदे रगतदी । तिसक्या नीसाणी ।
जाणु कराडा टुट्टिके । पइया विच पाणी ॥७०॥
वजे झुझाऊँ दुहु दल । नीसाण गमके ।
तीर चक्र छणके करे । अरु साग धमके ॥
सुकारे गोली करे । तरवार झमके ।
जाणुं काली घटा विच । वै वीज चमके ॥७१॥
हथ्थी हथ्थी जुद्ध करे । और लडे महावत ।
पाइकसूं पाइक भिडे । रावतसू रावत ॥
सुभटसू निपट निसक होइ । मारणनो धावत ।
काइर कोट जतन करे । जिद वोट वचावत ॥७२॥
भले भिडे भिड आपमे । कुद्दे कर छाले ।
वोट होइ कर चोटनो । वै नाही टाले ॥
सागी मारे धर पये । तरफे कर डाले ।
लहरी लैंदे देखिये । साये अहि काले ॥७३॥
लगे ताजणी कोह कर । असु वरी जगद ।
हस्तीदे मस्तक चढ्या । चित्त वीच आनद ॥
नाल रह्या गडि सीम गज । सुणि उकति निरद ।
जाणू निकल्या दूजनो । दुतियादा चद ॥७४॥
सुभट सुभट लड रत रगे । कर खेल धमाल ।
सभनादे गल विच हाव । है कपट लाल ॥

उछलंदे असवार यो। लगि गोली नाल।
वदर लेदें देखिये। उलटी कर छाल ॥७५॥
भिडदे भार आप विच। सुभटाँदे झुड।
हाथ पाव कटि कटि पवें। अरु फुट्टै मुड॥
टूटि गई करवार भी। हथी रहे टुड।
चगे न्हाये सूरिवा। धारादै कुड ॥७६॥
वरछी वाही सूरिवें। जेही विच जाणी।
चोट लगी रत उछलै। विच सिप्पर आँणी॥
सिप्पर वरछी पोडली। तिसक्या नीसाँणी।
जाणू किरछित नालिया। भीगदै पांणी ॥७७॥
लोहँसू लोहा मिलें। सुणियै ठणकार।
झाल सहारैं लोहदी। सापुरस झुझार॥
गज्जै जोधा क्रोध विच। अरु वज्जै सार।
कुंभ फुटि सिर टुट्टिदे। छुट्टै रत धार ॥७८॥
फडफड़ाहि सिर सुभटदे। वैं तनथैं न्यारे।
मार मार विण और कुछ। नां वैण विचारे।
तडफडाहि धर धरणि पर। सिर विण वेचारे।
डगमगाहि घाइल चरण। मद्धवें उणिहारे ॥७९॥
लोहू नदी सुरस्सती। जमना गज मारे।
गंगा जेहे दद मुह। करतार सँवारे।
तिरवैणी सगम होवा। जान भेद विचारे।
सुभट परे रत न्हावदे। जाणू पूजारे ॥८०॥
पड़े सूरिवां खेत विच। अरु कुजर पास।
सुड लगी मुँह सुभटदै। सुणि उकत प्रगास॥
जाणू सुत्ते देख कर। पीवणदी प्यास।
निकल्या सर्प पहाड़थैं। पीवदा स्वास ॥८१॥
अंदादे धगे कीये। हौर मणके सीस।
गज सुडादे मेर कर। माला कीनी ईस॥

करैं कपरदी रत डिहूँ। सुमिरण जगदीस।
अति हरिखिदा जान कहि। दे सुभट असीस ॥८२॥
मुडहदी माला करी। पुजे सिव काज।
गलैं लग्गि सुभटा मिल्या। मन फुल्या आज॥
सूरादे लोइण खुले। अति रहे विराज।
गिरझैं दौडे अस पर। ज्यौं दल वैं वाज ॥८३॥
पडे सूरिवा खेत विच। घाव भकभक बोलैं।
पास न आवैं गिदडे। वैं भगदे डोलैं॥
....वेखैं मुछा हलदी। जद पवन झकोलैं।
गिरझ अखदा त्यौर तकि। मुह नाही खोलैं ॥८४॥
धूल पई उड नैण विच। डिठ त्योर छिपाये।
निडर होइ द्रिग सूरदे। तद गिरझौं खाये॥
अख वाझ तन सुभटदे। दिट्ठा रहसाये।
तद सियाल डिठ वधकैं। खाणनौ आये ॥८५॥
अत किलकदी चौंपनाल। जुग्गिन उठि धाई।
घाण पया जित सुभटदा। तित प्यासी आई।
खप्पर भर छाणहि रगत। दिल विच हरखाई।
रैणी जाण कसूमुदी। रगरेज चढाई ॥८६॥
हाथी कटि धरती पये। घाइल होइ भारी।
जिद निकाल्या सूरवें। सागोदी मारी॥
जुगिण गज उतरैं चढे। जेही उणिहारी।
टिब्बें चडि चडि कुद्दी। ज्यो कन्या कवारी ॥८७॥
रिण विच वस जुगणी। मिलि करी धमाल।
पिचकारी गज सुड कर। छिडकैं रत बाल॥
लाल हुये रग हभादे। रग रगत गुलाल।
मुड कुड विच न्हाइ कर। वैं हुई निहाल ॥८८॥
पीवें प्यालैं खोपरी। मिलि जुगिणी बाली।
मद लोहूथैं हढिहें। हभैं मतवाली॥

गजक कलेजेदी करी। अंखा विच लाली।
अंदा विच गिरभ्भाँ फँधी। ज्यों पंखी जाली ॥८६॥
मुड किथांहूँ कटि पये। धड़ सिरथैं न्यारे।
रज सहदा प्याला पीया। डर मरण निवारे॥
राह केत अम्रित लिया। वे मरहि न मारे।
अमर हुये मरि सूरिवां। अहदी उणिहारे ॥९०॥
दित्ती अदैं गिरभ्भनौं। होर अख कराल।
लोहू दित्ता जुगणी। होर सिभ कपाल॥
हड्ड सुधर तीनो दये। चंम मास सियाल।
हभ तन दित्ता वंडि कर। जस लया मुछाल ॥९१।
साहिमखां सिरदार है। जिस वड्डा तोल।
सही भतीजा खानदा। जग रख्या बोल॥
येदल नाथा भाइया। कम्माल अमोल।
काइम दोइ जमालखां। रिए करहि कलोल॥
तुग्गू हदे मुजाहदा। भीषन बहलोल।
लाडू अरु पेरोजखा। पइया हिक कोल॥
खानूं अबू सरीफ भी। रगिया रग चोल।
अरु मारूफ सिकदरै। सहिया झकझोल॥
खानूं खासा खानदा। भिड़िया दै ढोल।
उदा परता चतुरभुज। रांणां खग खोल॥
कौजू हरदा मनोहर। जग्गा घमरोल।
दोदराज मोहन जुगल। तेगा तन छोल॥
किसदा किसदा नांव ल्यौ। झूझे हभ टोल।
यो खधी तलवार मुंह। ज्यो खाहि तबोल।
खां उपर हभ सथ्थनै। जीव सट्या बोल ॥९२॥
सुभट मुये दुह बोड़दे। आवै नां गिणाए।
हय गय नर मिलकै पया। कीचक धमसांए॥

पातसाहदै कमनो । भूझे दीवाए ।
हूर भिसत विच ले गई । बैठाइ विवाए ॥६३॥
अलिफखादी जोडनो । उमराव न आए ।
जहाँगीर पतिसाह भी । यो किया वखाए ॥
जीवदे बहु गढ लीये । जाएत जहाए ।
मुये भिसत ली जाइ कर । धन वन दीवाए ॥६४॥
येहा जुध संसार विच । किनही न मचाया ।
दुहू वोडदे सूरिवा । हिक जीव तन पाया ॥
विरचे जोधा आप विच । किरचेकी काया ।
जगतै विसभर भगि कर । जिद आप वचाया ॥६५॥
स्वाम धरम पाल्या भले । चिकवै चौहाँए ।
पातसाहदै कमनौ । दित्ता जीव दाए ॥
जाग्त आवै खानदी । चलि सकल जहाए ।
करामात परगट हुई । सिझ्झे दीवाए ॥६६॥
नाव घिएदे अलिफखा । दुख दालद भग्गै ।
मनदी मनसा पुज्जवै । भाग सुत्ता जग्गै ॥
पावै धन सुत लखमी । जोई दिल मग्गै ।
हम कुह पावै भोर उठि । जो पैरा लग्गै ॥६७॥
सुभट सुणै गल हथ्थियार । तौ रथ्थी लीजै ।
जेही कीती अलिफखानु । जेतेही कीजै ।
पाएी हथियारा हदा । अम्रित ज्यो पीजै ॥
कडही नाव मरै नही । जै देही छीजै ॥६८॥
ढाढी पठ पजावदी । बोली पहिच (चानी ?)
वह तौ सुध आवै नही । जे करू वढ (वढानी ?)
भापादी चिता नही । गल सची ज (जानी ?)
उकत विसेख जु कहि गये । सोई परव (वानी ?) ॥६९॥

सोलहसै ईकईसमे । जनमे दीवांण ।
कीये ऊजले क्यामखा । चकवै चौहांण ॥
संवत हुवा तियासिया । लैखै परवांण ।
वैकुठ पहुंचे अलिफखा । छड्ड दीया जहांण ॥१००॥
॥ इति श्री दीवांन अलिफखांकी पैड़ी संपूर्ण ॥

सम(मा)प्ता ।अथ संवत् १७१६ मिती कातिक वदी ११ सनीसरवार । तारीख २३ मा० मुहर्रम सन् १०७० लिखाइत पठनार्थ फतैहचंद लिखंत भीखा ॥

———०———

क्यामखा रासाके टिप्पण

पृष्ठ १, पद्यांक ९ नूर महम्मदको रच्यो

ग्रन्थकर्ताने, मुसलमान होनेके कारण, जगतकी सृष्टिकी मुसलमानी परम्पराका अनुसरण किया है।

पृष्ठ ४, पद्यांक ३८ याकै राजा आद हुव

इस पद्यसे जाँनने हिन्दू परम्पराको मुसलमानी परम्परासे जोडनेका प्रयास किया है। इसके अनुसार आदमसे अनेक पीढियोंके बाद आदि, अनादि, पुणादि, ब्रह्मादि, मेरु, मन्दर, कैलास, समुद्र, वणिक, राहु, रावण और धुंधुमार हुए। धुंधुमार चक्रवर्ती राजा था।

शायद यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि यह कल्पित वंशावली पुराणसम्मत नहीं है।

पृष्ठ ४, पद्यांक ४४ प्रगट्यो तिहि मारीच सुत

सम्राट् धुंधुमारको मरीचि ऋषिका पिता बताना शायद चौहानोंके भाटोंकी कल्पना रही होगी। मरीचि तो केवल ऋषि मात्र थे।

पृष्ठ ४, पद्यांक ४५ याकै राना जमदग्नि

मरीचिका जमदग्नि, जमदग्निका परशुराम, परशुरामका शूर, शूरका वत्स, वत्सका चाहु और चाहुका चन्द्रमान इमरणसे उत्पन्न चाहुवान—यह नवीन चौहान परम्परा किसी अंशमें कल्पित होती हुई भी महत्त्वपूर्ण है। सभी चौहान अपनेको वत्स गोत्री मानते हैं, किन्तु सभी अपनेको वत्सकी सन्तान माननेके लिये तैयार नहीं हैं। क्योंकि वत्स गुरु गोत्र भी हो सकता है। क्यामखा रासामें स्पष्टतः इन्हें ऋषि वत्सकी सन्तान माना गया है, और यही सम्भवतः ठीक है। क्योंकि अनेक प्राचीन प्रमाणों द्वारा इस कथनकी पुष्टि की जा सकती है। बिजोल्याके शिलालेख (सं १२२६) में स्पष्ट लिखा है कि प्रथम चौहान राजा अहिच्छत्र पुरका वत्स गोत्री 'विप्र' अर्थात् ब्राह्मण था। सूंधाके संवत् १३१९ और अचलगढ़ (आबू) के संवत् १३७७ के शिलालेखोंमें भी चौहानोंका वत्स ऋषिसे सम्बन्ध, प्रायः इतना ही स्पष्ट है। केवल पृथ्वीराज रासाके आधार पर उन्हें अग्निवंशी मानना इतिहास विरुद्ध है। वस्तुतः आरम्भमें चौहान ब्राह्मण थे धर्मकी रक्षाके लिए क्षत्रियोचित कार्य सम्भालनेके कारण, बादमें उनकी गणना क्षत्रियोंमें की गई। प्राचीन कालमें इसी तरह ब्राह्मणोंसे अनेक क्षत्रिय वंशोंका और क्षत्रियोंसे अनेक ब्राह्मण वंशोंका प्रवर्तन हुआ है।

पृष्ठ ५, पद्यांक ५० समर लयो निकास जिह

पृथ्वीराज विजय एवं बिजोल्याके शिलालेखमें वासुदेव चौहानको सांभरका उत्पादक माना गया है। शायद उसका यह मतलब हो कि इसी राजाने सब प्रथम शाकम्भरी क्षेत्रको झीलका रूप देकर नमक निकालना आरम्भ किया हो।

पृष्ठ ५, पद्यांक ५४. क्यामखान देवरे सीसोदिये......

चौहानोंकी शाखाओंकी यह सूचि महत्त्वपूर्ण है; किन्तु इनमेंसे कुछ अपने आपको अब चौहान नहीं मानते। विषय गवेषणीय है।

नैणसीके अनुसार चौहानोंकी निम्नांकित शाखाएँ थीं—

सोनगरा, खीची, देवडा, राकसिया, गीला, डेडरीया, वगसरिया, हाडा, चीया, चाहिल, सेलोत्त, बेहल, बोडा, बोलत, गोलासण, नहरवण, वंस, निर्वाण, सेंपटा, ढीमडिया, हुरडा, म्हालण और वकट।

कर्नल टॉडके अनुसार २४ शाखाएँ ये थीं—

चौहान, हाडा, खीची, सोनगरा, देवडा, पविया, सांचोरा, गोहेलवाल, भदोरिया, निरवाण, मालण, पुरबिया, सूरा, मादडेचा, संकरेचा, भूरेचा, बालेचा, तरसेरा, चाचेरा, निकुंभ, रोसिया, चांदू, भांवर, वंकट।

पृष्ठ ६, पद्यांक ५८. राज कियो है दिल्ली में मानक दे चहुवांन......

दिल्लीमें मानिकदे आदि चौहानोंका शासन राजभाटों और कवियोंकी कल्पना मात्र है। विग्रहराज चतुर्थसे पूर्व दिल्लीमें चौहानोंके राज्यके लिये कोई प्रमाण नहीं दिया जा सकता। क्यामखां रासाकी वंशावली और घटनावलीका यह भाग अधिकांशमें कल्पित है।

पृष्ठ ७, पद्यांश ८२ से. धंधका अप्सरासे सम्बन्ध और उससे क्यामखांके पूर्वजोंकी उत्पत्ति......

ऐसी कल्पित कथायें अन्य ऐतिहासिक व्यक्तियोंके विषयमें भी प्रचलित हैं।

पृष्ठ १०. पद्यांक ११०, ताके गूंगा वैरसी......

क्या यही ददरेवेका वीर चौहान है? हम एक पीढीके लिये लगभग चौबीस वर्ष रखें तो गूंगा महमूद गज़नवीके समकालीन बैठता है।

पृष्ठ ११, पद्यांक ११६. तिहुंनपाल सुत ऊपज्यो मोटेराई सकाज......

ददरेवेमें चौहानोंका राज्य पर्याप्त प्राचीन समयसे है। डाक्टर टैसीटोरी द्वारा सपादित संवत् १२७० के शिलालेखमें मंडलेश्वर गोपालके पुत्र राणा जयतसिंहका उल्लेख है।

(एशियाटिक सोसाइटी बगालका मुखपत्र, पु० १६, पृ० २५७)

पृष्ठ ११, पद्याक १२७. उतरें हे हिसारमें आइ......

इस पर पृष्ठ ११४ की क्यामखांकी मृत्यु पर की टिप्पणी देखे।

पृष्ठ १४, पद्यांक १६२. फौजदार करि क्यामखा, सौंपी डिल्ली ताहि।
आपुन दलबल साजिकै, चले ठटाकौं साहि॥

फिरोजसाह तुगलकने सन् १३६२ मे ९०,००० सैनिक लेकर ठटा पर आक्रमण किया। सिंधियोंने तुगलक सुल्तानका इतनी वीरतासे सामना किया कि उसे ठटाका घेरा उठा कर

कुछ समयके लिए गुजरात लौटना पडा। सेनाके बहुतसे आदमी भूख, प्यास और बीमारीसे रास्तेमें मर गये। दिल्लीमें भी बहुत दिनसे कोई समाचार न पहुँचनेके कारण घबराहट फैल गई। केवल प्रधान मन्त्री मलिक मकबूलकी सावधानीसे स्थिति सभली रही। बादशाहकी अनुपस्थितिमें दिल्लीका कार्यभार इसीके हाथमें था। चौहानवंशी क्यामखांकी तरह मकबूल भी किसी समय हिन्दू था। किन्तु उसकी जाति राजपूत नहीं, ब्राह्मण थी और वह शुरूमें तेलिंगानेका रहने वाला था। उसको मुसलमान बनानेका श्रेय भी फिरोज तुगलकको नहीं, मुहम्मद बिन तुगलकको है। मकबूलकी मृत्यु सन् १३७२-७३ में हुई। क्यामखां उससे कहीं अधिक समय तक जीवित रहा। उसकी मृत्यु सन् १४१९ में हुई। (देखें, शम्स सिराज अफीफकी तारीख फिरोज शाही)

पृष्ठ १५, पद्यांक १७७ क्यामखानको नाम तब, राख्यो खानु जहान

रासाके कथनानुसार क्यामखांने मुगलोंको हराया। इससे प्रसन्न होकर सुल्तान फिरोजशाहने उसे 'खान जहा' की उपाधि दी। किन्तु यह कथन भी अशुद्ध है। फिरोज़शाहके समय मुगलोंसे युद्ध प्राय बन्द ही रहा। वास्तवमें क्यामखानी क्यामखां तो जीवनके अन्त तक क्यामखां ही रहा। खां जहाकी उपाधि तो उस मकबूलको मिली, जिसका हम उपरोक्त टिप्पणमे निर्देश कर चुके हैं। मकबूल (खां जहा) की मृत्युके उपरान्त फिरोज़शाहने उसके पुत्रको खां जहाकी उपाधि दी।

रासाके रचयिताने यह भूल क्यों की इसका हमने अन्यत्र विशद रूपसे विचार किया है। यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि मकबूलको भी खां जहा बननेसे पूर्व किवाम उल मुल्ककी पदवी मिल चुकी थी। अत एक किवामके कार्योंको अनेक सदियोंके बाद दूसरे प्राय तत्सामयिक ही अन्य किवामके समक्ष लेना कोई बडी बात न थी। (देखें, इलियट और डाउसन, ३, ३६८)।

पृष्ठ १६, पद्यांक १८० जबहि भयौ बस कालकैं फेरोसाह सुलतान।
तब महमद महमूदनें, फेरि जगुमें आन॥

वास्तवमें फिरोज़शाहके उत्तराधिकारियोंकी परम्परा निम्नलिखित थी—

१	गियासुद्दीन तुग़लक़ द्वितीय सन्	१३८८
२	अबूबक्र तुगलक़	१३८९
३	मुहम्मद तुगलक़	१३९०
४	अलाउद्दीन सिकन्दर तुगलक़	१३९४
५	नासिरुद्दीन महमूद तुगलक़	१३९४
६	नसरत तुगलक़	१३९६ (५ का प्रतिपक्षी)
७	महमूद तुगलक़	१४०१ (पुन स्थापित)

रासाके रचयिताने केवल मुहम्मद और महमूदके नाम दिये हैं। संभव है कि क्यामखांका मुख्य कार्यकाल १३८८ से १४१२ का यही अशांतिका समय रहा हो।

पृष्ठ १६, पद्यांक १८२. तब नसीरखां पुत्र उहिं, ठौर गही ततकाल।......

नसीरखांसे मतलब संभवतः नासिरुद्दीन महमूदसे हैं। इसके लिये हमारा मल्लूखां पर टिप्पण देखें। यह कुछ समय तक दिल्लीका नाममात्र सुल्तान था।

पृष्ठ १६, पद्यांक १८५. मल्लूखां चेरौ हतो......

मल्लखां दीपालपुरके सूबेदार सारंगखांका भाई और सुल्तान महमूद तुगलकके समयका प्रभावशाली सरदार था। अपने प्रतिद्वन्दी सादतखांसे विद्वेषके कारण जब सुल्तान महमूद बयाना जाता हुआ ग्वालियर पहुँचा तो मल्लूखांने एक षडयंत्रकी रचना की। भेद खुलने पर मल्लूखांके अनेक साथी मारे गये; किन्तु स्वयं मल्लूखां बच निकला। दिल्ली पहुँच कर उसने मुकर्रबखां नामके अन्य प्रभावशाली सरदारके यहाँ आश्रय ग्रहण किया और उसकी सहायतासे केवल क्षमा ही नहीं, इकबालखांकी पदवी भी सुलतानसे प्राप्त की। सादतखां भी मौन न रहा। कई अमीरोंको अपने पक्षमें कर फिरोजशाहके एक पुत्रको उसने नसरतशाहके नामसे गद्दीनशीन किया। जून सन् १३९८ मे, मल्लूखां नसरतशाहसे जा मिला और कुरान पर शपथ खाकर उसे दिल्ली ले आया। दो दिनके बाद मल्लूखांने नसरतशाह पर धोखेसे हमला किया और उसे पहले फिरोजाबाद और फिर पानीपतकी तरफ भगा दिया। अपने शरणदाता मुकर्रबखांको भी इसी तरह उसने धोखा दिया, और उसे मार कर महमूद तुगलकके नाम पर, कुछ समय तक राज्य-शासन अपने अधिकारमे रखा।

इसी साल तिमूरने भारत पर आक्रमण किया। मल्लूखांको हराना उसके लिये बांये हाथका खेल था। सुलतान महमूदने गुजरातमें शरण ली। मल्लूखां बरान (बुलन्दशहर) भाग गया। वहां भी उसने किसी अंशमे अपना आधिपत्य जमाया, और अपने कुछ प्रतिद्वन्दियोंको धोखेसे मारा। सन् १४०५ मे दिल्ली लौट कर मल्लूखांने सुल्तान महमूदको वापिस बुलाया और उसे एक महलमे कैद कर उसके नामसे राज्य किया। एक साल बाद सुलतान महमूदने कन्नौजमे अपना डेरा जमाया। सन् १४०४ मे मल्लूखांने सय्यद खिज्रखां पर चढाई की और पाकपट्टनके निकट युद्धमे मारा गया।

उसके जीवनकी उपर्युक्त घटनाओंसे स्पष्ट है कि मल्लूखां वास्तवमे पक्का बेईमान था। किन्तु रासाकारने यह बात माननेमें भूल की है कि उसने नासिर महमूद शाहका वध किया था। उसने केवल जहाँ तक संभव हुआ उसे कैद रखा। यह बहुत संभव है कि मल्लूखांकी बेईमानीसे रुष्ट होकर सन् १४०१ में क्यामखांने उसका विरोध किया हो। (मल्लूखांके विशेष विवरणके लिये देखें, तारीख मुबारकशाही, इलियट एण्ड डाउसन, खंड ४, पृष्ठ ३२-४०)।

पृष्ठ १९, पद्यांक २२२-२४. तक का वर्णन.. ..

रासाने इस पृष्ठके वर्णनमें क्यामखांको प्रायः उत्तर भारतका सम्राट् बना दिया है। यह वर्णन स्पष्टतः अतिशयोक्ति-पूर्ण है।

पृष्ठ २०, पद्यांक २३७ खिदरखान्का सौंपकै, दिली चले पतिसाह

तिमूरने खिज्रखांको दिल्लीका राज सौंपा था नहीं इस विषयमें इतिहासकारोंमें मतभेद है। उस समयके इतिहास तारीख मुबारकशाहीमें केवल इतना लिखा है कि कुछ दिन बाद खिज्रखा जो तिमूरसे डर कर मेवातके पहाड़ोंमें भाग गया था, बहादुर नाहिए, मुबारकखा और जिरकखाके साथ तिमूरसे मिला। तिमूरने खिज्रखाके सिवाय सबको कैद कर लिया। तिमूरने खिज्रखाको मुल्तान और देपालपुरकी जागीर दी और उसे वहाँ भेज दिया। (इलियट और डाउसन, खंड ४, पृष्ठ ३५ ३६)।

पृष्ठ २१, पद्यांक २४१ —

रासाका यह कथन ठीक नहीं है कि तिमूरके चले जाने पर खिज्रखाने दिल्ली पर अधिकार कर लिया और मल्लूखा दिल्लीको वापस लेनेके प्रयत्नमें मारा गया। वास्तविक घटनाके लिये मल्लूखा पर टिप्पण देखें।

पृष्ठ २१, पद्यांक २४२ से —

रासाकारने एक नवीन खिदरखाकी असत्य कल्पना की है। एकको उसने दिल्लीमें तिमूरका अधिकारी बनाया है और दूसरेको मुल्तानका सूबेदार माना है। वास्तवमें मुल्तानके सूबेदारका ही नाम खिज्रखा था और कुछ इतिहासकारोंके मतानुसार तिमूरने हिन्दुस्तानमें अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया था। रासाने गल्तीसे दौलतखाको खिज्रखा पठानका नाम दिया है। सय्यद खिज्रखाका प्रतिद्वन्दी और क्यामखाँका शत्रु था। उसीसे खिज्रखाने दिल्ली छीनी। (इलियट और डाउसन, ४, ४५)।

पृष्ठ २४, पद्यांक २८२ ८३ —

खिज्रखाने भाटियों, क्यामखानियों, साखलों आदिकी सहायतासे राठौड़ वीर चूडा पर चढ़ाई की। जब खिज्रखा मरोट पहुँचा तो भाटी राजकुमार बाघाने उसका अच्छा स्वागत किया। जागलूके देवराज साखलेने मुसलमानोंको सहायता दी। नागोरके दुर्गका द्वार स्वयं चूड़ाने खोल दिया और वीरतापूर्वक युद्ध करता हुआ धराशायी हुआ। (देखें, छद राउ जइतसी)।

पृष्ठ २५, पद्यांक २८९ से क्यामखांका मुल्तानके खिज्रखांको सहायता देना

मल्लूखांकी मृत्युके बाद दौलतखाके हाथमें राजकार्यकी बागडोर आई। महमूद नाममात्रके लिये सुल्तान बना रहा। सन् १४०७में खिज्रखाने दौलतखां पर आक्रमण किया। दौलतखाके सब साथी खिज्रखांसे जा मिले। इनमें क्यामखां भी रहा होगा। खिज्रखाने विजयी होने पर हिसारका जिला (सिकक)क्यामखाको सौंप दिया। दिसम्बर १४०७ में सुल्तान महमूदने हिसार पर आक्रमण किया और क्यामखान उससे मिल कर अपने पुत्रको सुल्तानके पास भेज दिया। रासाने इसी आक्रमणको हिसार पर खिज्रखा पठानका आक्रमण मान लेनेकी भूल की है। विग्रह भी दूसरे पक्षकी हुई, क्यामखाकी नहीं। सन १४१२ में सुल्तान महमूदकी मृत्यु

हो गयी और दिल्लीके अमीरोंने दौलतखांको गद्दी पर बैठाया। रासाने फिर भूलसे यह मान लिया है कि अमीरोंने खिद्रखां पठानको गद्दी पर बैठाया। खिद्रखां पठानके स्थान पर दौलतखां करने पर, रासाकी बातें प्रायशः ठीक और उक्तिसंगत बैठ जाती हैं।

रासामें लिखा है कि खिदरखां पठान (वास्तवमें संभवतः दौलतखां) के हिसार पर आक्रमणसे क्रुद्ध होकर क्यामखां मुलतान पहुँचा और वहांके सूबेदार खिजरखांको दिल्ली पर चढ़ा लाया। शायद यह कथन ठीक ही है। कमसे कम यह तो निश्चित है कि क्यामखांने खिज्रखांका पक्ष लिया था। सन् १४११ में उसने खिज्रखांसे हिसारकी शिकदारी प्राप्त की थी। सन् १४१४ के मई मासमें जब खिज्रखां ने दिल्ली पर कब्जा किया तो उसने दौलतखांको किवामखां (क्यामखां) को सौंप कर हिसारके किलेमें कैद कर दिया। (देखें, इलियट और डाउसन, ४,४२–४५)।

पृष्ठ २६, पद्यांक ३०१. येक द्योस तो क्यामखां, ठाढे हुते सुभाइ।
खिजरखानु दीनो धका, परो नदीमें जाइ॥

खिज्रखांके हाथ क्यामखांकी मृत्युका तारीख-मुबारकशाहीमें निम्नलिखित वर्णन है–

"सन् १४१९ – खिज्रखां बदाऊंकी तरफ बढा और कस्वा पटियालीके पास उसने गंगाको पार किया। जब (बदाऊंके अमीर) महाबतखांने यह सुना तो उसका हृदय धक्से रह गया, और उसने घेरा सहनेकी तैयारी की। खिज्रखां ६ महीने तक घेरा डाले रहा। जब वह दुर्ग को हस्तगत करने वाला ही था, उसे मालूम हुआ कि दिवंगत सुल्तान महमूदके कुछ अमीरोंने उसके विरुद्ध षडयन्त्रकी रचना की है...इनके अन्तर्गत किवाम (क्याम) खां इख्त्यारखां थे। ज्योंही खिज्रखांको यह मालूम हुआ उसने घेरा उठा लिया, और दिल्लीकी तरफ कूच किया। रास्तेमें गंगाके किनारे २० जुमादल अव्वल, ८२२ हिज्री सन्के दिन किवामखां (क्यामखां) इख्त्यारखां और सुलतान महमूदके दूसरे अफसरोंको पकड़ कर उसने राज्य-द्रोहके अपराधमें मरवा डाला और फिर स्वयं दिल्ली वापस गया। (तारीख मुबारकशाही, पृष्ठ ५१, इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४)।

रासाके वर्णनानुसार क्यामखां निरपराध था। केवल सन्देह और व्यर्थके भयके वशीभूत होकर खिज्रखांने उसे मार डाला।

पृष्ठ २६, पद्यांक ३०४. जीयो वरस पचांनुवें क्यामखानु चहुवान।......

क्यामखांनुंका ९५ वर्षकी आयुमें मरना कई कारणोंसे असंगतपूर्ण प्रतीत होता है—

(१) षड्यन्त्रका नेतृत्व ही नहीं, सेनामें खिज्रखांके साथमें रहना भी, सिद्ध करता है कि क्यामखां उस समय अतिवृद्ध न रहा होगा। ९५ वर्षका बुड्ढा सेनाके साथ जानेका क्या साहस करेगा ?

(२) रासाके अनुसार फ़िरोज़शाह करमचंद (क्यामखां) को उस समय पकड़ ले गया जब वह हिसार आया। हिसारकी स्थापना सन् १३५१ के बादकी है। करमचंद उस समय नादान बालक था। मृत्युके समय ९५ वर्षकी आयु माननेसे वह फ़िरोज़शाहके राज्यके प्रारंभमें भी सत्ताइस या अट्ठाइस सालका होवा।

(३) क्यामखाका कार्यकाल विशेषतः फ़िरोज़शाहकी मृत्युके बाद है। रासा वाली आयु मानने पर हमें यह भी मानना होगा कि क्यामखाके मुख्य युद्ध आदि उसके ६४ वर्षके हो जानेके बाद हुए।

(४) रासाके अनुसार क्यामखाका पुत्र ताजखा बहलोलखा लोदीके राज्यमे वर्त्तमान था। बहलोल सन् १४५१ में गद्दी पर बैठा। ताजखाको उस समय ६० सालका मानें तो उसका जन्म सन् १३९१ में होना चाहिये। रासा द्वारा दी गई क्यामखाकी आयु स्वीकृत करने पर हमें यह मानना पड़ेगा कि क्यामखांके सब से बड़े पुत्रका जन्म उस समय हुआ जब क्यामखा ६७ वर्षका हो चुका था।

पृष्ठ २७, पद्यांक ३११ खिजरखानुपै ना गये, रह्यो बुलाइ बुलाइ।
बैठे रहे हिसारमैं कर्‌यो जुहार न जाइ॥

रासाके इस कथनके अनुसार कायमखाके पुत्रोंने हिसारको अपने अधिकारमे रखा, किन्तु तारीख मुबारकशाहीसे स्पष्ट है कि अपनी मृत्युसे कुछ पूर्व ख़िज्रखाने हांसी और हिसार मलिक रजब नादिरको दिये थे। ख़िज्रखाके पुत्र मुबारकशाहने हिसार अपने सम्बन्धी मलिक उलाकके मलिक बदाको सौंप दिया।

पृष्ठ २७, पद्यांक ३१३–१५ —

रासाने सय्यद वंशकी सूची इस प्रकार दी है–

(१) खिज्रखां
(२) मुबारक
(३) मुहम्मद फरीद
(४) अलाउद्दीन
(५) अमानतखां

इनमें तीसरे सुल्तानका नाम अशुद्ध है। वास्तवमें यह नाम न मुहम्मद था, और न फरीद ही। ठीक नाम मुहम्मद शाह बिन फरीदशाह है। रासाने पिता और पुत्रके नाम मिला दिये हैं। फरीदशाह सुलतान मुबारकशाहका पुत्र था। अमानतखाके राज्यका वर्णन हमें मुस्लिम इतिहासमें नहीं मिलता। अलाउद्दीनके समयमें ही दिल्लीका राज्य सय्यदोंके हाथसे निकल गया। केवल बदाऊंका जिला ले कर उसने दिल्लीकी बागडोर अपने सामन्त बहलोलशाहके हाथमें सौंप दी।

पृष्ठ २७, पद्यांक ३१७ होसी ऊपर अलन है

अलन शायद इख्त्यारखांका नाम है। (देखिये, अग्रिम ३१८ वां पद्य)।

पृष्ठ २८, पद्यांक ३३१ ताजखांनुं महमदखां, दोऊ रहे हिसार।
ठौर पिता राखी भले ॥

रासाके इस पद्यमें फिर क्यामखानियोंके हिसार पर अधिकारका वर्णन किया गया है।

किंतु जैसा ऊपर निर्देश किया जा चुका है, कुछ समयके लिये तो हिसार अवश्य क्यामखानियोंके हाथसे निकल गया था, और इसी कारण सम्भवतः ताजखां और महमूदखांको कुछ समय तक नागोरीखां (फिरोजखां) के यहां आश्रय ग्रहण करना पड़ा।

पृष्ठ २९, पद्यांक २४० से. राणा मोकलसे नागोरके खां और क्यामखानी भाइयोंका युद्ध......

रासाने मेवाड़के स्वामी राणा मोकल और नागोरीखांका अच्छा वर्णन दिया है। राणाकी विजय इतिहास द्वारा समर्थित है। क्यामखानियोंकी राणा पर विजय संभवतः कल्पित है।

सम्वत् १४८५ (सन् १४२९) के शृङ्गी ऋषिके शिलालेखमें इस युद्धका प्रथम उल्लेख है। क्यामखानी भाई सन् १४१९ में किवामखां (क्यामखां) की मृत्युके बाद ही हिसार छोड़ कर नागोर पहुँचे होंगे। वास्तवमें उन्होंने यदि इस युद्धमें भाग लिया हो तो हम युद्धको सन् १४१९ और १४२९ के बीचमें रख सकते हैं। शिलालेखमें राणा मोकलके दो प्रतिपक्षियोंका वर्णन है—एक फिरोजखांका और दूसरा महमद का। फिरोजखां नागोरका स्वामी था। क्या यह संभव नहीं कि महम्मद उसका मित्र एवं अनुगामी क्यामखानी महमूद हो?

पृष्ठ २९, पद्याङ्क २४१. पहलै तौ गोली चली, और छुटी हथनाल।......

गोलियोंका भारतमें प्रयोग शायद मुगलकालसे आरंभ हुआ। यह उससे पूर्वकी बात है।

पृष्ठ ३१, पद्यांक २६५.—

रासाके अनुसार नागोरीखांसे सर्वथा हारने पर ताजखां वापिस हिसार पहुँच गया। यह बात सर्वथा असंभव नहीं है। क्योंकि सय्यद वंशके परवर्त सुल्तान बहुत निर्बल थे। किन्तु यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण है कि केवल नागोरका खां ही उससे न डरता था; निरवाण, चौहान, तंवर, कछवाहे एवं अनेक अन्य जमींदार भी उसे कर देते थे और उसने खेतड़ी, खरकरा, रेवासा, बौहाना, पाटन, गवरगढ आदिको लूट लिया था।

पृष्ठ ३१, पद्यांक २७४. ताजखांनु जब चलि गये, फतिहखानु सिरमौर।
वैठौ कोट हिसारमैं, भलै पिताकी ठौर।

फतहखांके राज्यका हिसारमें आरम्भ होना भी संभव है। किन्तु यह अवश्य ध्यानमें रहे कि फतहपुरकी स्थापनासे पूर्व बहलोल लोदीने इस पर अधिकार कर लिया था। सय्यद सुल्तान अलाउद्दीनके समय लोदी सरहिन्द, स...सन्नाम, हिसार और पानीपतके स्वामी थे। (तारीखे खांजहां लोदी, खंड ५)।

पृष्ठ ३२, पद्यांक २७९–८०.—

सम्वत् १५०८ में फतहपुरकी स्थापना हुई। उस समय चैत्र शुक्लकी पंचमी थी। हिज्री सम्वत्की यही तिथि सन् ८५७ तारीख २० सफ़रके रूपमें दी हुई है। इन दो तिथियोंमेंसे हमें एकको अशुद्ध मानना होगा। सन् सत्तावन आठसेके स्थान पर सन् पचावन आठसे होने पर यह अन्तर दूर हो सकता है। इसी सालमें बहलोल भी दिल्लीके सिंहासन पर बैठा।

पृष्ठ ३२, पद्यांक ३८२–८३ —

पल्हू, सहेवा, भादरा, भारंग आदि फतहपुरसे बहुत दूर नहीं हैं। सम्भव है कि यहाँ क्यामखानियोंने अपना आधिपत्य स्थापित किया हो।

पातसाहकी चोटसौं रहि ना सके हिसार।

पातसाहसे मतलब बहलोलसे है। किन्तु जैसा ऊपर बताया जा चुका है बादशाह होनेसे पूर्व ही बहलोलने हिसार ले लिया था।

पृष्ठ ३३, पद्यांक ३८६–८७ —बहलोलका रणथभोर पर आक्रमण और फतहखांका जुहार करना

तबकात अकबरीके अनुसार बहलोलने सन् ८८६ हिज्री अर्थात् सन् १४८२ ई० में रणथभोर पर आक्रमण किया। फतहखाने सचमुच इसमें भाग लिया हो तो इससे कायमखानियोंके इतिहासमें निश्चित तिथि मिलती है। हम इसके आधार पर कह सकते हैं कि फतहखाने सन् १४५१ से कमसे कम सन् १४८२ ई० तक राज्य किया।

पृष्ठ ३३, पद्यांक ३९३ माडूका सुल्तान हिसामदीन

माडू मालवा राज्यकी राजधानी था। वहाँ हिसामुद्दीन नामका कोई सुल्तान न था। बहलोलके समय खलजी महमूद प्रथम मालवेकी गद्दी पर वर्तमान था। बहलोलका इस सुल्तानसे दिल्लीके सुल्तान मुहम्मदके समय सन् १४४१ में सामना हुआ। महमूद जब दिल्लीके सुल्तानसे सन्धि कर वापिस जा रहा था, बहलोलने उस पर आक्रमण किया और किसी अशमें विजय प्राप्त की।

हिसामखा नामके एक व्यक्तिका नाम भी इस समय सुननेमें आता है। वह दिल्लीका वजीर और सुल्तान मुहम्मदका परम हितैषी था। बहलोलने मुहम्मदकी सहायता इस शर्त पर की कि हासिमखा कत्ल कर दिया जायगा। (तारीखे खा जहा लोदी, इलियट और डाउसन, खड ५, पृष्ठ ७२)।

पृष्ठ ३४, पद्यांक ४०६ नारनोलतें अरसनकी, आई यहै पुकार।

अरसन इख्तयारखाका ही नाम है। देखो पृष्ठ २७ और इस ग्रन्थका पद्य ३१८।

पृष्ठ ३५, पद्यांक ४१४ फतहखाका काधलको हराना और प्रजाको मारना

हार शायद क्यामखानियोंकी हुई न कि बीकानेरके सस्थापक बीका के चाचा काधलकी। इस युद्धमें बहुगुनके मारे जानसे फतहखा बहुत नाराज हुआ। (देखिये, पृष्ठ ११९ पर का टिप्पण)। अपना सालला शायद सांगाका साला रहा हो। ख्यातोंके अनुसार सागाने २८ विवाह किये थे। इनमे सम्भवत एक सांखली रानी भी रही हो।

पृष्ठ ३५, पद्यांक ४१६ मुस्त्रीखा किरानीका वध

रासाने युद्धस्थलका नाम सरमा दिया है। इतिहासमें मुस्कीखा किरानीका नाम अप्राप्य है। किन्तु जौनपुरके सुल्तान मुहम्मदने सन् १४५२में दिल्ली पर आक्रमणकी इच्छासे

सरसेमें अवश्य मुकाम किया था, वहां बहलोलके पक्षसे फतहखांका उससे युद्ध करना असम्भव नहीं है। परन्तु क्यामखानियोंने सन् १४८२ में ही लोदियोंसे मेल किया हो (देखो, पृष्ठ ११७ का टिप्पण) तो ऐसा अनुमान अवश्य असंगत होगा।

पृष्ठ ३६, पद्याङ्क ४२४. फतहखांका आमेर और भिवानी पर आक्रमण......

इस वर्णनमें कितनी सत्यता है और कितनी अतिशयोक्ति, यह कहना कठिन है।

पृष्ठ ३६, पद्याङ्क ४२२. कांधिल बहु गुन हन्यौ हो, रिस राखत मन मांहि।......

रासाके पिछले वर्णनमें कांधल की पराजयका वर्णन हैं, (देखें, पृष्ठ ११७ का टिप्पण) परन्तु इस पंक्तिसे प्रतीत होता है कि उसने क्यामखानियोंको हराया था।

पृष्ठ ३७, पद्याङ्क ४३६. झुंझनूके शम्सखांका जोधाकी पुत्रीसे विवाह......

यह कथन असत्य प्रतीत होता है। जोधपुर राज्यके संस्थापक और महाराणा कुम्भासे लोहा लेने वाला जोधा क्यामखानियोंसे न कमजोर था और न दवा हुआ जो उन्हें अपनी पुत्रीका डोला भेजता।

पृष्ठ ३७, पद्याङ्क ४४५. चिमनको हंन लीनो नीसांन......

चिमन न जाने कौन था। रासाने इससे पूर्व फतहखांकी जीवन-घटनाओंका वर्णन करते हुए इसका नाम नहीं दिया है। इस श्लाघापूर्ण सवैयेमें जादो (संभवतः भाटियों) को भी फतहखांके परास्त शत्रुओंमें सम्मिलित कर दिया गया है। जान कवि ही तो ठहरा, अत्युक्तिका उसे अधिकार है।

पृष्ठ ३८, पद्याङ्क ४४१. दिल्लीके पतिसाहकौं, वदैं न खानुं जलाल......

यह अतिशयोक्ति प्रतीत होती है। किन्तु झूंझनूके बारेमें सुलतान बहलोल और जमालखांमें वैमनस्य असंभव प्रतीत नहीं होता। (देखो, पृष्ठ २९)

पृष्ठ ३९, पद्याङ्क ४५८–४५९. छापौरी और आमेर पर हमले......

आम्बेर फतहपुरसे काफी दूर है। शायद उस राज्यके किसी भूभाग पर आक्रमण किया गया हो।

पृष्ठ ३९, पद्याङ्क ४६६–६७. बीका और बीदाका भानजा मुबारकशाह......

बीदा बीकानेर राज्यके संस्थापक बीकाका छोटा भाई और द्रोणपुर, छापर आदिका स्वामी था। मुबारकशाहसे इन भाइयोंके सम्बन्धके विषयमें पृष्ठ ११९ का दूसरा टिप्पण देखें।

पृष्ठ ४०, पद्याङ्क ४७७–७८. बीदाका फतहपुर पर आक्रमण......

बीकानेरकी ख्यातोंमें बीदाके इस आक्रमणका वर्णन नहीं मिलता। 'छन्द राउ जइतसीरउ' में अवश्य यह लिखा है कि बीकाने फतहपुर और झूंझनूको अधीन किया और उन्हें बांहका सहारा दे कर कायम रखा (छंद ५६)।

पृष्ठ ४०, पद्यांक ४७८ से बीदाका सहायक दिलावरखां

इसका उल्लेख "छंद राउ जइतसीरउ" में भी है। यह नाहड़ और नरहड़का स्वामी था। बीकानेर राज्यके संस्थापक वीर बीकाने उसे इस प्रदेशसे निकाल दिया (छंद ४५)

पृष्ठ ४२, पद्यांक ४९९ बीका दोसी गयो हो उतते आयो भाजि

बीकाकी अनेक विजयोंका सूजा नगरजोतरचित, 'छंद राउ जइतसीरउ' में वर्णन है। इसने दिल्ली तक धावा किया था (छंद ४६)। यह संभव है कि दोसीके आसपास उसे विशेष सफलता न मिली हो।

पृष्ठ ४३, पद्यांक ५१० से लूणकरणका दोसी पर आक्रमण

बीकानेरके इतिहाससे सभी को ज्ञात है कि दोसी पर आक्रमण बीकाके पुत्र लूणकरणके जीवनकी अंतिम घटना थी। 'छंद राउ जइतसीरउ'के अनुसार क्यामखानियोंने लूणकरणकी अधीनतामें अपनी फौज भेजी थी (छंद ८०)। यह वर्णन ठीक हो तो हमें मानना पड़ेगा कि बीदावतोंकी तरह लड़ाईके समय इन्होंने राव जैतसीका साथ छोड़ दिया था।

क्यामखानियों और राठौड़ोंका वैर काफी पुराना था। रासासे हमें ज्ञात है कि राव बीकाके चाचा रावत थे। कांधलने इन्हें खूब दुःख दिया था और उनकी बहुतसी पैतृक भूमि पर उसने अधिकार कर लिया। रावके विषयमें यह प्रसिद्ध है कि उसने फतहपुरके बहुतसे गाँव जीत लिये (देखिये, दयालदासकी ख्यात, 'सादूल प्राच्य ग्रन्थमाला', पृष्ठ २८)। स्वयं रासाने दौलतखाकी बड़ाई करते समय केवल इतना ही लिखा है कि न उसने दूसरोंकी भूमि दबाई और न दूसरोंको अपनी भूमि दबाने दी (पृष्ठ ४२, पद्य ४६७)। एक गाँवकी जीतको एक प्रान्तकी जीत लिखने वाला कवि जब अपने एक पूर्वजकी स्तुतिमें केवल इतना कहनेको विवश हो तो यह सिद्ध है कि दौलतखा निर्बल शासक था और उसके समय कायमखानियोंको संभवतः अपने राज्यका कुछ भाग छोड़ना पड़ा।

पृष्ठ ४३, पद्यांक ५११ तुरक मान कीनी मदत, जानत सकल जहांन

दोसीके स्वामी पठान अवश्य थे, किन्तु यह बताना कठिन है कि उनके सहायक तुरकमान किस स्थानके अधिकारी थे।

पृष्ठ ४४, पद्यांक ५१८ बाबरका दौलतखाने मिलना

यह मनगढ़त कथा है। हाँ, इससे इतना अवश्य प्रतीत होता है कि क्यामखानी गोवधके विरोधी थे; वे सर्वथा अपने हिन्दू संस्कारोंको न छोड़ सके थे।

पृष्ठ ४४, पद्यांक ५२५ अलवरमें हसनखां

हसनखां मेवाती अपने समयका प्रसिद्ध वीर पुरुष था। गुजरातके प्रसिद्ध एवं प्रताप शाली सुलतान बहादुरशाहको दमन करण दो थी। बाबरके प्रबल विरोधियोंमें यह एक था और इसका प्रभाव इतना अधिक था कि बाबरने इसे विद्रोहियोंकी जड़ लिखा है। (तुजके

बाबरी, इलियट और डाउसन, खंड ५, पृष्ठ २६२)। खानवाके युद्धमें इसने राणा सांगाका साथ दिया था। लगभग चौदहवीं शताब्दीके आरम्भसे उसके पूर्वज मेवातमें राज्य करते आये थे, और उन्होंने अंशतः ही दिल्लीके सुल्तानोंका प्रभुत्व स्वीकार किया था। बाबरने दिल्लीकी विजयके कुछ समय बाद मेवात पर आक्रमण किया। हसनखांने कुछ विरोधके बाद अधीनता स्वीकार की। बाबरने अलवरका दुर्ग और तिजारा अपने अफसरोंको सौंपे और अलवरका खजाना हुमायूंको दिया, किन्तु हसनखांको भी उसने नाराज न किया। मेवातके बदले बाबरने कई लाखकी एक अन्य जागीर उसे दी। (वही, पृष्ठ २७३–४)।

पृष्ठ ४५, पद्याङ्क ५३२. निरबांन......

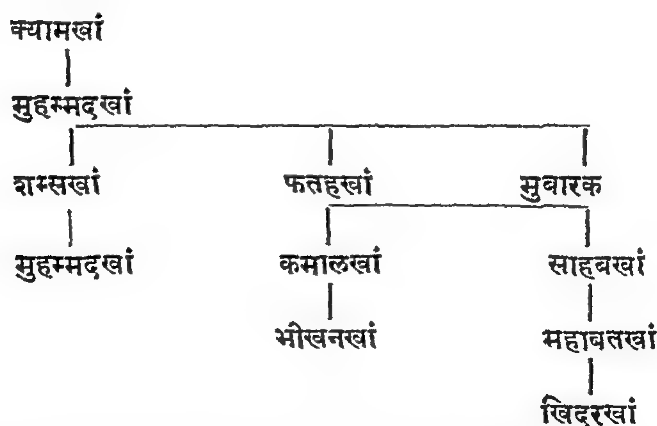
यह चौहानोंकी प्रसिद्ध शाखा है। इस समय नागौरका खां मुहम्मद प्रतापी था। शायद क्यामखानी उसकी तरफसे लडे हो।

पृष्ठ ४५, पद्याङ्क ५३६. मुहब्बत साराखानी.....

इतिहाससे इसका कुछ पता नहीं चलता। शेरशाहके सामन्तोंमें अनेक सरवानी थे। शायद उनमेंसे किसीसे मतलब हो।

पृष्ठ ४७, पद्याङ्क ५७३. झूंझनू.. ...

झूंझनूमें क्यामखानियोंकी एक शाखा राज्य करती थी। रासामें इसका बार बार जिक्र है। उसकी वंशावली इस प्रकार है :—



पृष्ठ ४८, पद्यांक ५८१. नाहरखांसे बीकानेरके राव लूणकरणकी बेटीका विवाह......

रासाने लिखा है कि अपने जीते ही लूणकरणने अपनी बेटी नाहरखांसे विवाहनेका वचन दिया था। जो राजपूत क्यामखानियोंसे कर मांगता और शायद लेता भी था, वह उन्हें बेटी देनेका वचन दे, यह संभव प्रतीत नहीं होता।

पृष्ठ ४९, पद्यांक ५८८. नाहरखांका महल चिनवाना.... .

इसका सम्वत् १५९३ भादवा सुदी अष्टमी है। यह क्यामखानी इतिहासकी पुनः एक

निश्चित तिथि है। इसके लगभग चार साल बाद शेरशाह दिल्लीका बादशाह हुआ। रासाके अनुसार नाहरखांने उसकी अच्छी सेवा की।

पृष्ठ ५०, पद्यांक ५९० नागोरी खां और राना

रासामें राना और नागोरीखां इन दोनोंके नाम नहीं हैं। इसलिए यह घटना संदिग्ध है। इस समयके आसपास हजखाका अजमेर और नागोर दोनों पर अधिकार था, और उसे उदयपुरके महाराणा उदयसिंहसे युद्ध भी करना पड़ा था। किन्तु इस घटना का समय सन् १५५७ ई० होनेके कारण गागा और जैतसी आदि कई राना और सरदार जिनके नाम रासाने गिनाये हैं, वास्तवमें उसमें वर्तमान नहीं हो सकते। उनका देहान्त इससे पूर्व ही हो चुका था।

पृष्ठ ५४, पद्यांक ६४२ फदनखान ।

मुगल मनसबदारोंमें इनका नाम नहीं मिलता। अकबरको इसने किस सालमें बेटी दी यह भी मालूम नहीं होता। किन्तु घटना रासाकी रचनासे अधिक दूर नहीं है, अतः इसकी सत्यतामें सन्देह करनेकी आवश्यकता नहीं। अनेक सामन्तों और राजाओंको वैवाहिक सम्बन्धों द्वारा अपनी तरफ करना अकबरकी नीतिका एक अंग था।

पृष्ठ ५४, पद्यांक ६४२ रायसाल की चाही ।

यह जातिका शेखावत था। इसके दादा रायमलके यहाँ शेरशाहके पिता हसनखां सूरने कुछ दिन नौकरी की थी। रायसाल अकबरी दरबारमें जनानखाने पर तैनात था। इसकी जहाँगीरके समय दक्षिणमें मृत्यु हुई। अच्छा वीर पुरुष था। तबकाते अकबरीके अनुसार इसका मनसब २००० था। फदनखासे यह कहीं अधिक प्रभावशाली रहा होगा। इसलिये रासाका यह कथन कि फदनखांकी जमानत पर बादशाहने रायसालको नौकर रखा था, संगत प्रतीत नहीं होता।

पृष्ठ ५४, पद्यांक ६४३ नीदावत ।

ये राव बीकाके भाई बीदाके वंशज थे।

पृष्ठ ५७, पद्यांक ६७४ ताजखांका अलवरसे रेवाड़ी पर आक्रमण ।

अकबरके राज्यमें ३४वें सालमें शेखावतोंने मेवातसे रेवाड़ी तक गड़बड़ की। ३५वें सालमें अकबरने शाहजादेका उसे दबानेके लिए भेजा। सम्भव है ताजखां उस समय सेनाके साथ रहा हो।

पृष्ठ ८० पद्यांक ६६५, दयो फतिहपुर छत्रपति लिखि अपनी फुरमान ।

अग्रिम पंक्तियोंसे प्रतीत होता है कि फतहपुर कुछ समयके लिए कयामखानियोंके हाथसे जाता रहा था।

पृष्ठ ५८, पद्यांक ६८१ अलिफखांका पराद पर आक्रमण ।

शाहजादा दानियालकी अधीनतामें यह अकबरके ४२वें राज्यवर्ष अर्थात् सन् १५९२ ई० में

हुआ। राजा वसु, तिलोकचन्द आदिने अकबरकी अधीनता स्वीकार की। (देखें, अकबरनामा; तृतीय खंड, पृ. १०८१ और १११२)।

पृष्ठ ५८, पद्यांक ६८५. सलीमका राणा पर आक्रमण......।

सलीमका राणा पर यह आक्रमण सन् १५९९ ई. मे हुआ। राजा मानसिंह, शाहकुली आदि अनेक सेनापति उसके साथ गये। इस समय अलिफखांका पहली बार अकबरनामेमे वर्णन मिलता है। उसमे लिखा हैः—"जब शाहजादा सलीम राणाको दंड देने के लिए भेजा गया, तब अपनी आरामपसन्दगी, मद्यप्रियता और बुरी संगतीके कारण कई दिन तक अजमेरमे ठहर कर वह उदयपुरकी ओर चला। राणाने दूसरी तरफसे निकल कर मालपुरा तथा अन्य उपजाऊ इलाकोको लूट लिया। इस पर शाहजादेने माधोसिंहको सेनाके साथ उधर भेजा। राणा पहाडोमे लौट गया और लौटते हुए उसने रातके समय शाही फौज पर हमला किया। राजकुली, लालबेग, मुबारिकबेग और आलिफखां टिके रहे, जिससे राणा लौट गया।" (अकबरनामेका अंग्रेजी अनुवाद, खंड ३, पृ. १११५)।

पृष्ठ ५९, पद्यांक ६९१. ऊँटालै हो समसखां, उत आयो कर साथ.. ...

डाक्टर गौरीशंकर हीराचंद ओझाने वीरविनोदके आधार पर लिखा है कि सलीमने मेवाडमे प्रवेश कर मांडल, मोही, मदारिया, कोसीथल, बागोर, ऊँटाला आदि स्थानोंमे थाने बिठला दिये। ऊँटालेकें गढमें उसने बडे सैन्यके साथ क्यामखानी शम्सखांको नियत किया।

ऊँटालेका युद्ध मेवाडके इतिहासमे विशेष प्रसिद्धि रखता है। चूंडावत और शक्तावत दोनों ही हरावलमें रहना चाहते थे। राणा अमरसिंहने आज्ञा दी कि हरावल उसीकी रहेगी जो दुर्गमें प्रवेश पहले करेगा। शक्तावत बल्लूने किस प्रकार अपने शरीरको भालोंसे छिदवा कर हाथियों द्वारा दरवाजा तुड़वाया और चूंडावत किस प्रकार सीढ़ियों द्वारा किले पर चढे यह पठनीय कथा है। जैतसिंह चूंडावत घायल हो कर नीचे गिर पडा। गिरते ही उसने अपने साथियोको आज्ञा दी कि वे उसका सिर काट कर किलेमे फेंक दें। इस प्रकार चूंडावत ही सर्व प्रथम किलेमे पहुंच पाये, और हरावल उन्हींकी रही।

राजप्रशस्ति महाकाव्यमे लिखा है कि—दिल्लीपतिका भृत्यवर क्यामखां इस युद्धमे मारा गया। क्यामखांसे आपाततः क्यामखानी शम्सका अर्थ लिया जा सकता है। किन्तु शम्सखां युद्धमे मारा नहीं गया। संभवतः काव्यका क्यामखां शुजातखांका पोता क्यामखां हो, जिसे तरबियतखांकी उपाधि मिली थी, और जो अकबरके राज्यके पांचवे वर्षमे अलवरका फौजदार बनाया गया।

पृष्ठ ५९, पद्यांक ६९६. राइ मनोहर......

राय मनोहर लूणकरण शेखावतका पुत्र था। अकबरके समय मेवाड, गुजरात आदिके युद्धोमें इसने अच्छी ख्याति प्राप्त की थी। जहांगीरके राज्यके दूसरे वर्षमें, यह १५०० जात ६००

सवारका मनसबदार नियुक्त किया गया। इसके नौ वर्ष बाद दक्षिणमें उसकी मृत्यु हुई। राय मनोहर फारसीका अच्छा कवि था।

पृष्ठ ५९, पद्यांक ६९७ दलपत बीकानेरीये ।

यह राजा रायसिंहके बाद बीकानेरकी गद्दी पर बैठा। सन् १६१२ ई० में जहांगीरने उससे अप्रसन्न हो कर सूरसिंहको बीकानेरकी गद्दी दी। दलपतसिंहने हिसारके आसपास विद्रोहका झंडा खड़ा किया।

पृष्ठ ५९, पद्यांक ६९८ ज्यावदी ।

सभवत जहांगीरके मनसबदार जियाउद्दीन काजवानीसे मतलब है। जहांगीरने उसे एक हजारी मनसबदार बनाया और तबेलेके हिसाब किताब पर नियुक्त किया। (देखें, तुजुके जहांगीरी, अंग्रेजी अनुवाद, पृ २५)। दयालदासने अपनी ख्यातमें इसका नाम जावदीन दिया है (पृ १४४ ६)।

पृष्ठ ५९, पद्यांक ६९९ शेख कबीर ।

यह शेख सलीम चिश्तीका वंशज था। इसकी दूसरी उपाधियां शुजाअतखां और रुस्तमे जमा थीं। यह मऊका रहने वाला था। जहांगीरने गद्दी पर बैठनेके समय इसे १००० का मनसबदार बनाया। बंगालमें उसने बड़ी बहादुरीसे बादशाही सेवा की। इसकी वीरताके कारण ही बादशाहने उसे रुस्तमे जमाकी उपाधि दी थी।

पृष्ठ ६१, पद्यांक ७१७ फिर पठयो पतिसाह प ।

तुजुके जहांगीरीमें दलपतको पकड़ कर भेजनेका श्रेय ग्योशरक फौजदार हाशिमको दिया गया है।

पृष्ठ ६२, पद्यांक ७२० दक्षिणमें अलिफखा ।

यह वाक्यमें दक्षिण पर शाहजहांके आक्रमणके समयका वर्णन है। मलिक अम्बर (अग्रिम टिप्पण देखें) के अहमदनगर राज्यमें अत्यन्त प्रबल हो जाने पर जहांगीरने १६०८ में अब्दुर रहीम खानखानाको उसके विरुद्ध भेजा। खानखाना असफल रहा। अहमदनगरका दुर्ग भी मुगलोंके हाथसे निकल गया। नाम मात्रके लिये इससे कुछ पूर्व जहांगीर शाहजादे परवेजको दक्षिणका सिपहसालार नियुक्त कर चुका था। उसकी मददके लिये खानजहां लोदीकी अध्यक्षतामें बादशाहने एक बहुत बड़ी फौज भेजी जिसमें अलिफखां भी सम्मिलित था। सन् १६११ में यह निश्चय हुआ कि अब्दुल्ला गुजरातसे नासिक और त्र्यम्बककी तरफ बढ़े, और बरार एव खान देशसे खांजहां, मानसिंह आदि उसे सहायता प्रदान करें। किन्तु अब्दुल्लाने बिना परवाह किये एकदम हमला बोल दिया। दौलताबाद पहुँचते पहुँचते उसकी बहुत सी फौज क्षीण हो गई। बाकी फौजका बहुत सा अंश बागलाना पहुँचनेसे पूर्व नष्ट हो गया। अब्दुल्लाको हारते देख कर बाकी शाही फौजें भी पीछेकी तरफ लौट पड़ीं। रासा कारने ठीक ही लिखा है —

अब्दुल्लहके विचरते, विचर भई दल माँहि ।
आये सब रहानपुर, कहूँ रह्यो को नाँहि ॥

पृष्ठ ६२, पद्यांक ७२५. अंबर आयौ साजि दल, गनती आवै नाँहि......।

अंबरका अर्थ यहां मलिक अंबर है । ऐसे राजनीतिज्ञ दक्षिणने कम ही उत्पन्न किये हैं । शासन-प्रबन्ध एवं सैन्य-संचालन इन दोनोंमे यह निपुण था । खानखाना, खाने जहां आदिको परास्त करना इसी वीर हब्सीका कार्य था । अहमदनगरके राजाकी इसने अच्छी सेवा की । सन् १६२६ में इसकी मृत्यु हुई । इसके विस्तृत वर्णनके लिये जहांगीरका कोई इतिहास देखे ।

पृष्ठ ६२, पद्यांक ७३३. अब्दुल्लह......।

अब्दुल्ला जहाँगीरका प्रसिद्ध सेनापति था । मेवाडमें इसने अनेक विजय प्राप्त की । इससे प्रसन्न हो कर जहाँगीरने इसे फिरोज जंगकी उपाधि दी । मेवाडसे यह गुजरात भेजा गया ।

पृष्ठ ६४, पद्यांक ७६०. सगरपै......।

सगर महाराणा अमरसिह प्रथमका चाचा था । शाहजादे परवेजको मेवाड़ पर भेजते समय बादशाह जहांगीरने इसे मेवाडके राणाकी उपाधि दी और मुगलो द्वारा अधिकृत मेवाडका अधिकांश प्रदेश इसे दे दिया । मेवाडसे संधि होने पर जहाँगीरने इससे राणाकी उपाधि ले कर रावतकी उपाधि दी । सन् १६१७ ई० मे इसका देहान्त हुआ ।

पृष्ठ ६५, पद्यांक ७६९. खुसरो वीतर वीतखां......।

पद्यांक ८०० के टिप्पणका अन्तिम भाग देखें । यह इसका सामान्य उदाहरण है कि जहाँगीर-के राज्यमे दिल्लीके निकट भी गडबड थी ।

पृष्ठ ६७, पद्यांक ७९८. राजा विक्रमजीतकै..... ।

यह राजकुमार खुर्रमका अत्यन्त विश्वासपात्र था । सन् १६१८ मे जहाँगीरकी आज्ञासे सोरठके जामको इसने दिल्लीके अधीन किया । सन् १६१९ में शाहजादे शाहजहांकी तरफसे यह कांगडे पर भेजा गया । इसीके साथ अलिफखां भी रहा होगा । दक्षिणमे अम्बरके विरुद्ध शाहजहाँकी सफलताका पर्याप्त श्रेय विक्रमजीतको है । शाहजहाँके विद्रोही होने पर विक्रमजीतने आगरेको लूटा दिल्लीके निकट विलोचपुर नामके स्थान पर शाहजहांके पक्षमे शाही सेनाके विरुद्ध युद्ध करता हुआ यह मारा गया । इसका असली नाम सुन्दर था ।

पृष्ठ ६७, पद्यांक ८००. सूरजमल......।

यह मऊ नूरपुरके राजा वसुका पुत्र था । सन् १६१५ मे जव मुर्तजाखांने कांगडा लेनेका प्रयत्न किया तो यह भी शाही फौजदारोंमे था । शाही विफलतामे सूरजमलका षड्यन्त्र भी शायद कुछ कारण रहा हो । इसके विरुद्ध शिकायतें होने पर भी बादशाहने इसे क्षमा कर दिया । दक्षिणमे शाहजादा शाहजहाकी इसने अच्छी सेवा की । मुर्तजाकी मृत्युके बाद इसे शाही सेनाका मुख्य सेना-

पति बना कर बादशाह जहांगीरने कांगड़ेके विरुद्ध भेजा, किन्तु भाई बन्धुओंसे लड़ना इसे अभीष्ठ न था। यहाँ विद्रोह कर इसने पहाड़ी राजाओंका एक प्रबल संघ तैयार किया।

सय्यद सफी बर्हाको इसने युद्धमें हराया और शाही परगने लूटे, किन्तु विक्रमजीतके सामने इसका कुछ वश न चला। इसकी राजधानी मऊ नूरपुर पर विक्रमजीतने अधिकार कर लिया। रासासे प्रतीत होता है कि अलिफखांको इस स्थान पर विक्रमजीतने शाही सेनाके कुछ भागके साथ रखा। इसके कुछ दिन बाद सूरजमल बीमार हो कर मर गया। जहाँगीरने इसके स्थान पर उसके भाई जगतसिंहको नियुक्त किया और उसे १००० जात, ५०० सवारकी मनसबदारी दी। (कुछ विशेष वर्णनके लिये अवशिष्ट टिप्पण देखें)।

पृष्ठ ६९, पद्यांक ८१४ जहांगीर मानी नहीं, बिक्रम करी जु बात ।

इस पंक्तिसे प्रतीत होता है कि विक्रमाजीत सर्वप्रथम साम द्वारा कार्य सिद्ध करनेका प्रयत्न किया करता था।

पृष्ठ ६९ पद्यांक ८१५, टूट्यो गढ़ ।

गढ़की विजयका समय नवम्बर १६ सन् १६२० है।

पृष्ठ ७०, पद्यांक ८२७ ठटा ।

यह भी पहाड़ी दुर्ग है। सिन्धका ठटा नहीं।

पृष्ठ ७१, पद्यांक ८४४ सरदारखां ।

सरदारखां पचास वर्षका हो कर ११ मुहरम सन् १०३५, तदनुसार सं० १६८२ आश्विन सुदी १३-१४ को दस्तोंकी बीमारीसे मर गया। बादशाहने यह सुन कर पंजाबके पहाड़ोंकी फौज दारी अलिफखांको दी जो उसके मददगारों में से था। (जहांगीरनामा)

पृष्ठ ७२, पद्यांक ८४४

पहाड़ी नेताओंके स्थानादिके लिये इस पुस्तकके परिशिष्ट रूपमें प्रकाशित अलिफखांकी पैड़ी देखें।

पृष्ठ ७३, पद्यांक ८६५ नगरोटै डेरे कीये जगतै दल बल साज ।

जगतसिंह राना बसुका दूसरा पुत्र था। (पद्य ८०० वाला ऊपर का टिप्पण देखो) जब शाहजहाने विद्रोह किया तो उसका कृपापात्र होनेके कारण जगतसिंहने पहाड़ोंमें पहुँच कर उपद्रव किया। (ग्लैडविन, जहांगीर, पृष्ठ १४३)।

पृष्ठ ७४, पद्यांक ८७७ सादकखां पैठान हो, चीठी दइ पठाय ।

सादिकखां पंजाबका सूबेदार बनाया जा कर जगतसिंहके विरुद्ध भेजा गया। इस कार्यमें उसे विशेष सफलता न मिली। जहाँगीरकी मृत्युके बाद आसफखाने इसे शाहजहांकी तरफ कर

लिया। (तुजुके जहांगीरी अंग्रेजी, अनुवाद, खंड २, पृ. २५९; इकबाल नामा, पृष्ठ २०२)।

पृष्ठ ८०, पद्यांक ९३३. अलिफखांका मृत्यु सम्वत्......।

सं० १६८३ जहांगीरके राज्यका अंतिम वर्ष था। अलिफखांकी पैंडीके अनुसार इसका जन्म संवत् १६२१ था। इसलिये ६२ वर्षकी अवस्थामें रण-प्रांगणमें इस वीरने अपने प्राण दिये।

पृष्ठ ८२, पद्यांक ९२९. ग्रन्थका रचनाकाल......।

संवत् १६९१ रासाके मुख्यांशका रचनाकाल है। इसके बादका भाग इसकी अनुपूर्ति मात्र है।

पृष्ठ ८२, पद्यांक ९२९. कवित पुरातन मैं सुन्यौ, तिह विध कर्यो वखान......।

क्या इन शब्दोंसे यह अर्थ लिया जाय कि अलिफखांके मृत्युके कुछ ही समय बाद, किसी अन्य कविने इस विषय पर कोई कवित्त लिखा और जांनने उसे अपनी रचनाका आधार बनाया। अधिक संभव तो यह प्रतीत होता है कि केवल रासाके आदि भागके लिये कविने उसका आश्रय लिया है। अन्य बातें उसके प्रायः समसामयिक थीं।

पृष्ठ ८३, पद्यांक ९६०. अमरसिह राठौरका आगरेमे काम आना......।

मुसलमानी इतिहासकारोंने इस विषय पर जो कुछ लिखा है उसका सारांश निम्न-लिखित है –

अमरसिह दरबारसे कुछ दिनोंसे अनुपस्थित रहा था। जब वह जुलाई २६, १६४४ ई० सन्के दिन वापस आया तो मीरबख्शी सलाबतखां उसे दाराके स्थान पर बादशाहसे मिलनेके लिये ले गया। अमरसिह बांई तरफ खडा था और बादशाह शामकी नमाजके बाद कुछ हुक्म लिखा रहा था। सलाबतखां मुल्ला करामतसे कुछ बातचीत करने लगा। अमरसिहको संदेह हुआ कि सलाबतखां उसकी शिकायत कर रहा है। अचानक ही अमरसिंहका खंजर सलाबतखां पर पडा और सलाबतकी इह लीला समाप्त हो गई। खलीलुल्लाखां और अर्जुनने एक दम अमरसिह पर हमला किया, और शीघ्र ही कुछ और मनसबदार और गुर्जबदार उनसे आ मिले। अमरसिह मारा गया। अमरसिहके साथियोंने अर्जुनसे इसका बदला लेनेका प्रयत्न किया और इसी झगड़े मे मीर तुजुकखां मीरखां, मुशरिफ मुलकचंद आदि मारे गये। अन्ततः सय्यदखां जहां और रशीदखां अन्सारी आदिने अमर-सिंहके आदमियो पर आक्रमण किया और उन्हे मार डाला।

इसी घटनाका अतिरंजित रूप अनेक राजपूती ख्यातोमे मिलता है। सबसे विश्वस्त वर्णनकी दो जैन कृतियां हैं जिन्हे श्री अगरचंद नाहटाने 'भारतीय विद्या' खंड २ मे प्रकाशित किया था। इनके अनुसार वास्तविक घटनाका रूप यह था :–

बीकानेर और नागोरके बीचमें कुछ सरहदी झगडा पैदा हो गया था। इसीके बाद अमरसिह शाहजादा दाराशुकोहकी हवेलीमें बादशाहसे मिलने गया। बादशाह गुसलखानेमें था। सलाबतखांसे अमरसिंहका कुछ वाद विवाद हो गया और अमरसिह कह बैठे "अच्छा खबर

पड़ेगी।" सरहदी झगड़ेमें सलाबतखाने ताना देते हुए कहा, "क्या खबर पड़ेगी? बीकानेर की खबर पड़ी। क्या रावजी गवारी करते हो?" इतना सुनते ही अमरसिंहने कटारी चलाई। वह सलाबतखाके पेटमें घुस गई। शाहजहाने अमरसिंहको पहले तो घर जानेका हुक्म दिया, किन्तु दाराशिकोहके कहने पर मनसबदारोंसे कहा, "देखो, न जाने पाये। अमरसिंहको मार लो।" गौड़ विट्ठलदासके लड़के अर्जुनने धोखेसे वार कर अमरसिंहको गिराया और गुजर दारोंने आ कर अमरसिंहका काम तमाम किया। जब लाश बाहर भेजी गई तो गोकुलदास, मीरखा और हरनाथ भाटीने बख्शी मूलकचन्दको मार डाला। गोकुलदास और हरदास अमरसिंहके दस अन्य नौकरों सहित वहीं लड़ कर काम आये। प्रातःकाल होते ही राठौड़ बलू, राठौड़ भावसिंह, गिरधर व्यास आदिने अमरसिंहकी रानियोंका सती किया और फिर अर्जुनसे बदला लेनेका विचार किया। बादशाहने उनके विरुद्ध खानजहा सैयदको भेजा। बलू राठौड़ आदि अमरसिंहके ६४ आदमी वीरतासे लड़ते हुए काम आये।

सवत् १७०१ श्रावण शुक्ला द्वितीयकी तीन या चार घड़ी बीतने पर अमरसिंहने सलाबतखाको कत्ल किया और स्वयं मारा गया। लाशके बाहर आते ही उसी समय उनके १२ साथियोंने भी लड़कर वीर गति प्राप्त की।

बलू राठौड़का सैयद खानजहासे युद्ध श्रावण सुदी ३ के तीसरे पहर हुआ।

पृष्ठ ८७ पद्याक ९९३, ताहिरखा हैं बलखमैं साहिजादे के पास ।

शाहजादा मुरादने सन् १६४६ ई० जुलाई सातके दिन बलखमें प्रवेश किया।

पृष्ठ ८७, पद्याक ९९१ इन्दकोहकै ।

इसका असली नाम अन्दरआब है। इस स्थान पर मुगल सेनाने अस्त्राखानी नजमुहम्मदको पराहत किया।

पृष्ठ ८९ पद्याक १०१९, फिरी मुहिम बलखकी

औरंगजेबने सन् १६४७ अक्तूबर ३ के दिन बलख से प्रयाण किया।

पृष्ठ ९०, पद्याक १०१९ बहुर पठाइ फौज सब, गढ़ कधारकौ लैन ।

ईरानके बादशाह अब्बास द्वितीयने फरवरी १६४८ में मुगलोंसे कधार जीत लिया। शाहजहाने औरंगजेबको कधार जीतनेकी आज्ञा दी। शाहमीरकी लड़ाईमें, जिसका समयत रासामें वर्णन है, मुगल सेनापति रुस्तमखा विजयी हुआ। सितम्बर ३, १६४९ के दिन औरंगजेबने दुर्गका पहला घेरा उठाया।

पृष्ठ ९०, पद्याक १०२३ कधार पर दूसरा आक्रमण ।

यह सन् १६५२ में फिर औरंगजेबकी अध्यक्षतामें हुआ।

पृष्ठ ९०, पद्यांक १०२६ कधार पर तीसरा आक्रमण ।

तीसरा आक्रमण सन् १६५३ में दाराकी अध्यक्षतामें हुआ।

पृष्ठ ९०, पद्यांक १०३० अलिफखाकी मृत्यु ।

सवत् १७१० अथात् सन् १६५३ में हुई।

अवशिष्ट टिप्पण

विक्रमाजीत द्वारा कांगड़ाकी विजय—

सूरजमल पर विक्रमाजीतके आक्रमण और कांगडाकी विजयका शाहजहांके मुन्शी जलालातिवा द्वारा रचित शश फतह कांगडामें अच्छा वर्णन है। इससे पहाडी प्रान्तके भूगोल और तत्सामयिक राजनैतिक परिस्थिति पर पाठकोंको कुछ अधिक प्रकाश मिलेगा। अतः इसका सार यहां प्रस्तुत करते हैं :—

बादशाहने सूरजमलके विद्रोहके विषयमें सुनते ही उसे दबानेके लिये शाहजहांको नियुक्त किया और उसे कांगडा जीतनेकी भी आज्ञा दी। सूरजमलने पंजाबके कई परगनोंमें लूटमार मचा रखी थी। शाहजहांने विक्रमाजीतको सेनाका नायक बनाया, और बादशाह जहांगीरके १२वें वर्षके शहीरयार महीनेमें (१ शाबान. हिज्री सन १०२७) उसे गुजरातसे एक बडी फौजके साथ रवाना किया। सूरजमल यह सुनते ही पठानकोटकी तरफ भागा और मऊके दुर्गमें जा कर ठहरा। मऊ चारों तरफसे पहडों और जंगलोंमे घिरा हुआ है, देशके बहुत विशाल और मजबूत दुर्गोंमें उसकी गिनती है। राजा विक्रमाजीतने शीघ्र दुर्गको घेर लिया। सूरजमलने सामना किया, किन्तु पराजित हुआ। उसके ७०० व्यक्ति, मर्द और औरत मारे गये। स्वयं सूरजमल राजबसुके बनाये हुए नूरपुर नामके किलेमें कुछ साथियों सहित भाग गया। विक्रमाजीतने यहाँ उसका पीछा किया, और सूरजमलने चम्बांके राज्यमें घुस कर तारागढके किलेमें आश्रय लिया। चार दिनके घेरेके बाद विक्रमाजीतने यह किला भी हस्तगत किया। यहां उसकी फौजके बहुतसे आदमी मारे गये। सूरजमल फिर भागा और उसने चम्बाके राजाके यहाँ शरण ग्रहण की।

विक्रमाजीतने तारागढकी विजयके बाद हारा, पहाडी, ठठा, पकरोटा, सूर और जावालीके किले जीते। इसी बीचमे सूरजमलके भाई माधोसिंहने कुछ उपद्रव किया। विक्रमाजीतने नूरपुर और कांगडेके बीचके कोटिला दुर्गमें उसका मुकाबला किया। भयंकर रक्त-पातके बाद शाही सेना किला जीतनेमें समर्थ हुई। कुछ ही दिनोमें विक्रमाजीतने सब पहाडी प्रदेश पर अधिकार कर लिया। शत्रुके थाने उठा कर उसने शाही थाने बिठाये और शाही नौकरोंको अनेक जागीरें दीं। सूरजमलका चम्बाके राजाके दुर्गमें देहान्त हो गया। चम्बाके राजाने उसकी तमाम सम्पत्ति, जिसमें चौदह बडे हाथी और २०० अरबी और तुर्की घोड़े शामिल थे, विक्रमाजीतको सौंप कर बादशाहसे क्षमा प्राप्त की।

इसके बाद विक्रमाजीतने कांगड़े पर घेरा डाला। अन्तमे शाही सिपाहियोने एक जगह दुर्गकी दीवार तोड डाली। भयंकर लडाई हुई। शाही तोपखानेने शत्रुको भून डाला। शत्रु भाग निकले। राजा विक्रमाजीतने कांगडेमे घुसकर विश्वस्त अफसरोको नियुक्त किया और जिन शूरोंने इस युद्धमें वीरता दिखाई थी उनके मनसब बढाये। इससे पूर्व कांगडे पर कोई विजय प्राप्त न कर सका था। (इलियट और डाउसन, भाग ६, पृष्ठ ५१८–५२१)।